Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 दिसम्बर 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 12, दिसम्बर 2023

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चो,

साल का आखरी महीना दिसम्बर हमें स्मरण कराता है कि वर्ष भर हमनें अपनी योजना अनुसार पूरे लगन से कार्य किया है, परंतु कुछ काम छूट गया हैं. ऐसे हमारे अधूरे संकल्पों को जल्दी से पूरा करने का हमें पून: अवसर देता है. यह महीना इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि मौसम के करवट बदलते ही ठंडी शुरू हो गई है. इस मौसम में हमें अच्छे मौसमी पौष्टिक, स्वादिष्ट फल व सब्जियां खाने को मिलती है.

आपकी अर्धवार्षिक परीक्षा शुरू होने वाली है, इस महीने को हम परीक्षा का मौसम भी कह सकते हैं. खेल कूद के साथ समय निकाल कर आप पूरे मन से अपनी परीक्षा की तैयारी में लग जावें. कक्षा की गतिविधि में जो कुछ छूट गया हो तो अपने शिक्षकों से अवश्य मार्गदर्शन लेकर समझे व अच्छे से अपनी परीक्षा दे.

शीतकालीन अवकाश का उपयोग आप कुछ नया हुनर सीखने के लिए जरूर करें. आप जो भी हुनर सीखते हैं वह भविष्य में आपके लिए संचित रहती है.

और हाँ ! एक बात जो भूल रही थी- किलोल के साथ अपना प्यार बनाये रखें, किलोल पढ़ना व अपनी रचना भेजना न भूलें. आपकी रचनाओं का हमें बेसब्री से इंतिजार रहता है.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

गिरगिट 8

बचपन 9

डरपोकहा बिलवा 10

पंचतंत्र की कहानी 11

मखाना 13

कमी है 14

दीपावली 15

अधूरी कहानी पूरी करो 16

किसान और दो घड़ों की कहानी 16

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 17

श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार द्वारा भेजी गई कहानी 17

आयुषी साक्षी साहू धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी 18

श्रीमती शीला गुरु गोस्वामी, रायपुर द्वारा भेजी गई कहानी 18

कुमारी संगीता, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, विकासखण्ड-पथरिया, जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 19

आस्था तंबोली कक्षा चौथी केवी जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 20

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 21

माँ-पापा का कहना मानो 21

गाँव का मेला 22

छत्तीसगढ़ महतारी 24

चित्र देख कर कहानी लिखो 26

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 26

चिड़ियाघर की सैर 26

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 27

श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा द्वारा भेजी गई कहानी 28

चिड़ियाघर की सैर 28

प्रशांत पात्रे, कक्षा 5वीं, शा. प्रा. शा. शीतलकुण्डा, संकुल -बाँकी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 29

चिड़ियाघर 29

कुमारी किर्ती निषाद, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय, पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, विकासखण्ड-पथरिया,जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 29
कहानी चिड़ियाघर की 29
आयुषी साक्षी साहू धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी 30
चिड़ियाघर 30
अनन्या तंबोली कक्षा आठवीं केवी जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 30
चिड़ियाघर 30
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 31
सोनू तै स्कूल आना जल्दी 32
पॉलीथीन! गुडबाई 35
छत्तीसगढ़ 37
संतुष्टि 39
छत्तीसगढ़ चालीसा 41
बाल गीत 44
जीने की कला 45
दिवाली की सफाई और शापिंग 46
तू कोशिश करके तो देख 48
बाल पहेलियाँ 50
अंतरिक्ष की उड़ान 52
सब ठीक हो जाएगा 55
आओ सब मिलकर करें रक्तदान 57
तू बढ़ता चल 59
देश करवट बदल रहा है 61
'दिखावा' तेजी से फैलता एक सामाजिक रोग 63
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती 65
तू कोशिश तो कर 67
रानी मधुमक्खी की सूझबुझ 69
अम्मा अब तो सर्दी आई 71
तोरे अगोरा हे लछमी दाई 72
चलो पावन दीप जलाएँ 74
दुल्हन चाची 76

जनऊला 77
नानी 79
आओ,हम सब वोट करें 80
आ गयी, फिर दिवाली 81
रंगत खोते हमारे सामाजिक त्यौहार 82
इंतजार 85
चूजे की चींचीं 86
देखव हमर बेटी मन कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे 87
मैं फुलवारी हूँ 89
देवारी के सरप्राइज 90
मेरा दर्द 93
दिवाली आई 95
देवारी तिहार 96
चल ओ संगवारी 97
तातापानी मेला 98
बेंदरा 99
चंदा मामा 100
FLN 101
अंगना मां शिक्षा 102
रोजगार 103
जीवन 104
तू देश हित वोट कर 106
चलव रे संगी चलव रे बाबू वोट डाले बर जाबो 108
प्रेम की माला 110
चिड़िया रानी 112
धुनिया और उसकी चिंता 113
आओ दीवाली मनाएं 115
परीक्षा 117
आपका बचपन 119
हर जन्म शिक्षिका बनना चाहती हूँ 120
शीत ऋतु 122

जगमग दीप जलें 123
मेरी माटी मेरा देश 125
शेर की सत्ता का अंत 126
परमवीर विक्रम बत्रा 128
कर्म से मिटेगा भाग्य का लेख 129
शिक्षा 131
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए 132
दुखो का आना उसकी इनायत है 134
मोर 136
मेरा परिवार 137
मैं नारी हूं 138
जनउला 140
दीपावली 142
अनमोल उपहार 144
नन्हें मुन्हें बच्चे 146
माँ 147
बचपन के मजा 148
दीपों का पर्व दिवाली 150
मित्रता 152
शत प्रतिशत मतदान हो - उल्लाला छंद 154
आगे देवारी तिहार 156
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है 158
दीपों का त्यौहार : दीपावली 160
बाल दिवस 161
भाई दूज पर्व की कविता 163
दिवाली का त्यौहार 164
दीपों का पर्व 165
मेरा छोटा सा परिवार 166
मेरा बगीचा 167
चलो मतदान करें 168
दीपावली क्यों मनाते हैं? 169

दीपावली 170
दीवाली मनायेंगे 171
ईमानदारी का फल 172
मतदान 174
बाल-दिवस 175
दान 179
बाल दिवस आया 180
जब दीप जले आना 181
भाई दूज : भाई-बहन का स्नेह 182
बहाने 183
बचपन की किताब 184
दिवाली 185
जिद्दी बच्चे 186
हमर पाठशाला 187
आशा का दीप 189
सुनहरे दिन 191
दीपावली मुबारक 193
दीवाली आई 195
बडे हो गए 196

गिरगिट

रचनाकार- गीता द्विवेदी, बलरामपुर

लाल हरा पीला गिरगिट,
है बहुत शर्मीला गिरगिट.

लम्बी पूँछ हिलाता सिर,
रंग बदलने में माहिर.

शाख धरा पर बलखाते,
घूमे आँखें मटकाते.

सोया बन्दर जाग गया,
गिरगिट सरपट भाग गया.

*****

बचपन

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

सबको लगता, प्यारा बचपन.
माँ की आँख का, तारा बचपन.

भोला-भाला, सीधा-सादा
कोमल, निश्छल, न्यारा बचपन.

वही बनेगा सभ्य नागरिक
जो न कष्ट से हारा बचपन.

ध्यान रखें अभिवावक, शिक्षक
ढंग से जाए सँवारा बचपन.

सही मार्गदर्शन आवश्यक
फिरे न, मारा - मारा बचपन.

खेलकूद से बने स्वस्थ तन
नशे से हो बेचारा बचपन.

सीख, ज्ञान, शुभ संस्कार से
बदले जीवन - धारा बचपन.

*****

डरपोकहा बिलवा

रचनाकार- गीता द्विवेदी, बलरामपुर

इते ले झाँकेल फेर उते ले झाँकथे ,
देख दाई बिलवा छान्हीं ले झाँकथे.

म्याऊँ- म्याऊँ कहि के मोला खिझाथे,
मैं खाथों दूध - भात ओहर ललचाथे.

गली में कुकुरमन खुबेंच भोंकथें
बोली ला सुइन के गजबे डराथे.

तनीकुन ओकरो आगु दूध मढ़ा दे,
मुसवा नइ पाए होही तभे मंडराथे.

*****

पंचतंत्र की कहानी

लालची मिठाई वाला

दिनपुर गांव में सोहन नाम का हलवाई रहता था. वह खूब बढ़िया और स्वादिष्ट मिठाइयां बनाने के लिए जाना जाता था. इसी वजह से उसकी दुकान पूरे गांव में मशहूर थी. पूरा गांव उसी की दुकान से मिठाई खरीदता था. वह और उसकी पत्नी मिलकर शुद्ध देसी घी में मिठाई बनाते थे. इससे मिठाइयां काफी अच्छी और स्वादिष्ट बनती थीं. हर रोज शाम होते-होते उसकी सारी मिठाइयां बिक जाती थीं और वह अच्छा मुनाफा भी कमा लेता था.

मिठाइयों से जैसे ही आमदनी बढ़ने लगी, सोहन के मन में और पैसा कमाने का लालच आने लग गया. अपने इसी लालच के चलते उसे एक तरकीब सूझी. वह शहर गया और वहां से एक दो चुम्बक के टुकड़े ले कर आ गया. उस टुकड़े को उसने अपने तराजू के नीचे लगा दिया.

इसके बाद एक नया ग्राहक आया, जिसने सोहन के पास से एक किलो जलेबी खरीदी. इस बार तराजू में चुम्बक लगाने की वजह से सोहन को अधिक मुनाफा हुआ. उसने अपनी इस तरकीब के बारे में अपनी पत्नी को भी बताया, लेकिन उसकी पत्नी को सोहन की यह चालाकी अच्छी नहीं लगी. उसने सोहन को समझाया कि उसे अपने ग्राहकों के साथ इस तरह की धोखेबाजी नहीं करनी चाहिए, लेकिन सोहन ने अपनी पत्नी की बात बिल्कुल भी नहीं सुनी.

वो हर रोज तराजू के नीचे चुंबक लगाकर अपने ग्राहकों को धोखा देने लगा. इससे उसका मुनाफा बढ़कर कई गुना अधिक हो गया. इससे सोहन को काफी खुशी हुई.

एक दिन सोहन की दुकान पर रवि नाम का एक नया लड़का आया. उसने सोहन से दो किलो जलेबी खरीदी. सोहन ने इसे भी चुम्बक लगे तराजू से तोलकर जलेबी दे दी.

रवि ने जैसे ही जलेबी उठाई, उसे लगा कि जलेबी का वजन दो किलो से कम है. उसने अपना शक दूर करने के लिए सोहन से दोबारा से जलेबी को तोलने के लिए कहा.

रवि की बात सुनकर सोहन चिढ़ गया. उसने कहा, 'मेरे पास इतना फालतू समय नहीं है कि मैं बार-बार तुम्हारी जलेबी ही तोलता रहूं.' इतना कहकर उसने रवि को वहां से जाने के लिए कह दिया.

सोहन मिठाई वाले की बात सुनने के बाद रवि जलेबी लेकर वहां से चला गया. वह एक दूसरी दुकान पर गया और वहां बैठे मिठाई वाले से अपनी जलेबी तोलने के लिए कहा. जब दूसरे दुकानदार ने जलेबी तोली, तो जलेबी सिर्फ डेढ़ किलो ही निकली. अब उसका शक यकीन में बदल गया था. उसे पता चल गया कि सोहन मिठाई वाले के तराजू में कुछ गड़बड़ है.

अब उसने तराजू की गड़बड़ को सबके सामने लाने के लिए खुद एक तराजू खरीद लिया और उसे ले जाकर सोहन मिठाई वाले के दुकान के पास ही रख दिया.

फिर रवि अपने सभी गांव के लोगों को वहां पर इकट्ठा करने में लग गया. जैसे ही लोगों की थोड़ी भीड़ बढ़ने लगी, तो उसने गांव के लोगों को कहा कि आज मैं आप सभी लोगों को एक जादू दिखाऊंगा. यह जादू देखने के लिए बस आप लोगों को सोहन मिठाई वाले से खरीदा गया सामान एक बार इस तराजू में तोलना होगा. तब आप लोग देखेंगे कि कैसे सोहन मिठाई वाले के तराजू में तोली गई मिठाइयां इस दूसरे तराजू में अपने आप ही कम हो जाती हैं.

कुछ देर बाद एक-दो लोग मिठाई लेकर रवि के पास पहुंचे, तो उसने ऐसा करके भी दिखाया. इसके बाद सोहन के दुकान से जिसने भी मिठाई खरीदी थी, सभी ने रवि के तराजू में तोलकर देखा, तो सबकी मिठाइयां 250 ग्राम से लेकर आधा किलो तक कम निकली. यह सब देखकर लोगों को काफी हैरानी हुई.

अपनी दुकान के पास ही यह सब होता देख सोहन मिठाई वाला रवि से झगड़ा करने लगा. उसने लोगों को बताया कि रवि यह सब नाटक कर रहा है. अपनी बात को सही साबित करने के लिए रवि सीधे सोहन मिठाई वाले का तराजू लेकर आया और तराजू में लगा चुम्बक निकालकर सबको दिखाने लगा.

यह देखकर गांव वालों को बहुत गुस्सा आया. सबने मिलकर उस लालची मिठाई वाले को खूब मारा. अब उस लालची मिठाई वाले को अपने लालच और उसके कारण की गई गलत हरकतों पर पछतावा हो रहा था. उसने अपने गांव के सभी लोगों से माफी मांगी और वादा भी किया कि भविष्य में वे ऐसी कोई भी जालसाजी नहीं करेगा.

सोहन की इस धोखेबाजी से पूरा गांव नाराज था, इसलिए लोगों ने उसकी दुकान में जाना काफी कम कर दिया. इधर, सोहन के पास पछताने के अलावा कुछ और नहीं बचा, क्योंकि वो पूरे गांव वालों का भरोसा खो चुका था.

कहानी से सीख – कभी भी लालच नहीं करना चाहिए. हमेशा ईमानदारी के साथ अपना काम करने से ही इंसान का नाम होता है. लालच के चलते भले ही कुछ समय के लिए अच्छा फायदा हो, लेकिन इससे इज्जत और आत्मसम्मान दोनों कम हो जाते हैं.

*****

मखाना

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

अति पौष्टिक आहार मखाना.
प्रातः घी में भून के खाना.

सेवन पूर्ण फलाहारी है
व्रत - उपवास में स्वास्थ्य बनाना.

पानी में तैरता है पौधा
कमल नहीं है, सच पहिचाना.

थोड़ी तौल में, मिले बहुत-सा
ज्यों सस्ते में मिले खजाना.

व्यंजन बन जाते रस वाले
खीर बने, तो मुझे चखाना.

चाय साथ नमकीन रूप में
स्वाद कुरकुरा भूल न जाना.

*****

कमी है

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

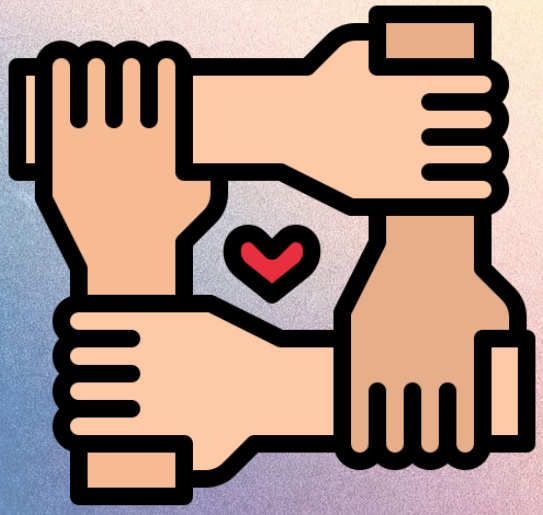

इन्सान भरपूर्ण है यहाँ.
इन्सानियत की कमी है.
रिश्तेदार बहुत है.
पर निभाने का समय नही है.

बंगला तो बना लिया.
पर शांती की कमी है.
पैसे है, की पूरी दुनिया धूम ले.
पर सही स्वास्थ ही नही है.

छप्पन-भोग है रखा सामने.
पर ग्रहण करने की भूख नही है.
कोमल-गद्दी है सोने के लिए,
पर आँखो मे निंद ही नही है.

*****

दीपावली

रचनाकार- Aabha Chndra, Class -7th, School - Sages Tarbahar, Bilaspur

दीपावली भारत का एक प्रमुख त्यौहार है. यह त्यौहार हर साल अक्टूबर या नवंबर के महीने में मनाया जाता है. इस त्यौहार के आने से पहले लोग अपने घरों और दुकानों की सफाई करते हैं. यह त्यौहार पांच दिनों का होता है धनतेरस ,नरक चतुर्दशी ,दीपावली गोवर्धन पूजा और भाई दूज . नरक चतुर्दशी को छोटी दीपावली के नाम से भी जाना जाता है. दीपावली में हम माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा करते हैं. यह त्यौहार भगवान राम की वनवास से लौटने की खुशी में मनाया जाता है. इस दिन सभी अपने परिवार और दोस्तों को मिठाई बांटते हैं और बच्चे पटाखा फोड़ते हैं. इस त्यौहार को दीपों का त्योहार कहा जाता है.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

किसान और दो घड़ों की कहानी

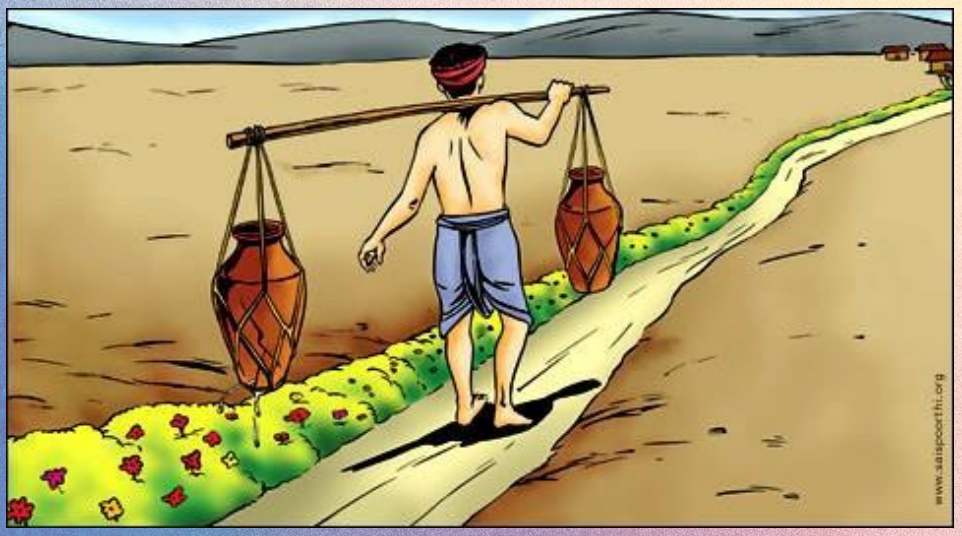

एक गाँव में एक किसान रहता था.

वह रोज सुबह-सुबह उठकर दूर झरनें से साफ पानी लेने जाया करता था.

इस काम के लिए वह अपने साथ दो बड़े घड़े ले जाया करता था. जिन्हें वह एक डण्डे में बाँधकर अपने कन्धे पर दोनों तरफ लटका कर लाया करता था.

उनमें से एक घड़ा कहीं से थोड़ा-सा फूटा था और दूसरा एकदम सही. इसी वजह से रोज़ घर पहुँचते-पहुँचते किसान के पास डेढ़ घड़ा ही पानी बच पाता था.

ऐसा होना नई बात नहीं थी इसको दो साल बीत चुके थे.

सही घड़े को इस बात का बहुत घमण्ड था, उसे लगता था कि वह पूरा का पूरा पानी घर पहुँचता है और उसके अन्दर कोई भी कमी नहीं है. वहीं दूसरी तरफ फूटा हुआ घड़ा इस बात से बहुत शर्मिंदा रहता था कि वह आधा पानी ही घर पहुँचा पाता है और किसान की मेहनत बेकार चली जाती है.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

फूटा हुआ घड़ा ये सोचकर बहुत परेशान रहने लगा कि किसान के घर आधा घड़ा पानी ही पहुँचा पाता हूँ.वह दु:खी होते हुए एक दिन उसने किसान से कहा-"मैं अपने आप पर शर्मिंदा हूँ और आपसे माफी मांगना चाहता हूँ "

किसान ने फूटे हुए घड़े से पूछा -"तुम किस बात के लिए शर्मिंदा हो ?"तब फूटे हुए घड़े ने कहा - "शायद आप जानते नहीं हो?मैं एक फूटा हुआ घड़ा हूँ.पिछले दो सालों से जितना पानी मेरे द्वारा घर में पहुँचाना चाहिए.मैं उससे आधा पानी ही पहुँचा पा रहा हूँ, यही मेरे अंदर सबसे बड़ी कमी है और मैं आपकी मेहनत को बर्बाद कर दे रहा हूँ.

किसान को घड़े की बात को सुनकर बहुत दु:ख हुआ और उसने फूटे हुए घड़े से कहा -"कोई बात नहीं है,मैं चाहता हूँ की तुम रास्ते में पड़ने वाले पेड़-पौधों एवं झाड़ियों को देखा करो."

फूटे हुए घड़े ने ऐसा ही किया.सारे रास्ते में उसने सुंदर छोटे-छोटे पौधों में फूल लगे हुए तथा हरे-भरे पेड़ एवं झाड़ियों को देखा लेकिन वह सोचने लगा कि किसान,मुझे इसे देखने के लिए क्यों कहा समझ में नहीं आया.

उसके उदासीपन को देखकर,किसान ने फूटे हुए घड़े से कहा-"शायद तुमने ध्यान नहीं दिया है.रास्ते मे सुंदर छोटे-छोटे पौधों,हरे-भरे पेड़ एवं झाड़ियां सभी तुम्हारी तरफ ही थे.अच्छे वाले घड़े की तरफ एक भी पेड़-पौधे एवं झाड़ियाँ नहीं था क्योंकि मैं तुम्हारे अंदर की कमी को पहले से ही जानता था.इसलिए मैंने उसका लाभ उठाया और मैंने तुम्हारे तरफ के रास्ते मे फूल एवं पेड़ के बीजों को बो दिया था.फूटे होने के कारण तुम रोज थोड़ा-थोड़ा पानी देकर उनको सींचते रहते थे.जिसके फलस्वरूप रास्ता,फूलों से सुगंधित एवं हरे-भरे पत्तियों की शीतल हवा से राहगीर आनंदित होते हैं.अगर तुम फूटे ना होते तो क्या ऐसा संभव हो पाता ? किसान की बातों को सुनकर फूटा घड़ा खुश हुआ.सही घड़े को पूरा का पूरा पानी घर पहुँचाने का एवं उसके अंदर कोई भी कमी नहीं होने का घमंड था वह दूर हुआ.

बच्चों हम सभी लोगों के अंदर एक ना एक कमी जरूर होती है, लेकिन यही कमियाँ हमें अनोखा बनाती हैं.उस किसान की तरह हमें भी जो जैसा है,उसे वैसा ही स्वीकार करना चाहिए.केवल किसी की अच्छाई की तरफ नहीं देखना चाहिए और जब आप ऐसा करेंगे तो फूटा हुआ घड़ा भी एक अच्छे घड़े से कीमती घड़ा बन जाएगा.

श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार द्वारा भेजी गई कहानी

एक दिन सुबह की बात है जब किसान झरने की ओर जाने के लिए निकला तो रास्ते में सही घड़े ने घमंड से फूटे घड़े को कहा-- क्यों भाई तुम्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं आती की किसान कितनी मेहनत से पानी लाता है ,और तुम्हारे कारण वह केवल आधे घड़ी पानी को ही पाता है. तुम फूटे हुए हो तुम्हारा तो कोई मोल नहीं है. तुम किसान की मेहनत को बर्बाद कर रहे हो. मुझे देखो मुझे एक भी बूंद पानी बर्बाद नहीं होता है.

फूटा घड़ा, सही घड़े की बात सुनकर रोने और सुबकने लगा .उसने निराशा से कहा-- मैं क्या करूं भाई .....तुम बात तो बिल्कुल सही कर रहे हो ! मेरी कमी के कारण किसान की मेहनत व्यर्थ हो रही है. सही घड़ा गर्व से मुस्कुराने लगा . वह अपने सही होने पर घमंड करने लगा.

लेकिन किसान चुपचाप दोनों घड़ो की बात सुन रहा था. उसने फूट घड़े से कहा-- फूटे घड़े चुप हो जाओ! और मेरी बात ध्यान से सुनो इस रास्ते में खिले फूलों को देखो ? दोनों घड़ो ने रास्ते की ओर ध्यान से देखा और बोले इसके एक तरफ तो बहुत सुंदर फूल खिले हैं ,जबकि दूसरा तरफ बिल्कुल खाली है. किसान ने कहा-- यह सब तुम्हारे मेहनत का नतीजा है जो तुम्हारा थोड़ा-थोड़ा पानी गिरता था.मैंने वही बीज छिड़क दिए थे.जो अब फूलों के सुंदर पौधे बन गए हैं. दूसरी तरफ कुछ भी नहीं हुआ.

यह सब तुम्हारी छोटी सी कमी के कारण हुआ क्योंकि तुम्हारा पानी इधर गिरते जाता था तुम्हारी कमी के कारण यह वीरान जगह में कितने फूल खिल गए देखो.

मुझे तुम पर बहुत गर्व है किसान की बात सुनकर सही घड़े की आंखों में शर्म से नीची हो गई.

किसान ने सही खड़े को कहा हमेशा दूसरों की कमी को ना देखो. कभी उन कमियों से होने वाले फायदे को भी देखो. सबका अपना-अपना हुनर होता है.

यह सब सुनकर फूटा हुआ घड़ा बहुत ही खुश हो गया.

तो दोस्तों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपने शारीरिक कमजोरीयों के बावजूद हमे अपना काम पूरी ईमानदारी से करना चाहिए.

आयुषी साक्षी साहू धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक दिन फूटा घड़ा सोचा कि मेरे से पानी का रिसाव अत्यधिक होता है. किसान से कह कर मुझे फेंकने बोल देता हूं. वह किसान आश्चर्यचकित होकर कहता है कि तुम अपने आप को फूटा घड़ा क्यों कहते हो?तब घड़े ने कहा-मैं फूटा हुआ हूं , तो तुम मुझ पर पानी क्यों भरते हो और अपनी मेहनत को क्यों खराब करते हो. मेरी मानो तो तुम मुझे फेंक दो, तब किसान उससे कहता है, नहीं घड़ा तुम उदास मत हो क्योंकि जब मैं पानी लेकर रास्ते से गुजरता हूं तो तुम्हारे रिसाव होने से जो पानी जमीन पर गिरता है उससे सूखे पेड़ पौधों को पानी मिल जाता है तुम तो महान हो.

सीख -- हमें अपनी कमियों पर निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि हर किसी में कोई न कोई अद्वितीय गुण जरूर होता हैं.

श्रीमती शीला गुरु गोस्वामी, रायपुर द्वारा भेजी गई कहानी

दिन बीतते गए. जो मटका साबूतथा, उसका घमंड दिन दूनी न रात चौगुन बढ़ते ही जा रहा था और वैसे ही उस टूटे हुए मटके की जो महत्वाकांक्षा या जो उसका स्वाभिमान था ,नीचे गिरते जा रहा था. एक दिन की बात है तालाब से घर तक का रास्ता मिट्टी का था कच्चा रास्ता था. तालाब में विसर्जित करने ले जाते समय गेंदे के फूलों के कुछ टुकड़े किनारे पर बिखर गए थे.जब मटके का पानी रिसने लगा

तो उन् बीजों पर वह पढ़ने लगा.यह क्रम लगातार चल रहा था.धीरे से उन बीजों में अंकुरण हुआ.फिर वह छोटे-छोटे पौधे के रूप में बढ़ने लगे. कुछ दिनों बाद गेंदे का सुंदर सा पौधा तैयार होने लगा. उसके बाद उन पौधों में फूल भी लगने लगे. पहले कलियां निकली, उसके बाद पीले पीले सुंदर फूल उसमे खिलने लगे. तालाब से घर तक का रास्ता फुल की क्यारी जैसा बन गया और बूंद बूंद पानी उसमें पढ़ने लगता और जितना पानी चाहिए था ,उतना पानी पौधों को मिलने लगता.जो भी उसे रास्ते को देखता, वो बड़ा प्रसन्न हो जाता और किसान को बोलते की तुमने बहुत अच्छा काम किया है. गांव से तालाब तक का रास्ता कितनी सुंदर फूलों से भर गया है. प्रकृति कितनी सुंदर लगती है किसान मुस्कुरा देता और बड़े प्यार से टूटे हुए घड़े को हाथ से छूता. धीरे-धीरे यह सारी बातें सुनते सुनते घडे को अच्छा लगने लगा उसे लगा कि टूटा होना भी उसका सौभाग्य बन गया.हमें इस चीज पर ध्यान नहीं देना चाहिए कि हममे क्या कमी है हम अपनी कमी से भी कुछ बढ़ी हुई चीज प्राप्त कर सकते हैं.दूसरों को भी हम खुशी दे सकते हैं और यह सोचकर वह मुस्कुराने लगा उधर जो घड़ा साबूतथा वह रोज-रोज सुन सुन के सुन सुन के उसका पूरा दिमाग खोलने लगता है उसको क्रोध आता है उसको लगता है मैं साबूत. हूं पूरा-पूरा पानी घर में दे रहा हूं फिर भी लोग मेरे से ज्यादा इस टूटे घडे की तारीफ करते हैं.एक दिन भरा हुआ घड़ा कुछ इतना ज्यादा तिल मिलाया कि वह तिलमिला कर कंधे से गिर गया और गिरकर वह चूर-चूर हो गया. जो टूटा हुआ घड़ा था, उसको बहुत दुख हुआ क्योंकि वह उसका साथीं था. लेकिन किस ने कहा जो ज्यादा भर जाता है चाहे घमंड से हो या अभिमान से हो वह गिरकर चूर हो जाता है इससे अच्छा तो मेरा यह टूटा हुआ घड़ा था जिसने गांव के रास्तों को चमन बना दिया बच्चों इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि हमें किसी भी व्यक्ति की या अपनी कमी को नजर अंदाज करना चाहिए क्योंकि क्या पता हमारी कमी से कुछ खुशी के फूल ही खील जाए.

कुमारी संगीता, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, विकासखण्ड-पथरिया, जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

सही घड़े की बात को सुनकर फूटा हुआ घड़ा बहुत परेशान होने लगा.वह दु:खी होते हुए एक दिन उसने किसान से कहा-"मैं अपने आप पर बहुत शर्मिंदा हूँ और आपसे माफी मांगता हूँ."

किसान ने फूटे हुए घड़े से पूछा - तुम किस बात के लिए शर्मिंदा हो ?तब फूटे हुए घड़े ने कहा -"मैं एक फूटा हुआ घड़ा हूँ.पिछले दो सालों से जितना पानी मेरे द्वारा घर में पहुँचाना चाहिए.मैं उससे आधा पानी ही पहुँचा पा रहा हूँ, यही मेरे अंदर सबसे बड़ी कमी हैऔर मैं आपकी मेहनत को बर्बाद कर दे रहा हूँ." तब किसान ने कहा-तुम्हें दुःख होने की जरूरत नहीं है.कभी-कभी जो काम भरा हुआ घड़ा नहीं कर सकता,वह काम फूटा घड़ा कर सकता है.इस कारण अपना कार्य करते रहो, दूसरे की बात पर ध्यान मत दो.

कुछ क्षण पश्चात किसान झरने से पानी लेने के लिए गया.घड़ों में पानी भरकर वापस आ रहा था.तभी उसे थकान लगा और वह पेड़ की छाया में दोनों घड़ों को रखकर आराम करने लगा.थोड़ी देर पश्चात घर जाने के लिए उठा तो देखता है कि चूहा सामने में आकर खड़ा हो गया और किसान को कहने लगा-किसान भाई!आपने यह क्या किया?मेरे बिल में आपके घड़े के द्वारा पूरा पानी भर दिया,जिसके कारण मुझे बाहर आना पड़ा.किसान ने चूहा से क्षमा मांगा और आगे निकल गया.

दूसरे दिन किसान ने पानी भरकर आया और चूहा की हाल-चाल जानने के लिए वहीं रुक गया.चूहा और किसान बात ही कर रहे थे तभी बिल से सांप (सर्प) को निकलते हुए दोनों ने देखा.तब चूहा ने कहा -"किसान भाई!कल ये घड़ा के द्वारा मेरे बिल पर पानी नहीं भरा होता तो,आज मुझे यह सांप काट ही देता. मुझे क्षमा करना कल मैं आपको बुरा भला सुनाया था.

तभी किसान ने फूटा घड़ा को कहा-"देखा,आपके द्वारा फूटा होते हुए भी चूहा की जान बचाई.जो सही घड़ा नहीं कर सकता,वो आपने कर दिखाई.

इस कारण कहा गया है कि सभी लोगों के अंदर एक न एक कमी जरूर होती है.लेकिन यही कमियाँ हमें दूसरों से अलग करती है.किसान की तरह हमें भी जो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना चाहिए.केवल किसी की अच्छाई की तरह नहीं देखना चाहिए और जब आप इस तरह का व्यवहार करेंगे तो टूटा हुआ घड़ा भी एक अच्छे घड़े से कीमती बन जाएगा.

आस्था तंबोली कक्षा चौथी केवी जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

जब एक दिन किसान पानी लेकर वापस घर आ रहा था.उस दिन बहुत तेज धूप थी. किसान ने कुछ खाया पिया भी नहीं था क्योंकि वह सुबह-सुबह ही पानी के लिए निकल जाता था. अचानक तेज धूप के कारण किसान को चक्कर आने लगा उसका पैर डगमगाने लगा उसके मटके भी इधर-उधर हिले डुलने लगे क्योंकि एक मटका फूटा हुआ था इसलिए उसमें पानी कम था लेकिन एक मटके में पानी पूरा भरा हुआ था जो मटका भरा था वह भारी होने के कारण किसान उसे संभाल नहीं पाया अचानक ही वह जमीन पर गिर गया और टूट गया सारा पानी जमीन में बह गया. लेकिन एक मटके में पानी कम था जिसके कारण किसान ने उस मटके को संभाल लिया और वह फूटने से बच गया. किसान उस फूटे हुए मटके को देखा तो कहने लगा पानी ज्यादा भरा हुआ होने के कारण नहीं संभाल पाया यह कहकर वह बचे हुए मटके से पानी निकाल कर पीने लगा थोड़ी देर पेड़ के नीचे आराम किया.फिर उस एक मटके को लेकर घर आया आखिर में वह मटका ही काम आया जो टपक रहा था वह मटका पहले शर्मिंदा महसूस करता था कि वह पूरा पानी नहीं पहुंचा पता है लेकिन आज किसन की मदद उसी ने की वह मटका खुश हुआ कि मैं भी कुछ कर सकता हूं . किसी प्रकार की कमी होने पर हमें अपने आप में शर्मिंदा नहीं होना चाहिए और ना ही दूसरों को देखकर उनसे अपनी तुलना करनी चाहिए क्योंकि सब का समय एक जैसे नहीं होता जो मटका पूरा भर कर पानी लाता था उसे अपने आप पर बहुत घमंड था कि वह पूरा पानी घर पहुंचता है लेकिन उसके भरे हुए पानी के कारण ही आज वह मटका किसी काम का नहीं रहा टूट गया.दूसरे को वह नीचा दिखाना चाहता था. अर्थात हमें अपने आप पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए और ना ही दूसरों को कभी नीचा दिखाना चाहिए. हम जिस स्थान पर है उसमें अपने आप को संतुष्ट रखना चाहिए और सब के साथ मिलजुल कर काम करना चाहिए. समय का कुछ कहा नहीं जा सकता किस समय क्या हो जाएगा.अब उस किसन के पास केवल एक ही मटका है जिसमें किसान अपने घर पानी लाता है.इस कहानी से शिक्षा हमें अपने आप पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए घमंड करने वालों का अंत होता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

माँ-पापा का कहना मानो

सर्दियों का मौसम था. नन्हे खरगोश के घर को चारों ओर घास-फूस लगाकर गर्म रखा जाता था.
रात होने वाली थी. नन्हे खरगोश के मम्मी-पापा ने उससे कहा, आ जाओ नन्हे, सो जाओ. रात होने वाली है और बाहर ठंड भी बहुत है.
लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही. मुझे बाहर जाकर खेलना है. नन्हे ने कहा.
बेटा, कल सुबह खेल लेना. रात में बाहर जाओगे तो बीमार हो जाओगे.
मम्मी ने उसे समझाया. मम्मी की बात मानकर नन्हे आकर लेट गया.
लेकिन उसे जरा भी नींद नहीं आ रही थी. वह थोड़ी देर लेटा. फिर मम्मी-पापा से छिपकर बाहर आ गया और जंगल में घूमने निकल पड़ा.
वह चलता जा रहा था. इस तरह कभी भी वह जंगल की ओर नहीं आया था.
लेकिन वह रास्ता ध्यान से देख रहा था. मिट्टी में उसके पाँवों के छोटे-छोटे निशान बनते जा रहे थे.
इनकी मदद से मैं घर वापिस पहुँच जाऊँगा, उसने सोचा.
वह काफी दूर आ गया था. तभी जोर से आँधी चलने लगा. वापिस जाने का रास्ता उसके पाँवों के वो निशान ही बता सकते थे.
लेकिन तेज आँधी ने इतनी धूल उड़ाई थी कि निशान मिट गए थे. वह घबराकर इधर-उधर भागने लगा. उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें ?
इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

गाँव का मेला

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

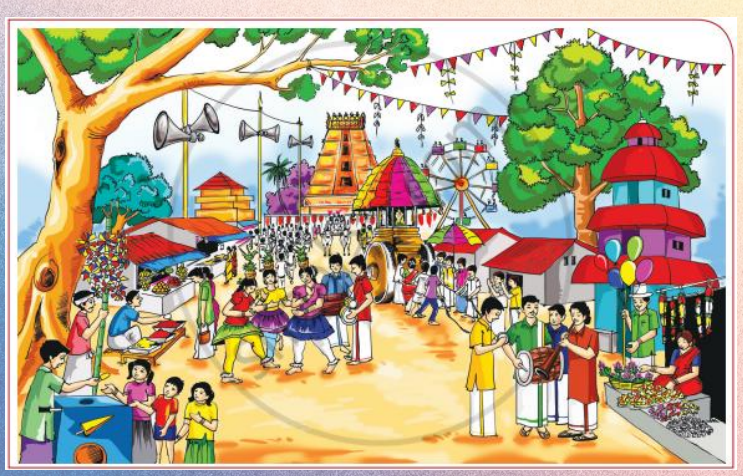

गुमसुम क्यों बैठे हो भैया,
चलो देखें गाँव का मेला.
मेला में है चरखी - झूला,
खेल- खिलौने वाला ठेला.

लगी हुई है बहुत दुकानें,
बड़ी भीड़ है रेलम- रेला.
किताब घर में बहुत किताबें,
लो खरीद, मत करो झमेला.

सस्ता- महंगा फल लेकर ही,
भेख मिटाओ, खाओ केला.
जलेबी छान रहा हलवाई,
खा मत लेना चुप्प अकेला.

गुब्बारे भी लेकर चलना,
बेच रहा है कालू चेला.
हुई शाम अब चल रे भैया,
बढ़िया लगा गाँव का मेला.

*****

धान के महिमा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", राजिम

पींयर –पींयर धनहा बाली,
बिहना पड़थे सूरज लाली.

घाम अगासा के वो सहिथे,
धान सोन कस चमकत रहिथे.

चिरई–चिरगुन गाना गाथे,
घेरी–बेरी खेत म जाथे.

पक्का–पक्का बीजा पाथे,
फोर–फोर के जम्मों खाथे.

किसम–किसम के धान ल बोथे,
अब्बड़ पैदावार ह होथे.

चारों मुड़ा सुघर ममहाथे,
देख किसनहा खुश हो जाथे.

धरती के कोरा हरियाथे,
सुख के अँचरा कस लहराथे.

*****

छत्तीसगढ़ महतारी

रचनाकार- के.पी.साहू, दुर्ग

भारत दाई के सुग्घर दुलौरिन बेटी,
धान के कटोरा,छत्तीसगढ़ महतारी.
एक नवंबर तोर जनम दिन ये,
जोहर मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

तोर कोरा मा लोहा कोयला,
अलमुनियम अऊ हीरा के भंडार.
वन संपदा के गंगा बहत हे,
तोर गाथा हे अपरम्पार.
*जोहर मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

बोरे बासी मोर अभिमान,
गोंदली चटनी सन खूब मिठाय,
जिमी कांदा के अमसुरहा सब्जी,

अंगाकर सन गजब मिठाय.
जोहर मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

भेलाई के लोहा बिकास गड़त हे,
*कोरबा के बिजली जगमग करत हे.
*ददरिया, करमा,पंथी, पड़वानी के
दुनिया भर में हमर शोर उड़त हे.
जोहर मोर छत्तीसगढ़ महतारी.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

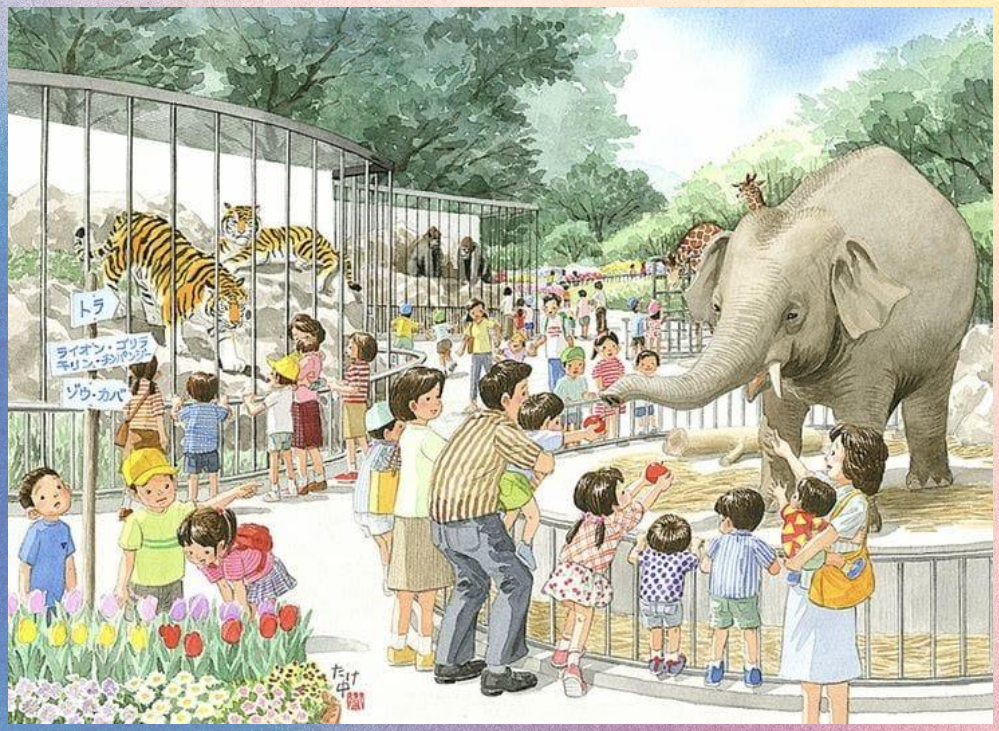

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

चिड़ियाघर की सैर

बच्चों चिड़ियाघर की सैर बहुत आनंददायक और शिक्षाप्रद होता है.हम नए-नए पशु,पक्षियों से परिचित होते है.जिससे हमें एक अलग अनुभव प्राप्त होता है.हम अपने पसंद के जानवरों के बारे में अधिक से अधिक जानने की इच्छा रखते हैं.विभिन्न प्रकार के जानवरों और पक्षियों को देखने और उनके बारे में जानने के लिए बच्चे बड़े ही उत्सुक रहते हैं.इसके लिए वो चिड़ियाघर जाने के लिए हमेशा ही तैयार रहते है.

कुछ दिन पहले हमारे विद्यालय के बच्चों को शैक्षिक भ्रमण हेतु पास के चिड़ियाघर में ले गए थे.कक्षा में शिक्षक के द्वारा सभी बच्चों को उनके बारे में अपना अनुभव लिखने को कहा,जिसमें कक्षा के सर्वश्रेष्ठ कुमारी कविता ने अपना अनुभव साझा किया वह यह है-

मेरा अनुभव-

मुझे प्रकृति से बहुत प्यार है और मुझे प्राकृतिक जगहों पर घूमना बहुत पसंद हैं.पक्षी और जानवर ही हमारी प्रकृति की सुंदरता को बढ़ाते है और मुझे ऐसा लगता है की इनके बिना प्रकृति अधूरी है.ये सभी प्रकृति की सुंदरता और लोगों की आजीविका को आपस में जोड़ते हैं.मैं पहली बार अपने शिक्षकों के

साथ चिड़ियाघर गयी थी.मै इस सैर पर जाने के लिए बहुत उत्सुक थी.मुझे याद है जब मै चिड़ियाघर गयी थी,मैंने पहली बार भालू देखी.वहाँ सारस, मोर, हाथी,तोता जैसे पशु,पक्षी थे.मैंने वहाँ एक मादा हाथी को देखी,जो अपने बच्चे को प्यार कर रही थी. बहुत बड़े पिंजरे में शेर बंद था.उसे देखकर बच्चे खुश हो रहे थे.आगे बढ़ा तो नर हाथी को बच्चे लोग चारों ओर से घेर कर खड़े हुए थे.उसके विशाल शरीर को देखकर बच्चे आनंद का अनुभव कर रहे थे.मैंने वहाँ पर उन पशु,पक्षियों की तस्वीर भी ली.मैंने पूरे चिड़िया घर में विचरण किया और वहाँ के प्रत्येक जानवरों व पक्षियों को नजदीक से देखकर उनके बारे में जानकारी प्राप्त किया.

चिड़ियाघर में पाये जाने वाले जानवर और पक्षी-

चिड़ियाघर में तरह तरह के पशु पक्षी पाए जाते है.जिनमे साइबेरियन पक्षी, ऑस्ट्रेलियन तोता, दरियाई घोडा, कठफोड़वा, बाज़, गेंडा, हाथी, पांडा, जिराफ, किंगफ़िशर, पेंगुइन, शुतुरमुर्ग जैसे पशु-पक्षी प्रमुख रूप से पाए जाते है.चिड़ियाघर में हिरण, तेंदुआ आदि जैसे दुर्लभ पशु-पक्षी भी पाए जाते है.

चिड़ियाघर सीखने एवं मनोरंजन का स्थान-

चिड़ियाघर घूमने के लिए एक बहुत ही मनोरंजक और रोचक जगह है.हम इसमें विभिन्न जानवरों को अपनी आंखों के सामने देख सकते हैं.हम शेर, भालू, गैंडा, सफेद बाघ इत्यादि जानवरों को चिड़ियाघर में देख सकते हैं जो की केवल जंगलों में ही देखे जा सकते है.हमने इन सभी जानवरों के रहने और उनके व्यवहार करने के तरीकों को बहुत ही नजदीक से देख सकते हैं और इनके बार में अधिक जानकारी इकठ्ठा कर सकते हैं.चिड़ियाघरों में हमें विभिन्न प्रकार के नए जानवरों को देखने और उनके बारे में भी पता चलता हैं.जिन्हें हमने पहले केवल किताबों या टी.वी. पर ही देखा था.चिड़ियाघर में जाने के बाद हम उनके साथ अधिक समय और उनके बारे में अधिक जानकारी इकठ्ठा करने की सोचते है.वहाँ से बहार निकलने का हमारा मन नहीं करता है.

अंत में मैं यही कहना चाहती हूँ कि हम सभी को चिड़ियाघर की सैर करनी चाहिए.चिड़ियाघर की सैर से हमें प्रकृति से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त होता है.हमें प्रकृति की सुंदरता का आभास होता है.

बच्चों जब भी अपने शिक्षकों या अपने माता-पिता के साथ चिड़ियाघर जाते हैं.वहाँ जगह-जगह पर आवश्यक निर्देश लिखे रहते हैं उसका पालन करना चाहिए और आपको कोई भी नई जानकारी प्राप्त होती है.उसे अपनी डायरी में नोट कर अपने विद्यालय में शनिवार के दिन बाल सभा कार्यक्रम में,साथियों के साथ साझा करना चाहिए. ताकि वह जानकारी सभी को प्राप्त हो सके.

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

जब बाकी चूंजों की तरह बाज का बच्चा भी बस थोड़ा सा ही उड़ पाता और पंख फड़फड़ाते हुए नीचे आ जाता तो उसे लगता था कि मैं ज्यादा ऊपर नहीं उड़ पाऊंगा. लेकिन उसने एक दिन अपने जैसे पक्षी को आसमान में उड़ते देखा तो वह अपनी मां से जाकर पूछा मां हम आसमान में क्यों नहीं उड़ पाते तब मां ने जवाब दिया.भगवान ने हर पक्षी को अलग-अलग बनाया है उन्होंने हमें थोड़ा ही उड़ने वाला पक्षी बनाया है हम जमीन पर ही रहते हैं वह मान गया और बाकी चूंजों के पास खेलने के लिए चला गया. अगले दिन जब मुर्गी अपने बच्चों के लिए दान ढूंढने गई उस वक्त वह छोटा बाज आसमान में उड़ रहे

अपने सामान पक्षी को पुनः देखने के लिए गया.जब वह गया तो इस बार आसमान से एक बाज़ नीचे जमीन पर आया उसने देखा यह बाज का बच्चा जमीन से ऊपर उड़ने की कोशिश कर रहा है लेकिन थोड़ा ही उड़ने के बाद फिर नीचे आ जा रहा है. तब उसने उस बाज के बच्चे से पूछा तुम इतनी ही ऊंचाई पर उड़कर पुनः नीचे क्यों आ जा रहे हो बाज के बच्चे ने ठीक वैसा ही जवाब दिया जैसा की मुर्गी ने बताया था की हर पक्षी अलग-अलग होते हैं और मैं इतना ही उड़ सकता हूं मैं आसमान में नहीं उड़ सकता. लेकिन तुम तो मेरी तरह ही दिखती हो तुम इतने ऊंचे आसमान में कैसे उड़ लेती हो उसने कहा.तब बाज ने जवाब दिया तुम भी ऐसा कर सकते हो चाहो तो मैं तुम्हें उड़ना सिखा दूं. बाज का बच्चा उड़ना चाहता था इसलिए वह बहुत खुश हुआ और बोला ठीक है उस दिन से बाज उसे उड़ना सिखाने लगा जैसे-जैसे वह उड़ना सीखने लगा उसके पंख फड़फड़ाने लगे और अधिक ऊंचाई तक जाने लगा वह बहुत खुश हो रहा था. एक दिन ऐसा आया जब वह ऊंचे आसमान में स्वतंत्र रूप से आसानी से उड़ रहा था.

श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा द्वारा भेजी गई कहानी

चिड़ियाघर की सैर

जिस स्थान पर अलग-अलग तरह के जीव जंतुओं को रखा जाता है उसे चिड़ियाघर कहते हैं. पिछले रविवार को मैं अपने परिवार के साथ चिड़ियाघर गई. वहाँ चारों ओर हरे भरे पेड़ पौधे, रंग-बिरंगे फूल देखे ,ऐसे लग रहा था हम किसी जंगल में आ गए हैं. सबसे पहले हमने हाथी को देखा जो बहुत बड़ा और काले रंग का था. हाथी को देखकर हमने और वहां सभी बच्चों ने फल खिलाया. उसके लंबे-लंबे सूड़ हमें बार-बार छू रहे थे ,वह हम सभी के साथ बहुत अच्छे से घुल - मिल गया था ऐसा लग रहा था जैसे कि उसने हमें पहले कभी देखा हो. हम सभी ने हाथी के साथ खूब मस्ती किया. उसके बाद हमने वहाँ पर पिंजरे में बंद दो चीते को देखा जिसमें से एक शांत बैठा हुआ था और एक हमें देखकर हमारी ओर आया और जोर से गुर्राने लगा उसकी आवाज सुनकर हम सभी कांपने लग जाए और थोड़ी देर बाद हम वहां से आगे की ओर चले गए जहां पर पिंजरे में दो चिम्पाजी बंदर थे , वह हमें देखते ही हमारी ओर लपका और हमारे हाथ में रखे हुए केले को देखकर छिन्ने लगा. हमने अपने हाथ में रखे हुए केले को उसकी ओर फेका और जीभ निकालकर उसको चिढ़ाने लग गए वह भी हमें देखकर चिढ़ाने लग गया. जैसे-जैसे हम कर रहे थे वैसे- वैसे वह हमारी नकल उतारने लग गया. इस प्रकार हमने चिंपांजी बंदर के साथ खूब मस्ती की. कुछ दूर जाने पर हमें लंबी गर्दन वाला जिराफ दिखा, जिसे देखकर ऐसे लगा मानो अपनी लंबी गर्दन से हमें गला मिलने को बुला रहा हो. चलते चलते हम बहुत दूर चले गए और थोड़ी देर विश्राम करके हम सभी ने वहाँ पर नाश्ता ,कुरकुरे और चिप्स का आनंद लिया.वहां पर विभिन्न प्रकार के जीव जंतुओं, सांप, शेर ,हिरण, रंग-बिरंगे पक्षी भी देखें. हम सभी ने विभिन्न प्रकार के जीव जंतुओं के स्वभाव और आदतों के बारे में भी जाना. चिड़ियाघर की सैर करते हुए शाम हो गई और हम सभी घर की ओर लौट आए . इस प्रकार चिड़ियाघर की सैर करके हम सभी ने खूब मस्ती किया और हमें बहुत ही आनंद आया.

प्रशांत पात्रे, कक्षा 5वीं, शा. प्रा. शा. शीतलकुण्डा, संकुल -बाँकी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

चिड़ियाघर

शनिवार को स्कूल की छुट्टी थी. प्रधानाध्यापक ने सभी बच्चों को उनके अभिभावकों के साथ चिड़ियाघर जाने की योजना बनायी हैं. बच्चे आज बहुत खुश लग रहे हैं. वे सभी मस्ती करते, नाचते -गाते -झूमते हुए कब चिड़ियाघर पहुँचे इसका पता ही नहीं चला.जैसे ही चिड़ियाघर पहुँचे टिकट काउंटर में उनके प्रधानाध्यापक ने बच्चों के हिसाब से टिकट खरीदें. इसके बाद सभी बच्चे समूह में बंटकर घूमने लगे. पशु पक्षी, जीव जन्तु के तरह तरह की आवाज से चिड़ियाघर का वातावरण गूँज रहा था. आज का मौसम भी बहुत ही सुन्दर व खुशनुमा था. शरद ऋतू का अपना अलग ही महत्व होता है. न सर्दी न गर्मी और न ही बरसात. ऐसे में बाग बगीचे, फूल फूलवारी की सुंदरता देखते ही बन रही थी. सभी अपने माता -पिता और प्रधानाध्यापक के साथ एक -एक करके बारी बारी से काउंटर वाली जगह पर जाकर उन अनोखे दृश्यों को देखें. रंग बिरंगे, मोर, मछली, तोते, खरगोश को देखकर बच्चे भीतर से प्रफुल्लित हो गए. जंगली जानवरों शेर, भालू, हाथी, हिरण और विषधारी साँपों को देखकर आश्चर्य चकित हो गए थे. बच्चे अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के आगे बेबस होते हैं.उनके लिए सभीकुछ अपरिचित और नया होता है. वे उन चीजों को जानने व सीखने कीतीव्र जिज्ञासा होती है. जिन्हें टेलीवीजन, अखबारों, वर्चुअल दुनिया में देखते थे. आज वे प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देख रहे हैं. उनकी ख़ुशी की कोई सीमा नहीं है. वे थके हुए हैं फिर भी घूमने व देखने के रोमांच के कारण अपनी भावना को व्यक्त नहीं करते हैं.

अंतिम में सबने एक जगह इकट्ठे होकर नाश्ता, चाय, ठंडा, फल का आनंद लिए. इसके बाद सभी घर जाने के लिए रवाना हो गए.आज बच्चे बहुत खुश व प्रसन्न हैं. सबके माता पिता ने स्कूल के प्रधानाध्यापक जी को धन्यवाद दिए एवं आभार प्रकट किये. इस तरह चिड़ियाघर की यात्रा बहुत ही मनोरंजनदायक थी.

कुमारी किर्ती निषाद, कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय, पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, विकासखण्ड-पथरिया,जिला-मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

कहानी चिड़ियाघर की

एक गांव में राम अपने परिवार के साथ रहते हैं. उसके मिंटू नाम का छोटा सा बच्चा है.राम अमीर होते हुए भी अपने अमीरीपन का घमंड थोड़ा भी नहीं करते हैं.वह अपने गांव में जरूरत लोगों की मदद हमेशा करते रहते हैं.एक दिन मिंटू अपने मम्मी-पापा के साथ चिड़ियाघर घुमने जाते हैं.कुछ दूर जाने के पश्चात रास्ता में तड़पते हुए चिड़िया को देखा.मिंटू के मम्मी-पापा ने उसे अपने साथ रखा.उसके घाव में मलहम-पट्टी एवं देखभाल किया और उसे चिड़ियाघर ले गया.वहाँ चिड़ियाघर के मुखिया से मिला.उसके इलाज हेतु कुछ पैसा देकर उस चिड़िया को वही सौंप दिया.

तत्पश्चात मिंटु को उसके मम्मी-पापा ने चिड़ियाघर का शैर कराया.उसने देखा-एक तालाब है,उसमें ढेर सारे बत्तख और बगुला तैर रहे हैं.उसे बहुत ही अच्छा लगा.फिर उसने देखा बच्चें वहाँ छोटे-छोटे बंदरों को कुछ खिला रहे हैंऔर उसके पीछे छोटे-छोटे बंदर भाग रहे हैं.मिंटु ने फिर आगे भालू,जिराफ और ढेर सारे शेर को भी देखा.उसके तेज आवाज से छोटे-छोटे बच्चे डर कर भाग रहे थे.

फिर कुछ देर आगे चलने के पश्चात उसने देखा-एक विशाल हाथी वहाँ पर खड़ा था.छोटे-छोटे बच्चे हाथी के चारों ओर खड़े थे और कुछ बच्चे आपस में खेल रहे थे.उसके विशाल शरीर को देखकर बच्चे खुश हो रहे थे.मिंटू अपने मम्मी की गोदी पर ही बैठा था.उसने देखा वहाँ छोटे-छोटे बच्चे आए हैं.वह अपने पैर पर चल रहा है.कोई भी अपने मम्मी-पापा के गोदी में नहीं बैठा है.मिंटू चलते हुए छोटे-छोटे बच्चे को देखकर प्रेरित हुआ और वह भी अपने छोटे-छोटे पैरों से चलने लगा.इस पर मिंटू के मम्मी-पापा को बहुत खुशी हुई क्योंकि अब उसका बेटा चलना सीख रहा था.मिंटू को चिड़ियाघर में रेलगाड़ी से भी शैर कराया.और सब अच्छी यादों के साथ वापस घर आ गए.

साथियों इस कहानी से हमने सीखा-मिंटू के मम्मी-पापा की तरह कोई भी जीव जंतु घायल मिले तो उसकी सेवा करनी चाहिए और जिस प्रकार मिंटू ने छोटे-छोटे बच्चों को देखकर वह चलना सीखा. उसी प्रकार हमें अच्छी बातों का अनुकरण करना चाहिए.

आयुषी साक्षी साहू धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी

चिड़ियाघर

एक बार की बात है, एक गांव में तीन बच्चे रहते थे. सोनू मोनू और रीना .एक बार रीना की चाची अपने बेटे सूरज के साथ उनके घर आई. फिर बच्चों को चिड़िया घर जाने का सुझा. सभी बच्चे और चाचा जल्दी से तैयार होकर चिड़िया घर चले गए. वहां शेर ,हाथी और बंदर जैसे बहुत से जानवर थे. हाथी बहुत नेक दिल था , जो सभी को करतब दिखा था .

रीना के पास एक बच्चा खड़ा था, जो हाथी को भूखा देख कर उसे केला खिलाने की कोशिश कर रही थी. रीना यह देख कर बच्चे के पास गई और उन्होंने मिलकर हाथी को केला खिलाया, हाथी राजा ने भी चिंधाड़ के उनका शुक्रिया किया .यह देख के सभी बच्चे खुश हो गए .फिर बच्चो ने वह और भी जानवर देख , खूब मस्ती किए और घूमे.इतने में बच्चे थक गए थे . उन्होंने एक पेड़ देखा और सब वहां जाकर बैठ गए और कब सो गए पता नहीं चला. जब वह उठे तो देखा रात हो गई थी और चिड़िया घर के दरवाजे में ताला लग गया था. तब उन्होंने देखा कि हाथी उनके पीछे है. सब डर गए थे . लेकिन वह हाथी आगे बड़ा और दरवाजा को तोड़ा , जिससे सब खुशी से घर चले गए.

सीख- हम किसी की मदद करेंगे तो वह भी किसी न किसी साधन से भी हमारी मदद करेगा.

अनन्या तंबोली कक्षा आठवीं केवी जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

चिड़ियाघर

आस्था अपने दोस्तों के साथ स्कूल टूर में इस बार चिड़ियाघर देखने गई थी. वहां उसने बहुत से जानवर देखें जो उसने पहले कभी नहीं देखा था.केवल चित्रों में या टीवी में ही उसे देखा था .प्रत्यक्ष रूप से जानवरों

को देखकर आस्था बहुत खुश थी चिड़ियाघर में उसने हाथी शेर बंदर जिराफ तोता हिरन आदि जानवर देखें. जब वह हाथी देखी तो लगा हाथी यहां कैसे रह लेता होगा. अपने शिक्षक से पूछने लगी सारी जानकारी वह अपने कॉपी में नोट करती जाती थी. हाथी पिंजरे के बाहर था लेकिन शेर पिंजरे में था यह देखकर फिर आस्था के मन में सवाल आने लगा शेर को पिंजरे के अंदर क्यों रखा गया है बाहर क्यों नहीं जब हाथी को बाहर रख सकते हैं तो शेर तो छोटा जानवर है तब उस शिक्षक नहीं फिर उसे समझाया कि शेर खतरनाक जंगली जानवर है वह बाहर आएगा तो लोगों को नुकसान पहुंचाएगा वह मांसाहारी जानवर है इसलिए उसे पिंजरे के अंदर रखा जाता है आस्था पहली बार अपने दोस्तों के साथ गई थी उसे बहुत मजा आ रहा था सभी बच्चे समूह में इधर-उधर अपने शिक्षक के साथ

घूमने लगे मजे करने लगे आवश्यकता अनुसार वह जानकारी नोट भी करते जा रहे थे फिर वहां को घूमने के बाद सभी मस्ती करते हुए वापस घर आ गए.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

सोनू तै स्कूल आना जल्दी

रचनाकार- संतोष कुमार कर्ष, कोरबा

अनार के दाना हे गोल-गोल
आमा ल खाके किताब खोल
इमली के स्वाद हे खट्टा
ईख के स्वाद हे मीठा
उल्लू के आंखी हे गोल-गोल
ऊन के हावय रोला
ऋषि के नाव हे भोला

एक तारा ला तै बजा ले
ऐनक पहिन के हीरो
नई पढ़बे त बन जाबे जीरो
ओखली म कुटथे हल्दी
औरत ल कईथे माता
अंगूर हावए गोल-गोल
अ: करके किताब खोल
सोनू तै स्कूल आना जल्दी

क से कलम म लिख ले
ख से खरगोश ला देख ले
गमला म फूल ह खिलथे
घड़ी हावए घर म
ङ ल पढ़ ले सोनू पंगा मत ले तै
सोनू च से चम्मच होथे
छाता ला बरसात म ओढथन
ज से जहाज होते
झंडा फहरा ले सोनू
ञ ला पढ़ ले सोनू

टमाटर हावए गुझ गुझ
ड से डमरू बाजथे
ढक्कन ह कुकर शटथे
ण ल पढ़ के किताब खोल
त से तराजु होधे
दवात म होथे स्याही
ध से धनूष होथे

नल से पानी निकलथे
पंतग आकाश म नाचथे
फ से फल ल खाथन
बकरी ह मे मे करथे
भ से भाटा होथे
मछरी ह पानी म रईथे
य से यज्ञ होथे

रस्सी से गाय ल बांधथन
ल से लड़की होथे
व से वन होथे
शेर ह जंगल म रईथे

ष से षटकोंण होथे
सरोता म आमा ह कटथे
हलवाई ह लड्डु बनाथे
क्ष से क्षत्रीय होथे
त्रिशूल ल भोला ह धर थे
ज्ञानी ह कईथे सोनू
बस्ता ला धर ले सोनू

सोनू तै स्कूल आना जल्दी
स्कूल म आके पढ़ ले अपन जिंनगी गढ़ ले

*****

पॉलीथीन! गुडबाई

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

पॉलीथीन! तुम्हें गुडबाई.

कागज, कपड़े, गत्ते गलते
किंतु नहीं तुम गलती हो,
एक बार जो घर घुस आई
वर्षों सबको खलती हो,

डेयरी, ढाबा, दूकानों में
अपनी अच्छी पैठ बनायी.

पतली सी रंगीन थैलियाँ
सबको बना रहीं बीमार,
खूब प्रदूषण फैलाती हो
नदी, नालियाँ हुईं शिकार,

अगर जला दूँ, तो देती हो
गैसें अति विषाक्त दुखदायी.

हम सबने अब सोचा, समझा
पॉलीथीन भयंकर रोग,
कागज, कपड़ा, जूट का थैला
रखें साथ में, करें प्रयोग,

एक न एक महामारी ही
आए दिन तुमने फैलायी.

दूध, दही, घी, चाय, जूस को
अब न कभी पन्नी में लेंगे,
गली, सड़क, कूड़े - कचरे में
प्लास्टिक नहीं फेंकने देंगे,

कूड़ेदान में पहुँचा दूँगा
आसपास यदि पड़ी दिखायी.

पर्यावरण को खूब बिगाड़ा
अब हो जाओ एक, दो, तीन,
प्लास्टिक मुक्त बनेगा भारत
पाना हमको लक्ष्य नवीन,

मात्र तुम्हारा बहिष्कार ही
पूर्ण स्वास्थ्य की एक दवाई.
पॉलीथीन! तुम्हें, गुडबाई.

*****

छत्तीसगढ़

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

देखव छत्तीसगढ़ के श्रृंगार,
सजे हे जइसे नव श्रृंगार.
एक नवम्बर म स्थापित,
बरस के छत्तीसगढ़िया तिहार.

का कहिबे येखर बोली गुत्तुर,
बोली म घुलथे मिसरी.
अपन भाषा अपन बोली,
दाई के बोली कभू नइ बिसरी.

हरियर -हरियर लुगरा,
सोनहा बाली कस चमके धान.
मोर मुकुट चंदा कस दिखे,
रखथे छत्तीसगढ़िया के मान.

अन्न उपजइया किसान मजदूर,
खेती म बहाथे पसीना.
हमर जेवन हमर बियारी,

नागर बैला धरे चले तान के सीना.

नदियाँ नरुआ कल -कल,
गीत ह अब्बड़ सुहाथे.
सर सरावत पूर्वया हवा,
तन के पसीना ल सुखाथे.

छत्तीसगढ़ के गाय गरुआ,
सबो हर गोधन कहाथे.
होवत बिहनिया दूध के चाय
अंगरा रोटी म अब्बड़ सुहाथे.

गाँव गली म डंडा पिचरंगा,
भौरा बाटी अउ गेढ़ी तिहार.
नोनी के फूगड़ी अउ रस्सी कूद,
इहा मनखे,मनखे करथे चिन्हार.

सुआ ददरिया के धुन,
ऐके सुरु म गाये गीत.
किसम -किसम ले संस्कृति,
सुख -दुख म सबो मीत.

मंदिर देवाला देवी देवता,
बइठे तरिया नदियाँ बीच खार म.
तैतिस कोटि देव धामी के बसेरा,
हम जम्मो के जिनगी इह सार म.

पाँव परत हो गुण गावों,
मोर छत्तीसगढ़ के माटी ल.
तोर कोरा म जिनगी हे,
मानत रहू तोरेच परिपाटी ल.

*****

संतुष्टि

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

"वाह ! क्या आनंद ही आनंद है. ऐसा लग रहा है कि यहीं ठहर जाऊँ कुछ दिनों के लिए. चारों तरफ हरियाली है. सुंदर-सुंदर फूलों के बगीचे ! ये सुंदर वादियाँ ! नदियाँ ! झरने ! मन के लिए ये काफी सुकूनदायक हैं. ट्रिन.....ट्रिन.....! मोहन के द्वारा कॉल उठाते ही..... रमा पूछती है कि सुनिये जी, संतुष्टि मिली क्या ? मोहन का जवाब था ,अभी तक तो नहीं मिली. जब मिलेगी तो जरूर बताऊँगा. कहते हैं ना....जब इंसान की शादी हो जाती है और पत्नी को कभी घूमाने साथ में न ले जाया जाये ,तब तक शांत नहीं बैठती. मोहन का भी यही हाल था. मोहन और श्याम छत्तीसगढ़ से बाहर गुजरात घूमने गए थे. भाई मोहन ! इससे पहले तो तुम बड़े खुश नजर आ रहे थे. बड़े-बड़े रेस्टोरेंट में तूने डिनर किया. समुद्र की लहरों ने तो मन मोह लिया. एक से बढ़कर एक कह रहे थे. यहीं रुकने का मन भी कर रहा था तुम्हारा. अब क्या हुआ भाई ? तुम्हें संतुष्टि नहीं मिली क्या ? और ये क्या भाभी जी का कॉल बार-बार क्यों काट रहे हो ?"" श्याम ने कहा."

मोहन तभी तपाक से बोला- "भाई श्याम तुम्हें संतुष्टि मिली क्या...?"

"हाँ... हाँ.... दोस्त मुझे तो संतुष्टि मिल गई."

"कहाँ पर है भाई संतुष्टि, मुझे भी बता दे यार? तेरी भाभी मेरा प्राण खा रही पूछ-पूछ के. पूरे गुजरात में पता लगा लिया लेकिन संतुष्टि मिली ही नहीं. सब मुझे पागल समझ रहे हैं."

"हाँ, तू पागलों जैसा सवाल करेगा तो क्यों न समझेंगे ?" मुँह बनाते हुए श्याम बोला. "मोहन ! कैसी बातें कर रहा है तू. हर जगह संतुष्टि है; सुकून है; तू महसूस तो कर मेरे यार.

"ट्रिन...ट्रिन....! अरे मोहन कॉल तो उठा, भाभी जी का होगा."

"नहीं भाई श्याम फिर वो पूछेगी, संतुष्टि मिली क्या करके ? मैं क्या जवाब दूँगा, जब तक मुझे नहीं मिलेगी, मैं कॉल नहीं उठाऊँगा."

"अरे पागल ! तो बोल देना, मिल गई संतुष्टि करके. बहुत मजा आ रहा है करके. देख तू नहीं बोलेगा तो मैं बोल दूँगा कि तू झूठ बोल रहा है."

"नहीं...नहीं.... . तू भी पागल हो जायेगा. भाई तेरी भाभी सुकून वाली संतुष्टि की बात नहीं कर रही है.

तो फिर....?

"संतुष्टि फाइव स्टार रेस्टोरेंट का नाम है. वहाँ की रसमलाई बहुत ही फेमस है."

पर इस गुजरात में तो संतुष्टि नाम का कोई स्टार रेस्टोरेंट नहीं है. श्याम का मुँह खुला का खुला रह गया.

*****

छत्तीसगढ़ चालीसा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

दोहा:-
दाई के अँचरा भरे, ममता मया खदान.
जय छतीसगढ़ नित कहत, करँव अमित गुणगान.

चौपाई:-
जय जय छतीसगढ़ महतारी, महिमा तोरे हावय भारी.-1
एक नवंबर दिन हे पावन, रंग-रूप हे तोर सुहावन.-2

एक हाथ मा हँसिया, बाली, दुसर हाथ बाँटत खुशहाली.-3
सरी अंग मा गहना साजे, दुनिया भर मा डंका बाजे.-4

कोरवान निक लुगरा हरियर, माथ मउर मन मोहय सुग्घर.-5
तोरे मुखड़ा मन ला भावय, तोर सहीं कोनो नइ हावय.-6

करनफूल अउ ककनी, करधन, सूँता, रुपिया पहिरे बन ठन.-7

चुटकी, पैरी, बिछिया, लच्छा, माहुर, टिकली बहुते अच्छा.-8

ओली तोरे अन, ओन्हारी, भरपुरहा भाजी तरकारी.-9
खानपान के बड़ भंडारा, चटनी-बासी अगम अपारा.-10

गुरहाचीला,भजिया, हलुआ, अरसा, पपची, पिड़िया, पकुआ.-11
लाड़ू, सोंहारी, अंगाकर, रोटी-पीठा इँहचे आगर.-12

रिता कभू नइ राहय कोरा, सिरतों सिगसिग धान कटोरा.-13
गुरमटिया, सफरी, सुखसागर, पलटू, लुचई, रानीकाजर.-14

हाही-माही धनहा, परिया, कुआँ-बावली, नँदिया, तरिया.-15
माटी निक कन्हार, मटासी, खेती कारज, भरय हुलासी.-16

इंद्रावती, ईब, मनियारी, महानदी, अरपा के धारी.-17
लीलागर, शिवनाथ, जमुनिया, लहर-लहर लहराय दुगुनिया.-18

गंगरेल जस लागय गंगा, हसदो, खुड़िया लहर तुरंगा.-19
पुटका, बंकी अउ किंकारी, कोड़ार, मोंगरा मुखतारी.-20

ईसर राजा, ठाकुर देवा, ठउर-ठउर महमाया सेवा.-21
जयति शीतला, जय बगदाई, मेड़ोपार चुरैलिन माई.-22

सिरपुर, राजिम अउ डोंगरगढ़, भोरमदेव, रतनपुर बढ़-चढ़.-23
दंतेवाड़ा, शिवरीनारायण, धर्म धाम हे छाहित कण-कण.-24

जय गिरौध, जय दामाखेड़ा, चारोंकोती सत के बेड़ा.-25
चार चिरौंजी, तेंदू अउ मँउहा, जिनिस इहाँ सब झँउहा-झँउहा.-26

तिज तिहार हे कोरी-कोरी, राखी, देवारी अउ होरी.-27
इहाँ हरेली, जोत जवाँरा, पोरा-तीजा प्राण अधारा.-28

सुआ, ददरिया, पंथी, करमा, गाँवय-नाँचय सब घर-घर मा.-29
सैला, सरहुल अउ डंडारी, मन उछाह भरथे बड़भारी.-30

गोंड़, कोरकू, हल्बा, सौंरा, तोरे कोरा खावँय कौंरा.-31
कोल, कँवर, धनवार, अगरिया, रहँय-बसँय इन सब मनफरिया.-32

कोठा, कोठी, कोठार-बियारा, सरी कुसाली तोर सहारा.-33
घर, अँगना अउ बखरी-बारी, तोर कृपा बरसै महतारी.-34

टिन, बाक्साइट, डोलोमाइट, हीरा, सोना अउ ग्रेफाइट.-35
छुही, कोयला, चूना, पखरा, छपछप ले छतीसगढ़ अँचरा.-36

मोर कलम थक जाथे दाई, लिखत-लिखत मा तोर बड़ाई.-37
जिनगी भर देबे आसीसा, लिखत रहँव तोरे चालीसा.-38

अमित सरग नइ चाही चोखा, इहें जनम के माढ़य जोखा.-39
करबे सुख-दुख सरी सरेखा, मोर भाग मा लिख सुख लेखा.-40

*****

बाल गीत

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

बाल बाल बच के रहना.
सबकी सुनना पर अपना मानना.
खुद पे भरोसा रखना.
दूसरे के भरोसे मत रहना.
अपना काम स्वयं करना.
किसी के लिए बोझ न बनना.
किसी को भी दुःखी न करना.
सबकी ख़ुशी में शामिल रहना.
सिर्फ अपने लिए न जीना.
परहित में सारा जीवन निभाना.

*****

जीने की कला

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

जो व्यक्ति सोता है उसका भाग्य सोता रहता है. इसी तरह जो मनुष्य जागता है उसका भाग्य भी जागता है.हमारी आदतों, हमारे कर्मों और हमारी दिनचर्या का हमारे सौभाग्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है. आलसी, कामचोर और निकम्मा व्यक्ति ही प्रत्येक क्षण भाग्य और ईश्वर को कोसता रहता है.वह उदासीनता का लबादा ओढ़कर अपने इर्द -गिर्द नकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है. ऐसा व्यक्ति अपने आप तो दुःखी रहता है, साथ ही घर -बाहर की दुनिया में भी निष्क्रियता का संदेश पहुँचाता है.

एक नकारात्मक व्यक्ति पुरे घर, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का नैतिक पतन और विकास का विनाश कर देता है. सही अर्थ में विश्लेषण किया जाय तो ऐसे व्यक्ति का इस संसार में रहना और न रहना एक समान हो जाता है. वे धरती के लिए बोझ होते हैं मानव के नाम पर कलंक होते हैं.

यदि आप अपने को ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ति से दूर रखना चाहते हैं तो एक ही सिद्ध मंत्र हैं कि न तो उससे दोस्ती रखें और न ही दुश्मनी. कहने का आशय हैं कि आसक्ति का त्याग करके अनासक्ति का दामन थामें और थोड़े दिनों बाद आप देखेंगे कि सब कुछ,सारी चीजें हमारी ही मनःस्थिति के अनुरूप हो रही हैं. मन में सकारात्मक विचार को बार बार सोचने-दोहराते रहने से हमारे मन मस्तिष्क पर बहुत सुन्दर और अच्छा प्रभाव पड़ता है. हमारे आस -पास के चराचर जीव जंन्तु एवं सभी दिशाएँ प्रफुल्लित होकर नाचने लगती हैं.ध्यान रखें जो अच्छा कर्म करता है उसी का भाग्य चमकता-दमकता है. और जो बुरे कर्म में लिप्त रहता है. उसका कोई ठौर -ठिकाना नहीं रहता है. ऐसे व्यक्ति से कोसों दूर रहें. इसी में आपकी भलाई है.कड़ी मेहनत ईमानदारी और धैर्य के साथ करते रहें.

*****

दिवाली की सफाई और शापिंग

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा

नवरात्र पूरी हुई और दशहरा भी चला गया, अभी थकान भी नहीं गई कि हम सभी को दिवाली के कामों का टेंशन होने लगा है. जबकि आज की जनरेशन जल्दी टेंशन नहीं लेती. पर शादीशुदा महिलाओं को तो यह टेंशन थोड़ी-बहुत लेनी ही पड़ती है. अभी नौ दिन के व्रत-पूजा की थकान उतरी भी नहीं है कि छुट्टी के दिनों में सफाई के झंझट में पड़ना ही है. कभी-कभार यह सफाई का अभियान इतना लंबा और मुश्किल हो जाता है कि इसकी वजह से त्योहारों में महिलाएं बीमार पड़ जाती हैं. पहले का समय अलग था. तब सफाई का अभियान एक निश्चित तरह का था, घर में गोबर-मिट्टी की लिपाई-पोताई से ले कर घर के तमाम छोटे-बड़े बर्तनों की धुलाई होती थी. घर का हर कपड़ा धोया जाता था, घर की गुदरी से ले कर सारे गद्दों और रजाई के कवर तक धो दिए जाते थे, जिनका उपयोग भले ही एक बार भी न किया गया हो. उस समय महिलाएं बहुत काम करती थीं.

शापिंग का झंझट, बजट न बिगाड़ें

दिवाली के समय सब से बड़ा दूसरा काम है दिवाली की खरीदारी और बजट. महिलाओं की एक आदत यह होती है कि वे जो खरीदने जाती हैं, वह तो लेती ही हैं, उसके साथ अन्य दूसरी तमाम चीजें पसंद कर लेती हैं. जो भी देखती हैं, वही लेने का मन हो जाता है. परिणामस्वरूप जिस चीज की जरूरत नहीं होती, वह भी खरीदकर ले आती हैं. जिससे अधिक खर्च हो जाता है और बजट बिगड़ जाता है. मिडिलक्लास फैमिली को इन बातों का बहुत ध्यान रखना पड़ता है. इनके लिए बिगड़ा बजट घर में कलह पैदा करता है. कभी-कभी यह भी होता है कि कोई महिला किसी दूसरी महिला का सामान देखती है तो वह सामान लेने का उसका भी मन हो जाता है. महिलाओं में देखादेखी का महत्व अधिक होता है. यह देखादेखी मन को दुखी भी कर देता है. दूसरे द्वारा ली गई चीज हमें भी लेनी है, यह सोच कभी-कभी घर में अशांति भी पैदा करा देती है. ज्यादातर महिलाएं जब ऐसा करती हैं और किसी कारणवश वह चीज नहीं ले पातीं तो दुखी हो जाती हैं. इसकी वजह से पति से कहासुनी भी हो जाती है. इस बात का ख्याल रखें ऐसी स्थिति न खड़ी हो. याद रखें कि किसी का महल देख कर अपनी झोपड़ी न जलाएं. किसी ने लिया है और हमें भी लेना है. अगर बजट हो और वह चीज जरूरी हो, तभी खदीदें. बाकी बजट से बाहर बेकार खर्च न करें. बजट से बाहर खर्च करने पर आगे चल कर समस्या खड़ी हो सकती है.

बजट का रखें ख्याल

दिवाली के पहले हमेशा एक बजट बना लेना चाहिए. बजट के साथ ही यह भी तय कर लें कि कौन-कौन सी चीज लेनी है. जिन चीजों की जरूरत हो, उसकी एक लिस्ट बना लें. उसी लिस्ट के अनुसार ही शापिंग करें. लिस्ट के हिसाब से शापिंग करेंगी तो बेकार खर्च नहीं होगा और बजट भी नहीं बिगड़ेगा. क्योंकि शोभा में पैसा खर्च करने के बजाय उसे बचा कर रखेंगी तो वह कभी परेशानी के समय में काम आएगा. तिजोरी साजश्रृंगार की चीजों से भरी हो और पैसा न हो तो तकलीफ के समय में रोना ही पड़ेगा.

समय के साथ परंपरा भी बदलती है

आज के समय में नौकरी करने वाली महिला के पास न तो उतना समय होता है और न ही उतनी ताकत. अब महिलाओं का लक्ष्य भी बदल गया है. हम सभी को समय के साथ चलना पड़ता है. अब घड़ी की सुई के हिसाब से काम करने वाली महिलाओं के पास घर की छोटी से छोटी चीज का ढ़ंग से साफ करने का समय नहीं होता. अब सफाई के लिए बाहर से आदमी बुलाए जाते हैं. अपनी मानिटरिंग के अंतर्गत वे घर की प्राॅपर सफाई कर देते हैं. यहां कहने का मतलब यह नहीं है कि आप खुद सफाई न करें. अगर आप के पास समय है और आप का शरीर साथ दे रहा है तो आप खुद भी सफाई कर सकती हैं. बात मात्र इतनी है कि करने के लिए करना है, ऐसा करने के बजाय अगर आप के पास सुविधा है और आप के पास समय का अभाव है तो आप बाहर से आदमी बुला कर सफाई करवा सकती हैं.

शरीर और पैसे का रखें ख्याल

हम साल में न जाने कितना पैसा मात्र शौक में खर्च कर देते हैं. तब पैसे की गिनती नहीं करते. तब ऐसे में बेकार के खर्च बचा कर घर के काम और सफाई के लिए आदमी बुला सकती हैं. वैसे तो यह हर किसी की पर्सनल च्वाइस है. कुछ लोग दिवाली के काम खुद ही करना चाहती हैं. अगर आप अपने काम खुद कर सकती हैं तो इसमें कोई बुराई भी नहीं है. सवाल मात्र यह है कि शरीर को तकलीफ हो इस हद तक कोई काम नहीं करना चाहिए. कभी ऐसा भी होता है कि हम सभी काम में इस तरह लग जाती हैं कि बाद में बीमार पड़ जाती हैं. आज के समय में नौकरी करने वाले लोगों के लिए छुट्टी की परेशानी होती है. ऐसे में त्यौहार पर बीमार हो जाने पर सारा मूड खराब हो जाता है. पूरे साल भर एक ही तरह जीवन जीते हुए हम त्यौहारों में थोड़ा मौजमजा करना चाहते हैं. पर इस समय काम के ओवरलोड के कारण बीमार पड़ जाने पर त्यौहार की छुट्टी का कोई मतलब नहीं रह जाता. इसलिए जो भी करें, खूब सोच विचार कर, शरीर को ज्यादा तकलीफ न हो, तबीयत न खराब हो, इस तरह करें. जिससे त्यौहार के समय में कोई समस्या न आए.

अक्सर ऐसा होता है कि इन कामों की वजह से घर में कहासुनी हो जाती है. घर में किसी तरह का किचकिच न हो, इस बात के ध्यान रख कर दिवाली के समय में काम करें. काम की वजह से घर में कुछ खट्टामीठा न हो, संबंध में खटास न आए, इस तरह इस मामले को टैकल करें.

*****

तू कोशिश करके तो देख

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

कोई कैसे नहीं आएगा,
प्यार से बुलाकर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कोई कैसे ठोकर खाएगा,
हाथ बढ़ा कर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कोई कैसे नहीं मानेगा,
प्यार से मना कर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कोई कैसे नहीं समझेगा,
प्यार से समझा कर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कोई कैसे नहीं संभलेगा,
सहारा देकर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कोई कैसे सफल नहीं होगा,
कड़ी मेहनत करके तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

कब तक रहेगा अंधेरा,
एक दिया जलाकर तो देख,
तू कोशिश करके तो देख.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

1. काले रंग का हु मैं पक्षी
पर नहीं हु मैं कौवा पक्षी
कुहु-कुहु कर गीत सुनाती
बतलाओ मैं कौन सी पक्षी?

2. पिछड़े मे बंद मैं रहता हु
लाल चोंच और हरा शरीर,
लाल मिर्ची मै खूब खाऊ
चलो दिखाओं मेरा तश्वीर?

3. श्वेत वस्त्र मैं धारण करता
पर नही हू मैं कोई साधू संत,
मछली खाता मैं हु एक पक्षी
चलो बतलाओ मेरा नाम तुरंत?

4. धम्मक धम्मक वह आता है
धम्मक धम्मक वह जाता है
सुपा जैसे दो कान है उनके
बतलाओ क्या नाम है उनके?

5. ऊँची गर्दन लम्बी टांगे
देख उसे सब भागे जानवर
'जि' से उनका नाम है आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

1. कोयल, 2. तोता, 3. बगुला, 4. हाथी, 5. जिराफ

*****

अंतरिक्ष की उड़ान

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत जिस तेजी के साथ भारत अपनी टेक्नोलॉजी के विस्तार प्रौद्योगिकी क्षमताओं का विस्तार कर रहा है दुनियां यह देखकर हैरान है ! परंतु जब उनका ध्यान भारत के पैतृक और पीढ़ियों से गॉड गिफ्टेड में मिली बौद्धिक क्षमताओं पर जाता है तो उन्हें विश्वास करना पड़ता है कि असफलताओं से सफलताओं का रास्ता ढूंढने वाले भारत माता के सपूतों की जय हो! चंद्रयान-3 सूर्ययान की सफलता के बाद अब बारी गगनयान की है जिसके आधार पर भारत ने 2040 तक चंद्रमा पर मानवीय दल भेजने की अपनी रुपरेखा तैयार कर ली है. याने आज दिनांक 21 अक्टूबर 2023 सुबह 8 बजे भारतीय अंतरिक्ष यान के साथ पहले गगनयान कार्यक्रम की शुरुआत हो गई है. जिसकी आगे की रुपरेखा पूर्ण रूप से तैयार है. चूंकि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)द्वारा कतारबद्द सफलताओं की श्रेणी में एक और सफलता अर्जित की है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अंतरिक्ष की उड़ान, गगन यह ने बढ़ाया भारत का मान, भारत की मुट्ठी में होगा आसमान.

हम गगनयान कार्यक्रम की शुरुआत को देखें तो, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान (इसरो) शनिवार (21 अक्टूबर, 2023) को सिंगल स्टेज लिक्विड रॉकेट की लॉन्चिंग के जरिए पहले क्रू मॉड्यूल टेस्टिंग के साथ ही अपने महत्वाकांक्षी मानवअंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम गगनयान की यात्रा को रफ्तार देगा. यहपरीक्षण अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यहां अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा किया गया. इसरो का लक्ष्य तीन दिवसीय गगनयान मिशन के लिए मनुष्यों को 400 किलोमीटर की पृथ्वी की निचली कक्षा में अंतरिक्ष में भेजना और उन्हें सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस लाना है. इसरो के अन्य मिशन से इतर अंतरिक्ष एजेंसी अपने परीक्षण वाहन एकल चरण वाले तरल रॉकेट (टीवी-डी1) के सफल प्रक्षेपण का प्रयास, जिसे 21 अक्टूबर को सुबह आठ बजे इस स्पेसपोर्ट के पहले लॉन्च पैड से उड़ान भरने के लिए निर्धारित किया गया था. इस क्रू मॉड्यूल के साथ परीक्षण वाहन मिशन समग्र गगनयान कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, क्योंकि उड़ान परीक्षण के लिए लगभग पूरी प्रणाली एकीकृत है. इस परीक्षण उड़ान की सफलता शेष योग्यता परीक्षणों और मानवरहित मिशनों

के लिए मंच तैयार करेगी, जिससे भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के साथ पहला गगनयान कार्यक्रम शुरू होगा, जिसके 2025 में अमल में आने की उम्मीद है. इसमें क्रू इंटरफेस, जीवन रक्षक प्रणाली, वैमानिकी और गति में कमी से जुड़ी प्रणाली (डिसेलेरेशन सिस्टम) मौजूद हैं. नीचे आने से लेकर उतरने तक के दौरान चालक दल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसे पुन: प्रवेश के लिए भी डिजाइन किया गया है हम इस मिशन की सफलता,शेष परीक्षणों की तैयारी को देखें तो, इस परीक्षण उड़ान की सफलता शेष परीक्षणों और मानवरहित मिशन के लिए मंच तैयार करेगी, जिससे भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के साथ पहला गगनयान कार्यक्रम शुरू होगा, जिसके 2025 में आकार लेने की उम्मीद है. टेस्ट वीइकल एस्ट्रोनॉट के लिए बनाए गए क्रू मॉड्यूल को अपने साथ ऊपर ले जाएगा. फिर 17 किलोमीटर की ऊंचाई पर किसी एक पॉइंट पर अबॉर्ट जैसी स्थिति बनाई जाएगी और क्रू एस्केप सिस्टम को रॉकेट से अलग किया जाएगा. इस दौरान टेस्ट किया जाएगा कि क्या क्रू एस्केप सिस्टम ठीक काम कर रहा है. इसमें पैराशूट लगे होंगे, जिनकी मदद से यह सिस्टम श्रीहरिकोटा तट से करीब 10 किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी में टचडाउन करेगा. भारतीय नेवी का जहाज और डाइविंग टीम की मदद से इसे बाहर निकाला जाएगा.

हम गगनयान मिशन के लाइव प्रोग्राम टेलीकास्ट को देखें तो, अनेक निजी टीवी चैनलों सहित टीवी-डी1 परीक्षण उड़ान प्रक्षेपण का डीडी न्यूज चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया और इसरो अपनी आधिकारिक वेबसाइट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी प्रक्षेपण का सीधा प्रसारण किया. परीक्षण के दौरान चालक बचाव प्रणाली, क्रू मॉड्यूल विशेषताएं और अधिक ऊंचाई पर गति नियंत्रण शामिल हैं. इस अभियान के माध्यम से, वैज्ञानिकों का लक्ष्य चालक दल की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, जिन्हें वास्तव में गगनयान मिशन के दौरान एलवीएम-3 रॉकेट से क्रू मॉड्यूल में भेजा जाएगा.

हम माननीय पीएम द्वारा 17 अक्टूबर 2023 को इसरो वैज्ञानिकों से मीटिंग को देखें तो, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) 2040 तक चंद्रमा पर इंसान को भेज सकता है. 2035 तक अपना स्पेस स्टेशन बना सकता है. हालांकि इससे पहले 2025 में वह अंतरिक्ष में मानव मिशन गगनयान भेजेगा. यह टारगेट मंगलवार यानी 17 अक्टूबर को इसरो के वैज्ञानिकों के साथ पीएम की मीटिंग में तय किए गए. पीएम ने 21 अक्टूबर को भारत के पहले ह्यूमन स्पेस फ्लाइट मिशन गगनयान के क्रू एस्केप सिस्टम की टेस्टिंग की तैयारियों की जानकारी भी ली थी. पीएमओ ने प्रेस में बताया था कि भारत की पहली मानव अंतरिक्ष उड़ान 2025 में होने की संभावना है.मीटिंग में पीएम ने इसरो के वैज्ञानिकों से कहा था कि हमें 2035 तक अपना स्पेस स्टेशन बनाने और 2040 तक चंद्रमा पर मानव भेजने की योजना पर काम करना चाहिए. पीएम ने वीनस ऑर्बिटर मिशन और मार्स लैंडर पर भी काम करने को कहा था. भारतीय स्पेस एजेंसी इसरो लगातार अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपना कद बढ़ाती जा रही है. कुछ ही दिन पहले पीएम ने गगनयान मिशन की तैयारियों की समीक्षा के दौरान वैज्ञानिकों के लिए नए टारगेट सेट किए. 2040 तक पहले भारतीय को चंद्रमा पर भेजने का लक्ष्य रखें. शुक्र और मंगल ग्रह के लिए भी मिशन की शुरुआत करने की बात पीएम ने कही थी. बैठक में गगनयान मिशन की तैयारियों की समीक्षा की गई थी. पीएम ने साल 2018 में स्वतंत्रता दिवस भाषण में गगनयान मिशन की घोषणा की थी. 2022 तक इस मिशन को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था. हालांकि, कोविड महामारी के कारण इसमें देरी हुई. अब 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत तक इसके पूरा होने की संभावना है. इसरो इस मिशन के लिए चार एस्टोनॉट्स को ट्रेनिंग दे रहा है. बेंगलुरु में स्थापित एस्ट्रोनॉट ट्रेनिंग फैसिलिटी में क्लासरूम ट्रेनिंग, फिजिकल फिटनेस ट्रेनिंग, सिम्युलेटर ट्रेनिंग और फ्लाइट सूट

ट्रेनिंग दी जा रही है. इसरो भविष्य के मानव मिशनों के लिए टीम का विस्तार करने की योजना भी बना रहा है. गगनयान मिशन के लिए करीब 90.23 अरब रुपए का बजट आवंटित किया गया है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अंतरिक्ष की उड़ान - गगनयान ने बढ़ाया भारत का मान - भारत की मुट्ठी में होगा आसमान.अंतरिक्ष की उड़ान भरने भारत का पहला ह्यूमन मिशन गगनयान.भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों के साथ पहले गगनयान कार्यक्रम की शुरुआत हुई - 2025 से 2040 तक की रूपरेखा की तैयारी सराहनीय है.

*****

सब ठीक हो जाएगा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

आज अंधेरा है तो क्या हुआ,
यह वक्त भी बीत जाएगा,
कल का सूरज नई रोशनी लेकर आएगा,
तू सब्र रख,
सब ठीक हो जाएगा.

जीवन में समस्याएं आएगी,
उन समस्याओं से घबराना मत,
बुरे दिन भी गुजर जाएगा,
तू आशा और विश्वास रख,
सब ठीक हो जाएगा.

राह चाहे कितना भी कठिन हो,
उन कठिन राहों पर चलते रहना,
चलने से ही मंजिल मिलेगा,
तू हिम्मत रख,
सब ठीक हो जाएगा.

जीवन में कोई भी चीज आसानी से नहीं मिलेगा,
कड़ी मेहनत और संघर्ष करना पड़ेगा,
एक दिन तुम्हारा मेहनत भी रंग लाएगा,
तू हौसला रख,
सब ठीक हो जाएगा.

परिस्थितियों कैसी भी हो,
उन परिस्थितियों का सामना कर,
एक दिन परिस्थितियों भी बदल जाएगा,
तू घबरा मत,
सब ठीक हो जाएगा.

असफलता से निराश मत होना,
असफलता में भी सफलता छिपी है,
एक दिन सफलता तेरे पास जरूर आएगा,
तू हार मत मान,
सब ठीक हो जाएगा.

*****

आओ सब मिलकर करें रक्तदान

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

रक्तदान है महादान,
इससे बड़ा नहीं है कोई दान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

ये जीवन है अनमोल,
अपने रक्त से बचाए किसी का जान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

यह शरीर है नश्वर,
इस शरीर का मत करो अभिमान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

इससे नहीं होता कोई नुकसान,
समाज में बढ़ता है मान सम्मान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

आती है शारीरिक कमजोरी,
ये न पालो अधूरा ज्ञान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

रक्त के बिना नहीं जी सकता कोई भी इंसान,
अपने रक्त से किसी को दे जीवन दान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान.

पल दो पल का काम है ये श्रीमान,
दिनचर्या में आएगा नहीं कोई व्यवधान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान

सुन लो राम, सुन लो मितान,
सबसे करते हैं आहवान,
आओ सब मिलकर करें रक्तदान

*****

तू बढ़ता चल

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल,

ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल,
कल भी हमारा था,
आज भी हमारा है,
होगा आने वाला कल,
ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल

चाहे हजार मुश्किलें आए,
उन मुश्किलों से लड़ता चल,

ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल,

सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो,
डटा रहे हर पल,
ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल,

निरंतर विकास करता चल,
प्रगति के पथ पर बढ़ता चल,
ऐ देश तू बढ़ता चल ,
ऐ भारत तू बढ़ता चल,

भारत माता का सदा हरा भरा रहे आंचल,
बढ़ता रहे ऊर्जा और बल
ऐ देश तू बढ़ता चल,
ऐ भारत तू बढ़ता चल.

*****

देश करवट बदल रहा है

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

सतत विकास की राह पर चल रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

रोज नित नए अविष्कार हो रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

चांद पर जीवन की संभावना ढूंढ रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

आतंकवाद और नक्सलवाद खत्म हो रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

डिजिटल इंडिया के सपने को साकार कर रहा है,

धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

विकासशील से विकसित राष्ट्र बन रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

फिर से सोने की चिड़िया बन रहा है,
धीरे-धीरे यहां का मौसम बदल रहा है,
देश करवट बदल रहा है.

*****

'दिखावा' तेजी से फैलता एक सामाजिक रोग

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, भिवानी

समय के साथ बदलते समाज में दिखावे की प्रवृत्ति तेज़ी से बढ़ रही है. आजकल ज्ञादातर लोग दूसरों के सामने अपनी नकली छवि पेश करते हैं. काफी हद तक ईएमआइ की सुविधाओं ने भी लोगों में दिखावे की इस आदत को बढ़ावा दिया है. दूसरे के पास कोई भी नई या महंगी चीज देखकर लोगों के मन में लालच की भावना जाग जाती है. फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल साइट्स की वजह से भी युवाओं में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है. रिलेशनशिप को भी सोशल साइट्स पर दूसरों को दिखाने के लिए ही अपडेट किया जा रहा है. जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आपके आचार, विचार और व्यवहार में गंभीरता आएगी. तब कभी आप सोचेंगे कि अगर मैं 300 रुपए की घड़ी पहनूं या 30000 की, दोनों समय एक जैसा ही बताएंगी. मैं 300 गज के मकान में रहूं या 3000 गज के मकान में, तन्हाई का एहसास एक जैसा ही होगा. सोने के लिए एक बेड ही पर्याप्त होगा. फिर आपको ये भी लगेगा कि यदि मैं बिजनेस क्लास में यात्रा करुं या इक्नामी क्लास में, अपनी मंजिल पर उसी नियत समय पर ही पहुँचूँगा. या फिर रेलवे के स्लीपर क्लास में यात्रा करो या एसी में, ट्रेन एक ही समय में दोनों को पहुंचाएगी. इसलिए अपनी आवश्यक आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए न कि व्यर्थ के दिखावे पर फोकस करना चाहिए.

किसी भी चीज का दिखावा करने की आपको कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इससे क्षणिक फायदा मिलता है. हमें कुछ भी काम करना है वह दूर दृष्टि को ध्यान में रखते हुए करना है. अपनी क्षमताओं को बढ़ाइए और यह सब पॉसिबल होगा जब आप अच्छी बातों को अपने जीवन में धार लेंगे. यह आप जीवन के किसी भी पड़ाव पर कर सकते हैं तो फिर दिखावे की क्या जरूरत है? इंसान को केवल अपना मानसिक संतुलन बराबर रखते हुए आत्मविश्वास की चरम प्रकाष्ठा पर पहुंचना होगा. इसमें पहुंचने का सबसे आसान तरीका है कि वह अपने को सादा जीवन और उच्च विचार वाली कहावत पर चरितार्थ करें. हमें जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए बहुत कुछ अपने अंदर बदलाव करने होंगे वह सब आसानी से कर सकते हैं सिर्फ सोच को सकारात्मक बना ले. आज का युग आधुनिक युग है, जहां हर क्षेत्र में विकास देखने को मिलता है. पूरी दुनिया पर आधुनिकता का भूत सवार हो चुका है. आधुनिकता का सीधा संबध विकास से दिखाई देता है. उद्योग से लेकर प्रयोग तक यह संसार बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है. पीछे मुड़कर देखना नहीं चाहते हैं हम इस विकास की दौड़ में हम मानवता को भूल चुके हैं. हम एक बार भी पीछे मुड़कर देखना भी नहीं चाहते हैं, जो एक बड़ी भूल साबित हो सकती है.

कहते हैं कि इतिहास अपने आप को दोहराता है, जो हमें समय-समय पर देखने को भी मिलता है. इतना होने के बावजूद हम कुछ सीखने के मूड में नहीं हैं. आज के दौर में आनलाइन प्लेटफार्म पर निजी

जीवन का अनावश्यक दिखावा इस कदर बढ़ गया है कि हम जो खाएं, पीएं, घूमने जाएं, उसे आनलाइन प्लेटफार्म पर डालना जैसे हमारी ड्यूटी में शामिल हो गया है. नई चीज खरीदते हैं तो उसे फेसबुक पर अपलोड करना नहीं भूलते. परिवार के साथ छुट्टियां बिताने के दौरान खींची निजी तस्वीरों को भी लोग साझा करने से नहीं चूकते. जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ेगी, आपके आचार, विचार और व्यवहार में गंभीरता आएगी. तब कभी आप सोचेंगे कि अगर मैं 300 रुपए की घड़ी पहनूं या 30000 की, दोनों समय एक जैसा ही बताएंगी. मैं 300 गज के मकान में रहूं या 3000 गज के मकान में, तन्हाई का एहसास एक जैसा ही होगा. सोने के लिए एक बेड ही पर्याप्त होगा. फिर आपको ये भी लगेगा कि यदि मैं बिजनेस क्लास में यात्रा करूं या इक्नामी क्लास में, अपनी मंजिल पर उसी नियत समय पर ही पहुँचूँगा. या फिर रेलवे के स्लीपर क्लास में यात्रा करो या एसी में, ट्रेन एक ही समय में दोनों को पहुंचाएगी. इसलिए अपनी आवश्यक आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए न कि व्यर्थ के दिखावे पर फोकस करना चाहिए.

आजकल केवल रहन-सहन में ही नहीं, बल्कि रिश्तों के मामले में भी लोग नकली व्यवहार करने लगे हैं. यहां तक कि प्यार जैसी कोमल और सच्ची भावना में भी अब दिखावे की मिलावट हो रही है. आज की युवा पीढ़ी में रिश्तों के प्रति पहले जैसी ईमानदारी नज़र नहीं आती. लोग मन ही मन दूसरों के बारे में बुरा सोचते हैं, पर उनके सामने अच्छा बने रहने का ढोंग करते हैं. झूठ की बुनियाद पर टिके ऐसे रिश्ते नकली और खोखले होते हैं, इसीलिए वे जल्द ही टूट भी जाते हैं. हमें अपने बच्चों को बहुत ज्यादा अमीर बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाए बहुत ज्यादा खुश कैसे रहना चाहिए ये सिखाना चाहिए. हमें भौतिक वस्तुओं के महत्व को देखना चाहिए उसकी कीमत को नहीं. दिखावे की जिंदगी से हमें बाहर आना होगा. आने वाली पीढ़ी को बताना होगा कि उनका यह समय पठन-पाठन व ज्ञानअर्जन का है. ऐसे में जरूरी है कि हम फेसबुक, वाट्सएप पर सिर्फ अपने काम की बातों से ही सरोकार रखें. वाट्सएप पर रिश्ते बनते हैं पर बिगड़ते भी हैं. गलतफहमियां होती हैं. अंतत: रिश्ते बिखरते देर नहीं लगती. बच्चों को अभिभावक जितना समय देंगे, बच्चे उतने ही संस्कारवान बनेंगे. एकल परिवार की विभीषिका झेलने पर मजबूर बच्चे एकाकीपन का समाधान मोबाइल पर ढूंढने लगते हैं. संवादहीनता से बचाव, बच्चों की बातों को सुनना व उनकी दिनचर्या का भाग होना ही उन्हें आपके प्रति आकर्षित करेगा.

हमें यह जानना होगा कि अगर समाज में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है तो इसकी वजह क्या है? आज लोगों को पहले की तुलना में पैसे कमाने के ज□ादा विकल्प मिल रहे हैं. पहले लोग अपनी सीमित आमदनी में भी संतुष्ट रहना जानते थे. अब वे सोचते हैं कि हमारे पास और क्या होना चाहिए, जिससे समाज में हमारा स्टेटस ऊंचा नज़र आए. काफी हद तक ईएमआइ की सुविधाओं ने भी लोगों में दिखावे की इस आदत को बढ़ावा दिया है. दूसरे के पास कोई भी नई या महंगी चीज देखकर लोगों के मन में लालच की भावना जाग जाती है. फेसबुक और ट्विटर जैसी सोशल साइट्स की वजह से भी युवाओं में दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है. रिलेशनशिप को भी सोशल साइट्स पर दूसरों को दिखाने के लिए ही अपडेट किया जा रहा है. हम अपनी सभी गतिविधियों को वहां साझा करके चर्चा में बने रहना चाहते हैं. अब लोग रिश्तों के मामले में भी दिखावा करने लगे हैं. जीवन में अब पहले जैसी सहजता नहीं रही. इसी समाज का हिस्सा होने के कारण जाने-अनजाने हम सब इससे प्रभावित हो रहे हैं. इसलिए हमें सचेत ढंग से ऐसी आदत से बचने की कोशिश करनी चाहिए.

*****

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

माली के बिना बाहर नहीं होती,
फूलों के बिना बाग गुलजार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.

घुंघरू के बिना झंकार नहीं होती,
संगीत के बिना फनकार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.

साधु संतों में कोई अहंकार नहीं होती,
बिना बात के प्रतिकार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

मानव के बिना संसार नहीं होती,
जनता के बिना सरकार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.

फूलों की बिना आदर सत्कार नहीं होती,
कोई भी वस्तु बेकार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.

*****

तू कोशिश तो कर

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

लक्ष्य लेकर आगे बढ़,
दिखा कुछ बनकर,
तू कोशिश तो कर.

सपना तेरा जरूर सच होगा,
खुद पर विश्वास कर,
तू कोशिश तो कर.

जीवन में चुनौतियां आएंगी,
उन चुनौतियों का सामना कर,
तू कोशिश तो कर.

मंजिल तेरी कदम चूमेगी,
अपने अंदर जुनून पैदा कर,
तू कोशिश तो कर.

असंभव कार्य भी संभव हो जाएगा,
कोई कार्य नहीं है दुष्कर,
तू कोशिश तो कर.

मुश्किल हलातो से मत घबरा,
अपने अंदर हौसला पैदा कर,
तू कोशिश तो कर.

*****

रानी मधुमक्खी की सूझबुझ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

नंदन कानन नाम का एक बहुत बड़ा जंगल था.जो अपनी हरी-भरी हरियाली और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध था.क्योंकि यहाँ पर

नाना प्रकार के पेड़-पौधे,और सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगे फुल-फल भी हुआ करते थे.इसी कारण यहाँ दूर-दराज से अप्रवासी जीव- जंतु और पक्षी गण आये दिन अपना निवास बनाया करते थे.और बड़े अमन-चैन का जीवन जीते थे.यहाँ पर रहने के लिए उनको सभी प्रकार की सुख-शांति,सुंदर हरे-भरे पेड़, नादिया,और खाने के लिए फल-फुल जो मिलते थे.और इस प्रकार से नंदन कानन की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलने लगी.

इस बात की भनक आसपास के शिकारियों

को लग गई.फिर क्या था,ये शिकारी आपस में मिलकर एक योजना बनाई की क्यों न हम उस नंदन कानन में जाकर वहाँ के जीव जंतुओं का शिकार करें.और एक दिन नियत समय पर अपने काले मनसूबों को अंजाम देने के लिए उस जंगल की ओर रवाना हो गये.और जैसे ही उस जंगल के सीमा में पहुंचे,वहाँ के सुंदर मनोरम हरी-भरी हरियाली और जीव-जंतुओं की अठखेलियों को देखकर मन्त्रमुग्ध हो गये.और फिर अपनी बुरी नियत को अंजाम देने के लिए सबसे पहले वहाँ की चहचहाती फुदकती चिड़ियों का शिकार करने का मन बनाया.इसके लिए उन्होंने साथ में लाये अपने जाल को व्यवस्थित करते हुए सूर्यास्त हुई शिकारियों ने अपना जाल

दाने के साथ फैला दिया.

इधर शाम को सारे पक्षी अपने घोसलों को लौटने लगे पर यह क्या ? यहाँ के दृश्य को देख कर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा.

वो अपने घोसले की ओर जाना भूल गये,और सारे पक्षी दाने के लोभ में

जमीन मे उतरने लगे.और सभी जाल में फंसते गये.शिकारी फुले नहीं समा रहे थे.

उन्होंने जाल को समेटना शुरू कर दिया.

इधर घोसलों में छोटे-छोटे बच्चे थे जो अपनी माँ को नहीं पाकर जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने,लगे.संयोगवश

उस जगह के पेड़ों पर मधुमक्खियों का भी बसेरा था,बच्चों के चीखने-चिल्लाने की आवाज को सुनकर परेशान और हैरान हो गये, और अंततः रानी मधुमक्खी ने घोसले मे जाकर पता लगा ही लिया.

वहाँ बच्चों ने रोते हुए कहा-

आज हमारी माताएँ अभी तक नहीं आई,और हम भूख से तड़प रहे हैं!!

इतना सुनकर रानी मधुमक्खी द्रवित हो गई और बच्चों को समझाईस देते हुए अपने दल-बल के साथ उनकी माओं को खोजने निकल गई.जैसे ही खुली मैदान में आई कुछ लोगों के भागने की आवाज़ आई,रानी मधुमक्खी तुरंत समझ गई,और उनका पिछा किया,जैसे ही पास में पहुंची चिड़ियों के कराहने चिल्लाने की आवाज आई-"बचावो!!!बचावो!!" फिर रानी ने आव देखा न ताव तुरंत हमला बोल दिया.शिकारियों को काट-काट कर लहू-लुहान कर दिया.जैसे-तैसे उन जालों को छोड़कर ये शिकारी भाग निकले.सभी चिड़िया आजाद हुए और अपने घोसले की तरफ लपके बच्चों का रो-रो के बुरा हाल हो गया था.अपनी माँ को पाकर सभी बच्चे भाव- विभोर हुए और माओं ने उनको अपने पँखो से लगा लिया.

और फिर सभी माओं ने रानी मधुमक्खी को हृदय से धन्यवाद दिया.

*****

अम्मा अब तो सर्दी आई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

अम्मा अब तो सर्दी आई.
लगती मुझको यह दुखदाई.

हाथ पैर में आती ठिठुरन,
माँस पेशियों में है जकड़न,
ऐसे कैसे करूँ पढ़ाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

सर्द हवाएँ चलती दिनभर,
भाता है मन को ही बिस्तर,
भीतर दुबका रहूँ रजाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

तन कहता अब नहीं नहाऊँ,
मन करता स्कूल न जाऊँ,
कर दो तुम कुछ जतन भलाई.
अम्मा अब तो सर्दी आई.

अम्मा अब तो सर्दी आई.
लगती मुझको यह दुखदाई..

*****

तोरे अगोरा हे लछमी दाई

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

होगे घर के साफ सफाई,
तोरे अगोरा हे लछमी दाई.
अँगना दुवार जम्मो लिपागे,
नवा अंगरक्खा घला सिलागे.
लेवागे फटक्का अउ मिठाई,
तोरे अगोरा हे लछमी दाई.. 1

अँधियारी म होवय अँजोर,
दीया बारँव मैं ओरी ओर.
हूम-धूप अउ आरती गा के,
पईयाँ परत हँव मैं ह तोर,
बाँटव बतासा-नरियर,लाई,
तोरे अगोरा हे लछमी दाई.. 2

तोर बिन जग अँधियार,
संग तैं त रतिहा उजियार.
तोर किरपा ह होथे जब,
अन-धन के भरय भन्डार.

सुख-दुख म तैं सदा सहाई.
तोरे अगोरा हे लछमी दाई.. 3

कलजुग के तहीं महरानी,
तोर आगू भरैं सबो पानी.
माया म तोर जग बउराय,
अप्पढ-मूरख अउ गियानी.
बिनती "अमित", कर भलाई,
तोरे अगोरा हे लछमी दाई.. 4

*****

चलो पावन दीप जलाएँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

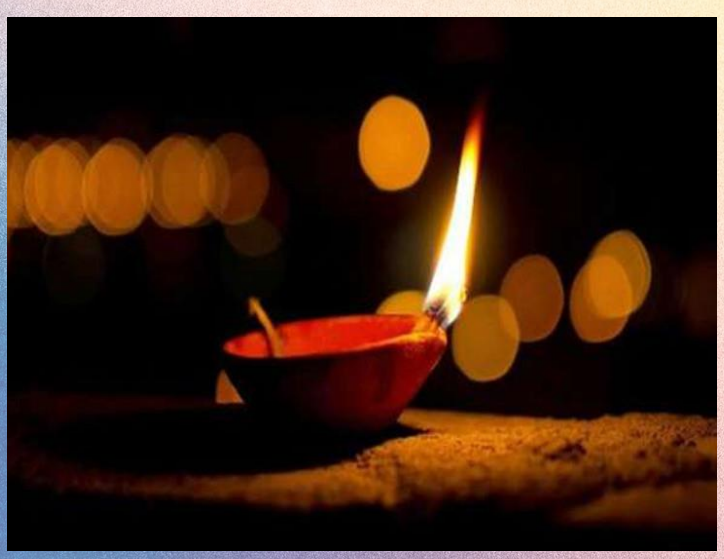

चलो हम, पावन दीप जलाएँ
और धारा में , उजियारा लाएँ
घर-आंगन हो उजला-उजला
तन-मन का अँधियारा भगाएँ.

कोई नही क्लेश, अशांत रहे
जगमग ज्योति दिन रात रहे
जीवन से दुखों, का अंत रहे
नव-सूर्योदय ,नव-प्रभात रहे.

दीपों का आया है प्यारा पर्व
सद्भावनाओं का निभाएँ धर्म
इस दिवाली कुछ अच्छा करें
दूर हो दुष्टवृतियाँ और अधर्म.
तन-मन स्वस्थ हो प्रफुल्लित
यह जगत सारा हो आंनदित
सभी का जीवन, बने मधुबन
जनजन सुखमय हों सुरभित.

मन से सारे, हम दुर्गुण हटाएँ
सद्गुण का हम भावना लाएँ
यहाँ कोई अब, दुखी मत रहे
यह दिवाली, खुशहाली लाए.

*****

दुल्हन चाची

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा

मेरे चाचू की है शादी
सबने मिलकर धूम मचा दी.
नाचें सब मटकाकर कूल्हा
चाचू आज बने हैं दूल्हा.

पगड़ी, सूट, गले में टाई
दिल्ली से कल ही मँगवाई.
सखियों के संग चाची आईं
सुंदर सी वरमाला लाईं.

चाचा को माला पहनाई
माला पहनाकर शरमाई.
फिर चाचा की बारी आई
चाची को माला पहनाई

खुश हैं मम्मी दादी ताई
बोलीं नई बहुरिया आई.
आकर बोली बहना प्राची
कितनी सुंदर दुल्हन चाची.

*****

जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

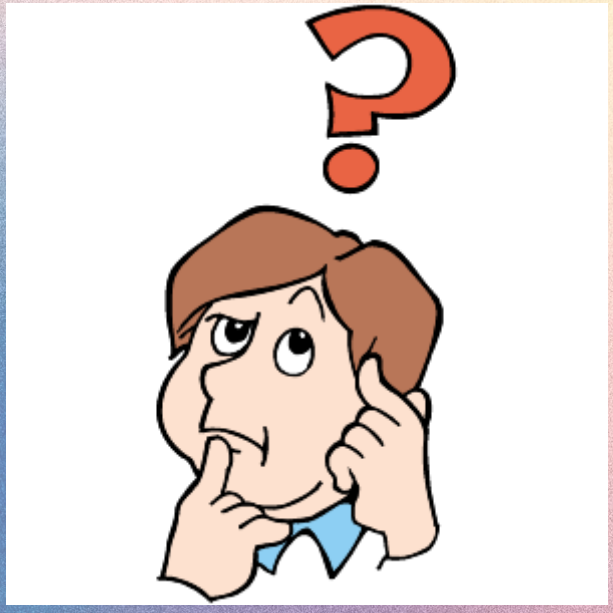

1- कचर कचर सब येला खाँय, काट मुँड़ी तब नून लगाँय.
बारी बखरी छछलै नार, भीतर बीजा के भरमार.

2- खाय नहीं पर गजब चबाय, काड़ी कोंवर नीक जनाय.
दाँत जीभ चमचम चमकाय, बीमारी ला मार भगाय.

3- एक सवारी चालक चार, सुते जाय ये पाँव पसार.
आगू-आगू एखर चाल, पाछू मा जनता बेहाल.

4- करिया हँड़िया उज्जर भात, खालव संगी ताते-तात.
हवय भरे येमा जुड़वास, तरिया भीतर करय निवास.

5- खाय न दाना पानी घास, होय नहीं ये कभू उदास.
ले जावय बइठा के पीठ, करै कभू नइ येहा ढीठ.

6- हावय एखर रानी चार, एक हवय राजा दमदार.
पाँचों जुरमिल करथें काज, सुग्घर सुमता साजँय साज.

7- एक फूल करिया मुस्काय, मुँड मा सबके सुघर सुहाय.
घाम परै ता खिल-खिल जाय, छँइहाँ मा ये झट मुरझाय.

8- अपन ददा के रहिथे संग, आगर बेटा के हे रंग.
उँचहा हावय इँखर मकान, बीच खोतली बसथे प्रान.

9- नान्हें लइका बाँधय पार, कूदत-फाँदत कई हजार.
करनी येखर लाज बचाय, बोलव संगी काय कहाय.

10- ये लइका दू कौंरा खाय, चपक बोंड़री डहर बताय.
करय नहीं ये काँही शोर, अँधियारी मा होय अँजोर.

1-खीरा, 2-दतुवन, 3-मुरदा, 4-सिंघाड़ा, 5-साइकिल, 6-अँगरी/अँगठा, 7-छतरी, 8-नरियर, 9-सुजी सूँत, 10-टॉर्च

*****

नानी

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा

मुझको भाती है नानी,
पान चबाती है नानी.

मुंह में दांत नहीं लेकिन,
सब कुछ खाती है नानी.

एक कहानी शाम ढले,
नित्य सुनाती है नानी.

बस खरटि भर- भरकर,
रात बिताती है नानी.

*****

आओ,हम सब वोट करें

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

लोकतंत्र को सपोट करें.
लोकतंत्र को सपोट करें.

मत देने का अधिकार मिला है,
तो,आओ हम सब वोट करें.

उम्मीदवार कई आएंगे,
बोल-बोल कर,हमें ललचाएँगे.

उनके बहकावे में न आना है.
जो अच्छा है, उन्हें अपनाना है.

लालच देकर जो हमें ठगे,
उनके विचार पर चोंट करें.
लोकतंत्र को सपोट करें.

*****

आ गयी, फिर दिवाली

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

आ गयी, फिर दिवाली.
गांव की कोई भी गली अब,
न सुनसान है,न है काली.
आ गयी, फिर दिवाली.
पुते हुए चहुँओर दीवारें.
द्वार सजे हैं न्यारे-न्यारे.

छत से लटक रहे हैं झालर,
रंगोली तो,लग रहे मनोहर.

बच्चे फोड़ रहे है पटाखे,
मिठाई सब बांट-बांट के.
मना रहे हैं, सब खुशहाली.
आ गयी,फिर दिवाली.

*****

रंगत खोते हमारे सामाजिक त्यौहार

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, भिवानी

बाजारीकरण ने सारी व्यवस्थाएं बदल कर रख दी है. हमारे उत्सव-त्योहार भी इससे अछूते नहीं रहे. शायद इसीलिए प्रमुख त्योहार अपनी रंगत खोते जा रहे हैं और लगता है कि त्योहार सिर्फ औपचारिकताएं निभाने के लिए मनाये जाते हैं. किसी के पास फुरसत ही नहीं है कि इन प्रमुख त्योहारों के दिन लोगों के दुख दर्द पूछ सकें. सब धन कमाने की होड़ में लगे हैं. गंदी हो चली राजनीति ने भी त्योहारों का मजा किरकिरा कर दिया है. हम सैकड़ों साल गुलाम रहे. लेकिन हमारे बुजुर्गों ने इन त्योहारों की रंगत कभी फीकी नहीं पड़ने दी. आज इस अर्थ युग में सब कुछ बदल गया है. कहते थे कि त्योहार के दिन न कोई छोटा. और न कोई बड़ा. सब बराबर. लेकिन अब रंग प्रदर्शन भर रह गये हैं और मिलन मात्र औपचारिकता. हम त्योहार के दिन भी हम अपनो से, समाज से पूरी तरह नहीं जुड़ पाते. जिससे मिठाइयों का स्वाद कसैला हो गया है. बात तो हम पूरी धरा का अंधेरा दूर करने की करते हैं, लेकिन खुद के भीतर व्याप्त अंधेरे तक को दूर नहीं कर पाते. त्योहारों पर हमारे द्वारा की जाने वाली इस रस्म अदायगी शायद यही इशारा करती है कि हमारी पुरानी पीढियों के साथ हमारे त्योहार भी विदा हो गये.

कृषि प्रधान होने के कारण प्रत्येक ऋतु परिवर्तन हंसी-खुशी मनोरंजन के साथ अपना-अपना उपयोग रखता है. इन्हीं अवसरों पर त्योहार का समावेश किया गया है,जो उचित है. प्रथम श्रेणी में वे व्रतोत्सव, पर्व-त्योहार और मेले है, जो सांस्कृतिक हैं और जिनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों और विचारों की रक्षा करना है. इस वर्ग में हिन्दूओं के सभी बड़े-बड़े पर्व-त्योहार आ जाते है, जैसे - होलिका-उत्सव, दीपावली, बसन्त,श्रावणी, संक्रान्ति आदि. संस्कृति की रक्षा इनकी आत्मा है. दूसरी श्रेणी में वे

पर्व-त्योहार आते है,जिन्हे किसी महापुरूष की पुण्य स्मृति में बनाया गया है. जिस महापुरूष की स्मृति के ये सूचक है, उसके गुणों, लीलाओं, पावन चरित्र, महानताओं को स्मरण रखने के लिए इनका विधान है. इस श्रेणी में रामनवमी, कृष्णाष्टमी, भीष्म -पंचमी, हनुमान- जयंती, नाग-पंचमी आदि त्योहार रखे जा सकते हैं.

यानि यहां हर दिन में एक त्यौहार अवश्य पड़ता है. अनेकता में एकता की मिसाल इसी त्यौहार पर्व के अवसर पर देखी जाती है. रोजमर्रा की भागती-दौड़ती, उलझनों से भरी हुई ऊर्जा प्रधान हो चुकी, वीरान सी बनती जा रही जिंदगी में ये त्यौहार ही व्यक्ति के लिए सुख, आनंद, हर्ष एवं उल्लास के साथ ताजगी भरे पल लाते हैं. यह मात्र हिंदू धर्म में ही नहीं वरन् विभिन्न धर्मों, संप्रदायों पर लागू होता है. वस्तुतः ये पर्व विभिन्न जन समुदायों की सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं और पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं. सभी त्यौहारों की अपनी परंपराएं, रीति -रिवाज होते हैं. ये त्यौहार मानव जीवन में करूणा, दया, सरलता, आतिथ्य सत्कार, पारस्परिक प्रेम, सद्भावना, परोपकार जैसे नैतिक गुणों का विकास कर मनुष्य को चारित्रिक एवं भावनात्मक बल प्रदान करते हैं. भारतीय संस्कृति के गौरव एवं पहचान ये पर्व, त्यौहार सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं.

सामाजिक त्योहार और अंतर-विद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास और पारस्परिक कौशल के निर्माण में सहायता करने के लिए अद्भुत अवसर प्रदान करते हैं. पारस्परिक कौशल में दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने और बातचीत करने की क्षमता शामिल है और आत्मविश्वास स्वयं और स्वयं की क्षमताओं में विश्वास है, जो दोनों दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने के लिए आवश्यक हैं. सामाजिक त्योहार विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं के संपर्क में लाते हैं, जो उनके क्षितिज को व्यापक बना सकते हैं और उन्हें दूसरों के प्रति सहानुभूति और समझ विकसित करने में मदद कर सकते हैं. नए दोस्त और संपर्क बना सकते हैं, जो समुदाय से अधिक जुड़ाव महसूस करने और अपनेपन की भावना विकसित करने में मदद कर सकते हैं. ये आयोजन इसे विकसित करने का एक शानदार तरीका है क्योंकि वे बहुत सारे लोगों को एक साथ लाते हैं, और इस तरह एकता और भाईचारे की भावना पैदा करते हैं. ये जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के प्रति अधिक स्वीकार्य, सहिष्णु और समावेशी होना सिखाते हैं.

बाजारीकरण ने सारी व्यवस्थाएं बदल कर रख दी है. हमारे उत्सव-त्योहार भी इससे अछूते नहीं रहे. शायद इसीलिए प्रमुख त्योहार अपनी रंगत खोते जा रहे हैं और लगता है कि हम त्योहार सिर्फ औपचारिकताएं निभाने के लिए मनाये जाते हैं. किसी के पास फुरसत ही नहीं है कि इन प्रमुख त्योहारों के दिन लोगों के दुख दर्द पूछ सकें. सब धन कमाने की होड़ में लगे हैं. गंदी हो चली राजनीति ने भी त्योहारों का मजा किरकिरा कर दिया है. हम सैकड़ों साल गुलाम रहे. लेकिन हमारे बुजुर्गों ने इन त्योहारों की रंगत कभी फीकी नहीं पड़ने दी. आज इस अर्थ युग में सब कुछ बदल गया है. कहते थे कि त्योहार के दिन न कोई छोटा. और न कोई बड़ा. सब बराबर. लेकिन अब रंग प्रदर्शन भर रह गये हैं और मिलन मात्र औपचारिकता. हम त्योहार के दिन भी हम अपनो से, समाज से पूरी तरह नहीं जुड़ पाते. जिससे मिठाइयों का स्वाद कसैला हो गया है. बात तो हम पूरी धरा का अंधेरा दूर करने की करते हैं, लेकिन खुद के भीतर व्याप्त अंधेरे तक को दूर नहीं कर पाते. त्योहारों पर हमारे द्वारा की जाने वाली इस रस्म अदायगी शायद यही इशारा करती है कि हमारी पुरानी पीढियों के साथ हमारे त्योहार भी विदा हो गये.

हमारे पर्व त्योहार हमारी संवेदनाओं और परंपराओं का जीवंत रूप हैं जिन्हें मनाना या यूँ कहें की बार-बार मनाना, हर साल मनाना हर समाज बंधु को अच्छा लगता है. इन मान्यताओं, परंपराओं और विचारों में हमारी सभ्यता और संस्कृति के अनगिनत सरोकार छुपे हैं. जीवन के अनोखे रंग समेटे हमारे जीवन में रंग भरने वाली हमारी उत्सवधर्मिता की सोच मन में उमंग और उत्साह के नये प्रवाह को जन्म देती है. हमारा मन और जीवन दोनों ही उत्सवधर्मी है. हमारी उत्सवधर्मिता परिवार और समाज को एक सूत्र में बांधती है . संगठित होकर जीना सिखाती है . सहभागिता और आपसी समन्वय की सौगात देती है . हमारे त्योहार, जो हम सबके जीवन को रंगों से सजाते हैं, सामाजिक त्यौहार एक अनूठा मंच प्रदान करते हैं इनमे साथियों के साथ सहयोग करने, मिलने और सामूहीकरण करना, अपनी प्रतिभा दिखाने और विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में सिखाने और सीखने की क्षमता होती है. ये कौशल हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और अक्सर हमारे जीवन के लगभग सभी पहलुओं के मूल में होते हैं.

इसलिए, वर्तमान समय में इनकी प्रासंगिकता का जहां तक प्रश्न है, व्रत -त्यौहारों के दिन हम उक्त देवता को याद करते हैं, व्रत, दान तथा कथा श्रवण करते हैं जिससे व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक समरसता का संदेश भी दिखाई पड़ता है. इसमें भारतीय संस्कृति के बीज छिपे हैं. "पर्व त्यौहारों का भारतीय संस्कृति के विकास में अप्रतिम योगदान है. भारतीय संस्कृति में व्रत, पर्व -त्यौहार उत्सव, मेले आदि अपना विशेष महत्व रखते हैं. हिंदुओं के ही सबसे अधिक त्योहार मनाये जाते हैं, कारण हिन्दू ऋषि - मुनियों के रूप में जीवन को सरस और सुन्दर बनाने की योजनाएं रखी है. प्रत्येक पर्व - त्योहार, व्रत, उत्सव, मेले आदि का एक गुप्त महत्व हैं. प्रत्येक के साथ भारतीय संस्कृति जुडी हुई है. वे विशेष विचार अथवा उद्देश्य को सामने रखकर निश्चित किये गये हैं. मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठा के लिए मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है. मूल्यपरक शिक्षा आज समय की मांग बन गई है. अतः इसे शीघ्रतिशीघ्र लागू करने की आवश्यकता है. वर्तमान डिजिटल युग में लोग अपनी सभ्यता-संस्कृति को भूलते जा रहे हैं.

*****

इंतजार

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर

कमला और लूटन दोनों पास के ही एक गांव में झोपड़ी में रहते हैं. शादी को काफी अरसा हो गया और लंबे इंतजार के बाद उनका एक बेटा हुआ. दोनों की खुशियों का क्या ठिकाना था मानो उनकी अंधेरी रात में दीप जल गया हो. भले ही उनके जीवन में बदहाली था लेकिन बच्चे के पालन- पोषण शिक्षा - दीक्षा में कोई कमी नहीं किया. समय गुजरता गया और जिंदगी के ढलती पहर में भी मेहनत मजदूरी करके अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दीक्षा देकर बड़ा किया . दोनों की मेहनत रंग लाया और एक दिन वह खुशखबरी भी सुनने में आया कि उनके बच्चे का विदेश में नौकरी लग गया है मन में कभी खुशी तो कभी बच्चे के दूर होने का गम भी सताने लगा. ऐसा पहली बार हुआ था कि उस गांव के किसी बच्चे का विदेश में नौकरी लग गया हो. ना चाहते हुए भी अपने आंखों के तारे को विदेश भेजना पड़ा इस आशा के साथ कि उसका भविष्य बन जाएगा. बेटा अब बड़ा ऑफिसर बन गया था अब वह बड़े आदमियों के साथ उठना- बैठना करने लगा और कभी - कभी अपने गांव की सुध लेता. कमला और लूटन की बूढ़ी आंखों को अपने बेटे के आने का हमेशा बेसब्री से इंतजार रहता. पहले तो वहां हर तीन महीने में आ जाया करता था , लेकिन अब काफी समय बीत गया है इधर कमला और लूटन की सांसे भी जवाब दे रही है और इसी इंतजार में है कि उनका जिगर का टुकड़ा कब आएगा.

*****

चूजे की चींचीं

रचनाकार- डॉ.अखिलेश शर्मा, इन्दौर

चींचीं करके चूजा बोला,
बड़ी मेहनत से मुंह खोला.

जल्दी मुझको बड़ा बना दो,
ऊपर उड़ाना तुम सिखला दो.

चींचीं करके मां से बोला,
बन करके बड़ा ही भला.

जाने कहां तुम उड़ जाती हो,
बड़ी देर से फिर आती हो.

मुझको देती हो एक दाना,
बाकी सारा तुम खाती हो.

फिर भी तो प्यारी हो मां तुम.
कैसी भी हो मेरी मां हो तुम.

*****

देखव हमर बेटी मन कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

हमर छत्तीसगढ़ के मान बढ़ावत हे,
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

हमर छत्तीसगढ के संस्कृति ल बचावत हे,
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

घर घर जाके सुआ के गीत गावत हे,
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

हमर जुन्ना परंपरा ल निभावत हे,
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

टूकनी में बैठे सुआ के जोड़ी,
अब्बर सुहावत हे,
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

बदला म चउर अऊ पैसा लेके,
हमन ल आशीष देवत हे.
देखव हमर बेटी मन,
कईसे सुग्घर सुआ नाचत हे.

*****

मैं फुलवारी हूँ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

मैं रंग-बिरंगी पुष्पों की फुलवारी हूँ
मै वसुधा को बनाती सुंदर प्यारी हूँ.

मैं नीत–नीत नूतन बहार लाती हूँ
मैं प्रकृति को पुष्पों से सजाती हूँ.

मैं हवा को सुरभित कर जाती हूँ
मैं सब के तन–मन को महकाती हूँ.

मैं वृक्ष-तरुओं को रंगीला बनाती हूँ
मैं पुष्प–कली में रंग, भर जाती हूँ.

मै भ्रमर-तितलियों, को, लुभाती हूँ
मै ही चिड़ियों, को, चह-चाहाती हूँ.

मै मधु मक्खियों को मधु चखाती हूँ
मै ही धरा को सोलह श्रृंगार कराती हूँ.

*****

देवारी के सरप्राइज

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

"चल घर ओ रघु के दाई. अबड़ बेरा होगे. कल अउ आ जाबोन. भूख घलो लगत हे. अहादे बेरा घलो ठढ़ियागे हे. मुँड़ ह तीपत हे." करगा छाँटत राम्हीन ल मयाराम ह मेड़ म ठाढ़े-ठाढ़े हूँद कराइस.

करगा ल पुदगत-पुदगत राम्हीन कहिथे- "ले न थोरिक रूक न , ताहन जाबोन." मुठा के करगा ल मेंड़ म फेंके बर माँगत मयाराम फेर तिखारिस-"घर बुता तो घलो परे हे ओ बही. तिहार लक्ठा गेये हे".

"ले अब काहत हस ते, काली अउ आ जाबोन. देवारी के घर-बुता अड़बड़ बुता ताय. करगा ल डेटरासुद्धा मुरकेटिस, अउ मेंड़ म बम्भुर रूख अरझा दिस."

"मेंड़ बड़ ऊपर हे ओ. दे तोर हाथ ला." काहत राम्हीन के हाथ ल झींकत खानी मयाराम ल हाँसी आगे.

"ले धर, अउ ज्यादा हाँस झन . तोला बड़ हाँसी आत हे." राम्हीन थोरिक जोरहा आवाज म किहिस.

"ले वो बही एक कनी म रिसा जाथस तहुँ हा." मायाराम राम्हीन संग भुरियाय अस गोठियाइस.

राम्हीन कहिथे- "घर मा लोग-लइका मन सँसो करत होही अउ तोला मजाक सूझे हे."

घर पहुँचीन ता देखथें, रघु हर नानचुन चड्डा ला पहिरे जाला-धुर्रा ला झर्रात रहे अउ उर्मिला निसेनी ला धरे रहे. "अइइइ...अइई.... हाथ-गोड़ ला टोर डरहू का रे." राम्हीन खिसियाय अस किहिस- भरे तिहार मा तोर जम्मों संगवारी मन फटाका फोड़ही अउ ते खटिया मा परे रहिबे. चल उतर -उतर."

"करन दे न ओ रघु के दाई. तोर बुता जल्दी हो जाही. चल भात ला हेर. पेट म मुसुवा कूदत हे." मायाराम पेट ल टमरत कहिथे. तभे उर्मिला कहिथे- "बइठ ना तो बाबू. मेहा इडहर कढ़ही राँधे हों." उर्मिला के गोठ

ल सुन के पेट के मुसुवा अउ तरमराये लगिस मयाराम के. खाय बर बइठिस. सरपट–सरपट खाय के बाद मयाराम कहिथे- "वाह ! बेटी, मजा आ गे खाय म. पेट के आगी चुमुक ले बुताइस. कस वो राम्हीन ?" राम्हीन ला तो देवारी बुता के संसो धरे हे. काला हुँकारू देही बिचारी हा.

आज संझा बेरा ठक ले परोसी लीलावती पहुँचगे. चर-चर ले गहना ला ओरमाये रहे. हूँत करात, "कहाँ हस ओ भउजी.... काम बुता सिरागे या ...." काहत घर म निंगीस. राम्हीन हाथ ला लमावत कहिथे– "काला सिराही या नोनी. खेत के काम ला घलो देखे ला लगथे."

"काय होगे भउजी ?" लीलावती ल अचरज लागिस.

"अई....! अभी ले तैं हा गहना-गुँठा ला ओरमा ले हस या. बने पूजा-पाठ कर के नइ पहिरतेस या ?" राम्हीन के गोठ ऊपर गोठियाइस- "वा...! येकर बर का पूजा–पाठ करबे भउजी."

दूनोझन गोठियात रहिन, तइसने म रघु लीलावती के बात ला सुन डारिस. कहिथे- "वो हा कहाँ पूजा करही माँ गहना-गुँठा ला. तोला देखाय बर पहिरके आ हे फुफु ह हमर घर ." नानुक रघु के गोठ ह लीलावती ला थोरिक जरे कस लगिस. तभे मयाराम हर मुहूँ ला टेड़गा करत कहिथे- "चल रे टूरा अब्बड़ गोठियाथस. चल भाग ये मेर ले." राम्हीन अउ मयाराम घलो हाँस डरथें.

"तैं कुछू नइ ले हस का या भउजी येसो के देवारी मा ? लीलावती फेर पूछ परिस. "काला लेबे ओ लीलावती गरीब मनखे. चुरथे ता खाथन बहिनी." राम्हीन भउजई-चुमकही मारिस. थोरिक बेर ले हँसी-मजाक करके लीलावती अपन घर लहुँटिस.

आज सुरहुत्ती घलोक आगे. बिहनिया ले मयाराम अउ लोग–लइका उठके पूजा–पाठ के तियारी करे लगिन. रघु अपन संगी मन संग खेले ला भाग गे. ओकर संगी मन पूछथे- "का ले हस रघु येसो देवारी म यार ? फटाका घलो नइ फोरत हस ?" रघु कुछू कहितिस तेकर पहिली लीलावती खोर ल बाहरत लइका मन के बात ला सुन डारिस. टांट मारत कहिथे- "ये मन का ले सकथें गा बाबू हो. रघु ला पूछथस, सरी दिन इँखर घर गरीबी छाए रहिथे. चिरहा ओन्हा ला पहिरके तो येखर दाई–बाबू मन खेत जाथें. आज तो लक्ष्मीपूजा करे के बाद जम्मों पारा–परोस के मन सकलाही ता देख लेहू, नानचुन चड्डा ला पहिर के आही ते ला. सबो झन नवा पहिरही ता रघु हा चड्डा ला ओरमाये रही." हाँसत-हाँसत लीलावती भीतरी म खुसर गे. रघु के संगवारी मन कलेचुप होगें. रघु के एंड़ी के रीस तरुवा चढ़गे. चिल्लावत कहिथे- "हमन तो सरप्राइज रखे हन ओ फुफु, देखत तो रहिबे."

"का...! तुमन मन काय सापराइस रख हू रे." लीलावती कहिथे.

"सापराइस नहीं ओ फुफु, सरप्राईज.... कहिथे. जम्मो लइका मन हाँस डारिन. फेर मुहाटी म आके कहिथे- "देखबोन, तुमन काय रखे हो तेन ला."

घर जा के जम्मों बात ला अपन दाई–बाबू ला बताइस रघु हर- "बाबू सबझन हमन ला गरीब लाचार समझथें, अउ तैं कुछू नइ काहस, अउ मोरो बर तो कुछू नइ ले हस ये साल." गोठियात-गोठियात रघु गोहार पारके रो डारिस. अब वोला चिंता होवन लागिस कि कहाँ के सरप्राईज दे पाहूँ कहिके.

मयाराम संझा खेत ले घूमके घर मुस्कावत आइस. कहिथे- "रघु बेटा, वो बारी पार जा तो. रघु मोर पनही ला लान बेटा." रघु बारी पार जाके देखथे ता,देखते रही जाथे, घेरी–बेरी आँखी ला रमंज–रमंज के देखिस ता नवा रेंजर साइकिल ल देख चकचका जाथे. रघु हर मयाराम कर दउँड़त आके कहिथे- "बाबू ये रेंजर साइकिल मोर बर हरे का ?" मयाराम ले हाव सुनके रघु के खुशी के ठिकाना नइ रहे. राम्हीन हर हाँसत रघु ल कहिथे- "ता तोर बाबू बर थोड़ी रही रेंजर साइकिल ह ? वोला चलावत खेत जाही का ?" तभे मयाराम तको मजाक कर देथे- "रघु के छुट्टी के दिन उही म बइठार के लेगहू वो बही तोला खेत." "टार तोर गोठ ला रघु के बाबू, लइका मन के आघू म रंग-रंग के गोठियाथस. मोला लाज लगथे."

येसो मयाराम ह उर्मिला बर साँटी ले रथे. राम्हीन ला पूछथे- "तोला का चाही ओ रघु के दाई ?" नइ लगे कुछू हमला. लइका मन खुश ता हमूँ खुश."

"नहीं ओ.... लागही तहूँ ला." काहत मयाराम के मया झुमका बनके राम्हीन के दूनो कान म झूलन लागथे. जम्मो झन खुश हो जाथें. रघु के सरप्राइज के संगे-संग सबोझन ला सरप्राइज मिल जाथे. रघु कहिथे- "या ..... ये तो हमरे मन बर सरप्राइज होगे." ताहन फेर रघु अपन नवा रेंजर साइकिल ला चलावत खोर म निकलिस. राम्हीन झुमका पहिर के घर मुँहाटी के चौंरा म बइठिस. उर्मिला छमछम करत दुवारी मा निकलिस. तभे लीलावती ह ये सबझन ल देख परिस. मुहूँ फारे-के-फारे रहिगे.

*****

मेरा दर्द

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल सूरजपुर

मैं गाँव का पुराना, कच्चा घर हूँ.
गलने लगी हैं मेरी गारे की दीवारें और
सड़कर लटकने लगी है खपरैल.
पनाह दी थी मैंने
तुम्हारी कई पीढ़ियों को.
यहीं पल कर बड़े हुए,
तुम्हारे दादा - परदादा,
दादी और माँ - बाप.
यहाँ गूँजा करती थीं
तुम्हारी अठखेलियाँ
और उत्सवों पर मंगलगान.
मेरे कोठों में भरे रहते थे,
गेहूँ और धान.
मुझे अपने भाग्य पर गर्व था,
हर एक दिन उल्लासमय पर्व था.
अब झेलना पड़ रहा है मुझे
उपेक्षा और अकेलेपन का श्राप.

चिर निर्वासित - सा एकान्त में खड़ा
क्षीण होता हुआ आँसू बहा रहा हूँ मैं,
क्योंकि ...
तुम हो चुके हो संवेदनहीन.
हाँ ..!! तुम्हें शहर प्रिय है.
सुखी रहना.
तुम्हें कोई कष्ट न हो,
दुआ है मेरी.
तुम्हें तो याद कभी नहीं आएगी मेरी,
एक दिन यूँ ही ढह जाऊँगा मैं.
तुम्हें याद करता हूँ.

*****

दिवाली आई

रचनाकार- सम्राट सिंह चौहान, कक्षा -6, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबाहर, बिलासपुर

दिवाली आई दिवाली आई
मेंरी प्यारी दिवाली आई
सभी के लिए खुशीयाँ लाई
चलो अब साथ खेल भाई
मेंरी प्यारी दिवाली आई दिवाली आई
हमारे लिए नए कपड़े लाई
चलो खए मिठाई भाई
मेंरी प्यारी दिवाली आई दिवाली आई
चलो फटाके लिए भाई
दोस्त यार नाचे भाई
मेरी प्यारी दिवाली आई दिवाली आई
चलो रावण जलए भाई
सबसे अच्छा दिवाली भाई
मेंरी प्यारी दिवाली आई दिवाली आई

*****

देवारी तिहार

रचनाकार- गीता द्विवेदी, बलरामपुर

हमर सरगुजा में वइसे तो कइयों गो तिहार मनाल जाएल, जेमे करमा, छेरता, दसराहा, नवा खाई. अउ गनेश पूजा, दुर्गा पूजा, गोबरधन पूजा, नवरात घलो खूबे धूमधाम ले मनाल जाएल, चाहेक गाँव कि शहर जम्मों बाट लोगमन अब्बड़ हँसी- खुसी ले नाच-गा के मनाथें. ओही में एजग के एगो अउ परमुख तिहार हवे, देवारी तिहार. देवारी तिहार जम्मो देश कर तिहार हवे. जेनहर कातिक महिना के अमावस के मनाल जाथे. अइसन कहल जाएल कि भगवान् राम जी, देवी सीता अउ लगाने संघे बनवास के थोरेक दिन सरगुजा हों में घलो बिताए रहिन. भगवान् राम रावन ला मायेर के देवी सीता अउ भाई लछमन संघे अयोध्या लउट के आए रहिन. तेकर अयोध्या के लोगमन दीया जराय के भगवान राम के भुगतान करे रहिन. ते परमपरा हर तइहा जुग ले चलल आथे. अउ आयेज ले दसराहा में रावन जराल जायेल, कातिक अमावस के देवारी तिहार मनाल जाएल.

ए तिहार के तइयारी महिनाभर पहिले ले शुरू हो जाएल. चारों कती साफ़-सफाई, लिपाई-छबाई में घर के सभे झन लायेग जाथें. घर- दुरा ला करिया माटी, छुही माटी, गोबर, अउ दुसर-दुसर रंग ले रँग-पोत के जगमगाय देखें. नोनी, बहुरियामन दुरा में रंगोली घलो बनाथें. केला के पेड़ कर खम्भा गाड़थें आमा पतई अउ गोंदा फूल ले सब कती सजाथें. ओ दिना घर के सब झन नवा-नवा, अंगा, लुगा कपड़ा पिंध के राती लछमी दाई के पूजा करथें. तेकर परसादी में लाई-बतासा, मिठाई बाँट थें खाथें. पटाखा फोरथें.

अइसने हमर सरगुजा में घलो देवारी तिहार ला जम्मो झन मिलजुल के भगति- परेम ले मनाथें.

*****

चल ओ संगवारी

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

चल ओ संगवारी जाबो,
बनबो देश के भविष्य.
बनाबो अपन देश ल,
सबले सुघ्घर, सबले उच्च.

तज के आलस चल जाबो.
करके महिनत, पसिना बहाके.
अपन देश ल,
हरियर बनाबो.

चल ओ संगवारी जाबो.
पथ्थरा के महिल बनाबो.
सोन के चिरई ल,
फिर से चहिकाबो.

छत्तीसगढ़ के वासी हन.
अपन देश के विकास बर,
जग ल जीत के आबो.
चल ओ संगवारी जाबो.

*****

तातापानी मेला

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

बलरामपुर जिला में है तातापानी गांव
भोलेनाथ का मंदिर है
पीपल की छांव
यहां पर बना हुवा है
गर्म जल का कुंड
दूर दूर से लोग हैं आते यहां झुंड के झुंड
यहां के जल में गजब की शक्ति चर्म रोग मिट जाते
कच्ची सब्जियां इसमें डालो
पककर बाहर आते
मकर संक्रति को यहां लगता है भव्य मेला
खिलोने,कपड़े,चाट,और मिलते सेब,केला
दादा दादी मुन्ना मुन्नी मेला देखने आना
भोलेनाथ का आशीर्वाद और खुशियां लेकर जाना.

*****

बेंदरा

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

डारी डारी फांदे बेंदरा
आंखी ला मुचकाए
पाकल पाकल आमा देख के
ओखर जीव ललचाए
आमा खाए गापुच गापुच
पोंछी ला घुमाए
मनखे मन ला देख के
किंदर किंदर जाए

*****

चंदा मामा

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

लुकते छिपते, हंसते,खेलते
चंदा मामा आए हैं
झिलमिल करते तारों को भी
अपने साथ में लाए हैं.
सब कहते हैं हम पियेंगे,
तुम्हारे घर की चाय.
और मिठाई भी खायेंगे,
जल्दी करो उपाय.
चाय नही तो खा लेंगे हम,
मीठी मीठी मलाई.
नींद आ रही अब सोएंगे,
हम सब ओढ़ रजाई.
तुम हो नन्हे मुन्ने बच्चे,
प्यारी मुस्कान तुम्हारी
आना मेरे घर आंगन में,
वही पहचान हमारी.

*****

FLN

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

FOUNDATIONAL LITERACY AND NUMERACY

नई शिक्षा नीति है आई,
FLN ने की भरपाई.
बस्तों से निकलकर शिक्षा,
देखो अब व्यवहार में आई.
खेल खेल और गतिविधि से,
सीखने की जुगत लगाई.
भाषा, गणित को लक्ष्य बनाकर,
सारी शिक्षा इसमें समाई.
पढ़ना,लिखना सरल हो जाए,
हम जो इसमें ध्यान लगाएं.
रंग बिरंगे चित्रकारी से,
बच्चे सीखे समझदारी से.
सीखना हो जाए आसान,
जब शिक्षक हो मित्र समान.
शासन ने भी की अगुवाई,
बच्चों की जिसमे हो भलाई.
निपुण भारत और FLN से,
शाला में हो रोज पढ़ाई.

*****

अंगना मां शिक्षा

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

मां तेरे आंचल का खिलौना,
तेरे बिन बचपन है सूना.
ममता और दुलार देकर,
मुझको अपने पास बुलाना.
कंकड़ चुनकर ले आऊंगा,
एक,दो, तीन बतला देना.
खट्टे नही मीठे फलों को,
तु मुझको खिला देना.
छोटे,बड़ों का भेद समझना,
मुझको मां तू रोज नहलाना.
क, ख, ग, घ और A,B,C,D,
पढ़ना कैसे बतला देना.
सुरज क्यों निकलता ना जानूं,
अंधेरों से घबरा जाऊं.
जितना तुझको आता है मां,
सब मुझको तु सिखला देना.

*****

रोजगार

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

हर व्यक्ति के लिए रोजगार परम आवश्यक व्यवस्था है, सामाजिक जीवन सम्मान के साथ चलाने के लिये जरूरी है. क्या नौकरी ही रोजगार है. वह भी सरकारी हो, क्या संविधान में लिखा है. या जो शिक्षा हमने ग्रहण की है.वह हमें नौकर बनाने के अलावा कोई ज्ञान नहीं देती है.जब वर्ण व्यवस्था की बात करते हैं.तो नौकर होना शुद्र का काम है. पर हमने ज्ञान अपने ज्ञान के भण्डार शास्त्रों से तो लिया नहीं है. हमने ज्ञान वहां से लिया जो हमें नौकर बनाकर अपने नीचे दबाये रखना चाहते थे. वह तो चलें गये पर गुलामी की मानसिकता इतने अन्दर तक बैठा गये की रोजगार का मतलब नौकरी के अलावा और कुछ सूझता ही नहीं है.

दुनिया में करोड़ों लोग हैं, जिन्होंने जीवन के बंजर में बीज रोपा और जी-जान से मेहनत कर उद्योग,व्यापार, कारपोरेट, खड़े किये क्या वें बेरोजगार हैं. या हजारों को रोजगार देने वाले हैं.जो बलिदान होने को तत्पर होता हैं वहीं अमरता पाता है, नाम कमाता है. नौकरी ही रोजगार नहीं है. सही रास्ते चलकर धन कमाने के सभी साधन रोजगार है.

*****

जीवन

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

जीवन को सरल बनाओ,
खुद को इतना मत उलझाओ,
सबकी सोच और अलग विचार,
क्यूं करें हम आपस में टकरार,
अपनी सोच अगर ना मिलती हों,
तो दूसरी राहें भी मिल जाती हैं.
मेरा तेरी ,तेरी मेरी में,
अपने मन को ना उलझाओ,
फूलों की खूशबू संग महको,
बागों की बहारें ले लो,
क्यों मन मे रखना है मैल,
क्यों कर लेना है सबसे बैर,
खूबसूरत वादियों में जाओ,
नाचो ,झूमो और गाना गाओ,
जिदंगी है बस चार दिनों की,
खुल कर जीऐं और खुब करें मस्ती,
भूलें सब पिछली बातों को,

साफ करें हम अपनी दिल के कोनो को,
दोस्तों के संग लाड लगाओ,
हंसी का कहकहा सजाओ,
छुट जाऐगे संगी साथी,
ऊपर ना जाए कोई घोड़ा हाथी ,
सबो को ये सत्य पता है,
फिर ना जाने क्यूं,

भ्रम में पड़ा है
आ जाओ दोस्तों ,बहनों
फिर से महफिलें सजाओ,
प्रेम से गले लग जाओ,
जीवन को सरल बनाओ.

*****

तू देश हित वोट कर

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

समय निकल रहा है,
नहीं आएगा लौटकर,
तू देश हित वोट कर,
तू देश हित वोट कर.

यदि लालच में आकर देगा वोट,
नहीं होगा देश का विकास,
यह बात अपने जेहन में नोट कर,
तू देश हित वोट कर,
तू देश हित वोट कर.

जाति धर्म संप्रदाय से ऊपर उठकर,
बिना किसी भय के,
तू देश हित वोट कर,
तू देश हित वोट कर.

लोकतंत्र का यह पावन पर्व,
सब बनाएंगे मिलकर,

तू देश हित वोट कर,
तू देश हित वोट कर.

आज लेते हैं हम शपथ,
वोट के बदले नहीं लेंगे कोई नोट,
तू देश हित वोट कर,
तू देश हित वोट कर.

*****

चलव रे संगी चलव रे बाबू वोट डाले बर जाबो

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

चुनई के बेरा आगे,
अपन फर्ज ल निभाबो,
चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

लोकतंत्र के महान परब ल,
जुरमिल के सब मना बो,
चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

हमर देश के भविष्य ल,
मिलजुल के सुग्घर बना बो,
चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

शत प्रतिशत वोट के लक्ष्य ल,
जुरमिल के पुरा कर बो,

चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

सही और योग्य उम्मीदवार के,
चुनई ल हमन करबो,
चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

काकरो बहकावा म नहीं आवन,
सोच समझ के वोट डालबो
चलव रे संगी चलव रे बाबू,
वोट डाले बर जाबो.

*****

प्रेम की माला

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

कितना कठिन हो गया,
इस धरती पर,
प्रेम की बाती जलाना,
एक दूसरे के साथ,
मोतियों की माला पिरोना,
शब्द शब्द को पहले समझना,
तोल तोल के बोल ना,
कुछ बातें किसी से ना कह ना,
मुस्किल है अब इस धरा पर,
सबों को अपना कहना,
कितना जटिल हो गया.
प्रेम की बाती जलाना,
शिकवे -शिकायतों की,
इस दौर मे झड़ी लगाना,
ना किसी की सुनना,ना किसी को मनाना
व्यर्थ हो गया है,

इस धरती पर ये जीवन की रचना,
पहले के रिस्तों मे,
चचेरे,मौसेरे, फुफेरे,ममेरे,सोतेले,गांव, समाज
सबों से रिस्ता गाठंना,
प्रेम से रहना और हृदय से लगाना,
वतर्मान का समय,जितना हो सके,
रिस्ते से दूरी बनाए रखना,
बात- बात में गाठ बांधना,
बड़ा जटिल हो गया है,
मोतियों की माला बनाना,
किसी के दिए उपहार को
वषों तक संभालना,पुचकारना, सीने से लगाना,
वर्तमान समय में,
किसी का भेंट, तोहफा को

देखकर पहले बुदबुदाना,
बड़ी मुस्किल से पसंद आना
अपनो से नजरे चुराना,
राहो में कतरा कतरा कर चलना,
बहुत जटिल हो गया इस धरा पर,

प्रेम की बाती जलाना,
मोतियों की माला बना कर
रिस्तों को बनाऐ रखना.

*****

चिड़िया रानी

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

चिड़िया रानी चिड़िया रानी,
तू तो निकली बड़ी सयानी.
घाट घाट का पीती पानी,
पर कभी न बनाती कहानी.

तिनका तिनका जोड़ जोड़कर.
घरौंदा बनाना सिखाती हो
कण कण दाना जोड़ जोड़कर,
बच्चों को खिलाती हो.

सुबह-सुबह जब खोले खिड़की,
नित नए गीत सुनाती हो.
ऊंची उड़ान भरकर भी,
कभी नहीं इतराती हो.

उठो जागो और करो मेहनत,
यह पथ हमें दिखलाती हो.
छू ले अनंत ब्रह्मांड को,
यह संदेश दे जाती हो.

*****

धुनिया और उसकी चिंता

रचनाकार- श्रीमती मंजू पाठक (शिक्षिका) दुर्ग

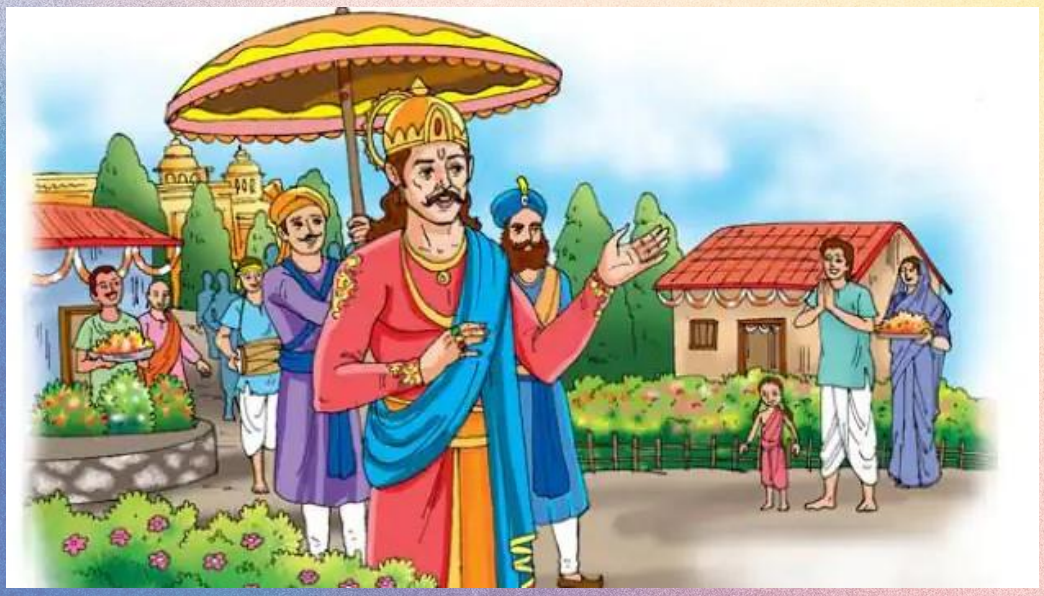

एक राज्य में एक राजा रहते थे. वह बहुत ही दयालु प्रवृत्ति के थे. एक बार ठंड के मौसम में उन्होंने निश्चय किया की इस बार मैं अपने राज्य के प्रत्येक नागरिक को एक-एक रजाई उपहार में दूंगा. इसके लिए उन्होंने अपने राज्य के व्यापारियों से सलाह लेकर, अपने राज्य एवं आसपास के दूसरे राज्यों से रुई मंगवाने की व्यवस्था की. साथ ही, रुई को धून कर रजाई बनाने के लिए धुनिया को बुलाया गया.राजा ने उससे कहा कि इस बार के ठंड में मैं अपनी प्रजा को एक-एक रजाई उपहार देना चाहता हूं. अतः आपको, सबके लिए एक-एक रजाई बनानी है. रुई अपने राज्य एवं दूसरे अन्य राज्यों से मंगवाया गया है.धुनिया एकदम चिंतित हो गया.उसे चिंता इतनी हो गई कि वह बीमार पड़ गया.अब राजा को बहुत चिंता हुई कि अब मेरा कार्य कैसे पूरा होगा. उन्होंने एक से बढ़कर एक वैद्य बुलवाया और उसके इलाज हेतु बहुत प्रयास किया. लेकिन कोई भी उसे ठीक नहीं कर पाया. फिर एक वैद्य को पता चला तो वह आया और धुनिया के कान में कुछ फुसफुसाया,जिसे सुनकर धुनिया एकदम ठीक हो गया. सभी चर्चा करने लगे, कि आखिर उसे वैद्य ने ऐसा उसके कान में क्या कहा कि वह एकदम ठीक हो गया.

राजा उस वैद्य को बुलाएं और पूछे - तुमने, ऐसा उसके कान में क्या कहा कि वह ठीक हो गया ? वैद्य जी बोले - मैं ने उसके कान में कहा, "जो रुई की जहाज रजाई बनाने के लिए आ रहा था वह जहाज समुद्र में डूब गया."

बस वह ठीक हो गया.

राजा को समझ में आ गया कि धुनिया को काम मिलने की खुशी नहीं है. बल्कि,वह कम से जी चुराने वाला है.

राजा ने उस धुनिया को बुलाया और समझाया की पूरे राज्य के लिए रजाई आप अकेले नहीं बनाएंगे.बल्कि,आपकी सहायता के लिए और लोगों की व्यवस्था की जाएगी. फिर वह तैयार हो गया. जब रूई का जहाज पहुंच गया तब राजा ने समझदारी से उस धुनिया को कहा की आप बहुत मेहनती और काबिल है. आप धीरे-धीरे रजाई बनाने का कार्य शुरू कीजिए.आपकी सहायता के लिए हम लोगों की व्यवस्था कर रहे हैं.

इस प्रकार प्रतिदिन राजा उससे यही बात कहते रहे और धुनिया धीरे-धीरे पूरी रजाइया तैयार कर दिया.

राजा बहुत प्रसन्न हुए और कहा की देखो तुमने पूरी रजाइया अकेले ही बना दिया.राजा प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार दिए और उससे कहा कि तुम पहले ही कार्य को कठिन समझ कर चिंता में पड़ गए और बीमार पड़ गए जिससे यह कार्य तुम्हें बहुत कठिन लगने लगा जितना कि वह कठिन नहीं था.

अतः इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि किसी भी बड़े कार्य को कठिन समझकर हम पहले ही हार मान ले तो हम उसे कभी नहीं कर पाएंगे और हम यदि उस कार्य को सकारात्मक सोच और उसे खुशी-खुशी करें तो वह कार्य पूर्ण भी हो जाता है और हमें संतुष्टि भी मिलती है.इसलिए किसी भी कार्य को कठिन नहीं समझना चाहिए.

*****

आओ दीवाली मनाएं

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय अविरल, सरगुजा

तिमिर से भरे उस उर में भी,
प्रणय का इक दीप जलाएं.
मन के हर कोने कोने को,
राग दीप से मिलकर सजाएं.

चहुँ ओर फैला है अंधियारा,
कैसे भरें हृदय में भाई चारा.
बुझी बाती को हम लौ देकर,
आलोक फैलाते है मिलकर.

आज के फेरे में पड़कर हम,
कल अपना क्यों बर्बाद करें.
आने वाली पीढ़ियां को भी,
हम वितृष्णा से आजाद करें.

आओ मिलकर दीप जलाएं,
सुख शांति का परिवेश बनाएं.
आशाओं का हम दीप जलाएं,
आओ मिलकर दीवाली मनाएं.

*****

परीक्षा

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर

परीक्षा का
संधि विच्छेद करें तो
पर इच्छा है अर्थ
अच्छे से नहीं पढ़ा अगर
हो जाता है अनर्थ
अच्छी तैयारी जब हो
तो डर क्यों कर करना
समझ लो
तथ्यों को अगर
तो आसान है पर्चा भरना
यही है सीख आज की
खूब बहुत तुम पढ़ना
कठिन परिश्रम
कर न सको तो
दोष क्यों
दूसरों पर मढ़ना

अव्वल आओगे परीक्षा में
मन में तुम गर ठान लो
कदम नहीं रुकेंगे फिर तो
बात यह तुम मान लो !

*****

आपका बचपन

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर

बचपन कितना सुहाना था
उसका भी एक फसाना था

पिता के कंधे पर कभी-कभी
मां के आंचल में छिप जाना था

मिट्टी के खिलौने से खेलना
सखियों का साथ मस्ताना था

पतंग के पीछे कभी भागना
तितलियों के संग दौड़ना था

परछाई के संग चलना
कभी बारिश में भीगना था

सच कहे है ये सपना
दिन हसीन थे बताना था

*****

हर जन्म शिक्षिका बनना चाहती हूँ

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना, अंबिकापुर

शिक्षक दिवस पर मैं यहाँ
एक बात कहना चाहती हूँ
जब भी धरा पर जन्म लूँ मैं
शिक्षिका बनना चाहती हूँ

वर्तमान की गलियों से
भविष्य के ख्वाब सजाती हूँ
कोरे कागजों पर लिख उदगार
उन्हें सुंदर पुस्तक बनाती हूँ

'अ' अनार से शुरू कर
'ज्ञ' ज्ञानी तक पहुँचाती हूँ
शिक्षिका बनकर यहाँ
ज्ञान का पाठ पढ़ाती हूँ

चंद्रमा तक जाने की
सीढ़ी तैयार करवाती हैं

सपना देखने से लेकर
पूरा होने तक मार्ग दिखाती हूँ

शिक्षा देने से पहले मैं उन्हें
अपने ऊपर आजमाती हूँ
इच्छाएँ त्याग कर अपनी
कभी नहीं जतलाती हूँ

सुंदर-सुर सजाने को
कभी तो साज बनाती हैं
नौसिखिए परिंदें को यहाँ
मैं बाज बनाती हूँ

चुपचाप सुनती हूँ
शिकायतें सबकी देखो
दुनिया बदलने को यहाँ
अरमान सजाती हूँ

*****

शीत ऋतु

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

शीत ऋतु का मौसम है बड़ा ही निराला.
हर तरफ बरफ का चादर ओढ़े.
धरती लगे जैसे चांदी का प्याला.

छाने लगे जब घने कोहरे.
ओझल होने लगे पगडंडी और राहे.
ओस की हर बूंद बने मोती के गहने.

इसकी शीतल संध्या का क्या है कहना.
सर्द और मखमली हवाओं का यूँ बहना.
चांद का अपनी चांदनी बिखेरना.

वो रंग-बिरंगे फूलों से बागियों का महकना.
लगने लगा है मौसम अब बड़ा ही सुहाना.
शीत ऋतु का मौसम है बड़ा ही निराला.

*****

जगमग दीप जलें

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय, सरगुजा

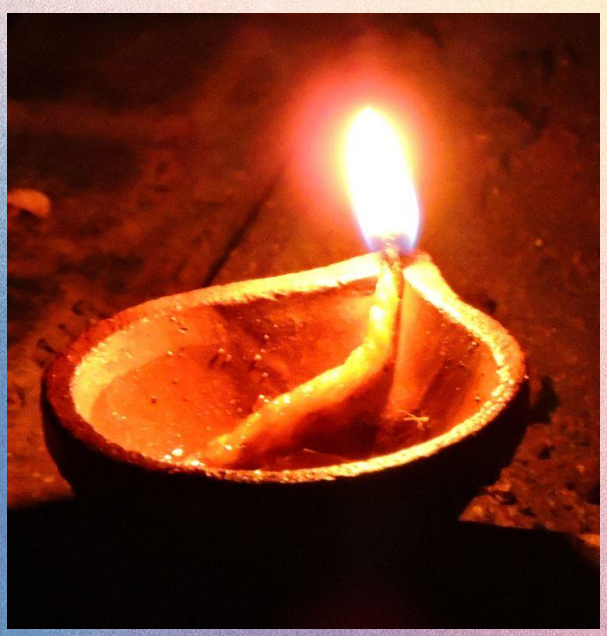

जगमग जगमग दीप जलें,
हृदय से सब तिमिर मिटे.
रागिनी तुम दीपक बनकर,
आओ नव प्रकाश भरकर.

एक दिया उनके नाम पर,
जो देश की रक्षा कर रहें.
एक दिया उस गुरु के लिए,
जो ज्ञान और शिक्षा दे रहें,

मात पिता के चरणों में भी,
जिसने हमकों जन्म दिया.
इस दुनियाँ में लाकर हमपर,
कितना हैं उपकार किया.

एक दिया उस प्रभु के लिए,
जो जीवन को है चला रहा .
दीन दुखी सब पर वह तो,
अपनी कृपा बरसा रहा .
आओ जगमग दीप जलाएं

*****

मेरी माटी मेरा देश

रचनाकार- माला तिवारी, बलरामपुर

मेरे देश को माटी है चंदन,
निश दिन करूं मैं इसका वंदन.
हनुमत,शिव,कृष्ण और रघुनंदन,
इनके चरण पड़े हैं हरदम.
जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक,
इसका कर्ज है मुझपर हर क्षण.
वीरों ने जब दिया बलिदान,
देश बन गया और महान.
धर्म के साथ मिलता विज्ञान,
तभी तो बढ़ता जाता ज्ञान.
धरती में कोयला,सोना खान
इसकी और बढ़ाता शान.
माटी की महक,बरगद की छांव,
ऐसा होता यहां का गांव.

*****

शेर की सत्ता का अंत

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

जंगल में एक मोटा तगड़ा काला कलूटा चूहा रहता था. उसका नाम कालू था वह दिन भर जंगल में आवारा की तरह घुमता था. न कोई काम करता था न कोई धंधा बस उसका काम यही काम था जानवरों से एक दूसरे की बुराई करना और एक दूसरे में झगड़ा लगाना.

एक रोज वह राजा गब्बर शेर के पास पहुंच कर बोला महाराज की जय हो.

कालू चूहा को देख कर राजा गब्बर शेर ने कहा कालू , आओ आज कौन सी खबर लाए हो? "

"महाराज आप को पता है जंगल का गबडू तेंदुआ एक रोज अपने सभी बिरादरी के तेंदुओं को बुलाकर कह रहा था कि जीवन भर से पीढी दर पीढी शेर का राज चलता आ रहा है. हमें मिलकर शेर की गद्दी छीन लेनी चाहिए ताकी हम भी जंगल के राजा बन सके. सभी गबडू तेंदुआ को जंगल का राजा बनाने को तैयार हो गए. हमें पुरा विश्वास है कि एक दो दिन में गबडू तेंदुआ आप पर आक्रमण कर जान से मार कर जंगल का राजा न बन जाएगा इसलिए आप को गबडू तेंदुआ से सजग रहना होगा वनाॅ आप की जान भी जाएगी और जंगल की सत्ता भी. कालू चूहा की बात सुनकर शेर के कान खड़े हो गए और गुस्से से बोला जंगल की सत्ता कोई माई का लाल हमसे नहीं छीन सकता है. मैं गबडू का काम तमाम न कर दिया तो मेरा नाम भी बब्बर शेर नही मैं आज ही अपने बिरादरी के शेरों को बुलाकर यह सूचना दे दूंगा कि गबडू तेंदुआ जहां कहीं भी मिले उसे मौत के घाट उतार देना चाहिए. ताकी फिर कोई जानवर हमारे खिलाफ बगावत न कर सके. कालू चूहा इतना कह कर वापस घर को चल दिया.

इधर गब्बर शेर और गबडू तेंदुआ में लड़ाई शुरू हो गई. दोनों तरफ से शेर और तेंदुआ मारे जाने लगे. कालू चूहा मोटू हाथी से मिल कर बोला जंगल में शेर और तेंदुआ में लड़ाई हो रही है. इस लड़ाई में दोनों

मारे जाएंगे. और हम सब जंगल के जानवर मिलकर आप को जंगल का राजा बना देंगे फिर बिना किसी डर भय के हम सब इस जंगल में अपना जीवन गुजारेंगे. कालू चूहा की बात सुनकर मोटू हाथी बहुत खुश हुआ. और राजा बनने का सपना देखने लगा. इधर जंगल में शेर तेंदुओं की लड़ाई में सारे शेर और तेंदुए मारे गए .फिर कालू चूहे ने जंगल के सभी जानवरों से कह कर मोटू हाथी को जंगल का राजा बना दिया. पुरा जंगल भय मुक्त हो गया और सभी जानवर बिना किसी डर भय के अपना जीवन व्यतीत करने लगे. "

*****

परमवीर विक्रम बत्रा

रचनाकार- नीतिका जेकब, कोरबा

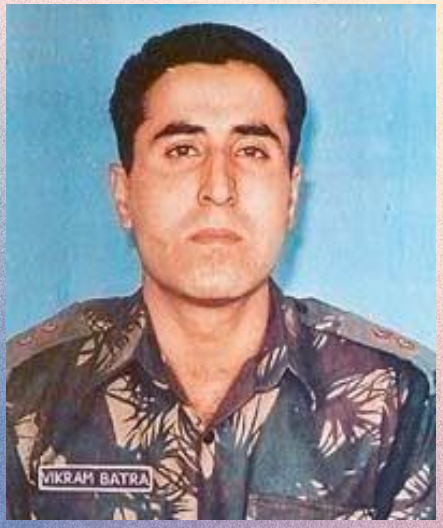

हिमाचल की वादियों में जन्मा एक वीर,
हंसते-हंसते दी शहादत हुआ परमवीर
कहलाया वो शेरों का शाह "शेरशाह".
बचपन से था जुनून जिसमें, फौजी बन आऊं देश के काम,
दुश्मनों के छक्के छुड़ा ,किया उनका काम तमाम.
कांप उठी थी धरती भी, देख तेरा बलिदान
लाल हुई थी वादी भी उस दिन, देख तेरा अंतमान
टूट पड़ा जब दुश्मन पर,सब छोड़ भागे अपनी आन
देश का लाल तिरंगे में लिपट गया
घर वालों का सारा जहां सिमट गया.
मन का मौजी,ऐसा था फौजी,रोक न पाई मौत भी
जब किया विजय उद्घोष
यह दिल मांगे मोर
दुनिया को छोड़ हुआ अमर,दिया देश को अमर अमन
ऐसे वीर को मेरा शत् शत् नमन .

*****

कर्म से मिटेगा भाग्य का लेख

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

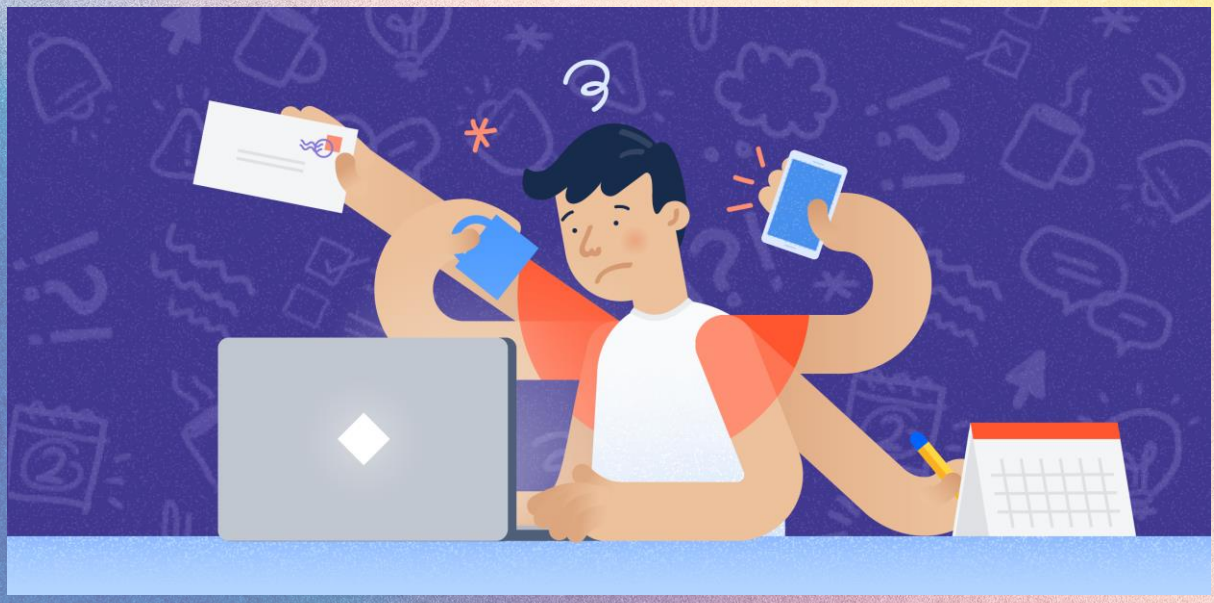

जीने के अब बजूद तलाश करके देख
मिलेगा सब बस तू साहस करके देख
स्वयं को स्वयं में तलाश करके तो देख
उम्मीदों की किरण तलाश करके देख

हर दिन एक नवीन आश ले आता है
वक्त की सार्थकता को हमें बताता है
वक्त से साथ कदम मिला करके देख
जीने के अब बजूद तलाश करके देख

दृढ़ संकल्प से जब -जब आगे जायेंगे
रास्ते के पत्थर खुद ही रास्ते दिखायेंगे
कर्मठता से से जीवन सजा करके देख
जीने के अब बजूद तलाश करके देख

महाभारत जैसे जीवन के कुरुक्षेत्र में
शकुनी और दुर्योधन के छदम वेश में

ऐसे कौरवो से अब लड़ करके तो देख
जीने के अब बजूद तलाश करके देख

नाम तेरा लिखा जायेगा इतिहास में
संयम, साहस भर हर सांस-सांस में
कर्मकर तू मिटेगा भाग्य का भी लेख
उम्मीदों की किरण तलाश करके देख

*****

शिक्षा

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

तकदीर हमे कर्म से लिखने पड़ते है
अच्छे कर्म से बेहतर जीवन गढ़ते है

जीवन मे संस्कार शिक्षा से आती है
शिक्षा जीवन मे परिश्रम से आती है

शिक्षा ही सबसे बड़ी पूंजी होती है
शिक्षा हर ताले की कुंजी होती है

शिक्षा से जीवन में पूर्णता आती है
शिक्षा ही आगे का राह दिखाती है

आओ शिक्षा व शिक्षक को मान दे
समाज में उन्हें सहज ही पहचान दे

शिक्षा से अब जीवन को सजा लेंगे
शिक्षा से अब नव पहचान बना लेंगे

*****

अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

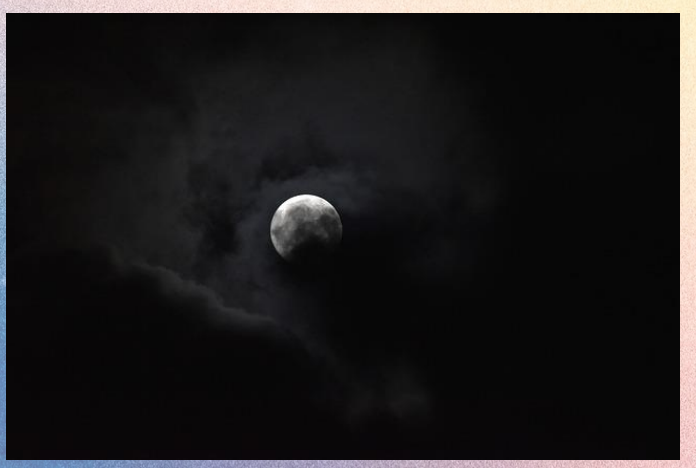

यु प्यार से मिलना और मिलाना चाहिए
कतरा-कतरा मिल के समंदर बन चाहिए
बहुत अंधेरा छा गया है जीवन में दोस्तों
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

कहने को तो अब सब कुछ है जीवन में
पर सुकून का कोई पल नहीं है जहन में
अहसासों में सुकून का ठिकाना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

कब तक चलेगी नियति से लड़ाई हमारी
प्रतिपल बदलती जैसे लगती हो बीमारी
खुशियों का हाल भी बदला होना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

हर कोई मुक़ददर से लड़ नहीं सकता
तकदीर का लिखा बदल नहीं सकता
तकदीर बदले ऐसे तदबीर होना चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

होने को तो सब हो सकती मुक़म्मल
सत्य पर करता नहीं कोई अब अमल
असत्य पर सत्य की जीत होनी चाहिए
अँधेरे पर भारी अब उजाला होना चाहिए

*****

दुखो का आना उसकी इनायत है

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

सुख-दुख दोनों हमारे आसपास है
दोनों ही इस जग मे बहुत खास है
आगे पीछे आना इसकी आदत है
दुखो का आना उसकी इनायत है

आना जाना जब पहले से तय है
हर गम के लिए पहले से सज्य है
सुख-दुख भी उसी की महोब्बत है
दुखो का आना उसकी इनायत है

सुख-दुख दोनों ही करनी फल है
इसे सम रहकर सहना ही हल है
सहने की अब तो बनानी आदत है
दुखो का आना उसकी इनायत है

गम की बदली भी छायेगी कभी
बसंत से बहार भी आयेगी कभी

एकदूजे के पीछे आने की आदत है
दुखो का आना उसकी इनायत है

सुख-दुख मे सम रहकर जीते है
दोनों ही अच्छे है सहकर जीते है
जो आता,उसे जाने की आदत है
दुखो का आना उसकी इनायत है

*****

मोर

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा, रायपुर

देखो - देखो आया मोर
नाच - नाच कर आया मोर
रंग-बिरंगे पंखों वाला मोर
बच्चों को बहलाता मोर
देखो - देखो नाचा मोर
वन - वन नाचे, छम - छम नाचे मोर
चारों ओर मचायें शोर
बरखा का संदेशा लाये ,
सबके मन को हर्षायें मोर
सर पर ताज लगाकर इठलाता
एक डाल से दूसरी डाल पर उड़कर जाता मोर
चटक चमकीला नीले रंगों वाला मोर
भारत का राष्ट्रीय पक्षी कहलाता " मोर "

*****

मेरा परिवार

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं

परिवार से बड़ा कोई धन नहीं,
माता-पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं.

पिता का प्यार,
मां की ममता से बड़ा कुछ नहीं.

भरा पुरा परिवार हो,
आपस में सबका प्यार हो,
ऐसा मेरा परिवार हो.

हमेशा माता-पिता का हाथ सिर पर हो,
परिवार में सबका साथ हो,
ऐसा मेरा परिवार हो.

बड़ों का आदर और सम्मान है,
करना हमेशा तुमको,
ऐसा संस्कार देने वाला मेरा परिवार हो.

*****

मैं नारी हूं

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं

मैं नारी हूं,मैं नारी हूं.
मैं जननी हूं,मैं जीवन भी हूं.

मुझे दुनिया से कोई डर नहीं,
मैं अपने आप पर पूरी हूं.
इसलिए है सब कहते,
लक्ष्मी व सरस्वती का रूप है नारी.

तभी तो हम हैं कहते,
हम हैं झांसी की रानी.

जरूरत पड़ने पर सरस्वती मां का रूप लेकर,
दुनिया को बहुत कुछ सिखा दे.
और अगर जरूरत पड़े तो झांसी की रानी भी,
बन कर दुश्मन के छक्के छुड़ा दे.

कहीं भी बढ़ जाए अगर अत्याचार,

तो काली - दुर्गा का रूप धारण करके,
सभी का मुक्ति दिला दे.

मैं नारी हूं,मैं नारी हूं.
सिर्फ शब्दों में लिखी जाती हूं आसानी से.

इतना सब कुछ अपने भीतर में समेटे,
बस मुस्कुराए जाती हूं.
मैं नारी हूं,मैं नारी हूं.

*****

जनउला

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा

1. हरियर दिखय कच्चा ताजा.
पाके म मीठ, फल के राजा.

2. दु अक्षर के नाँव मोर,दर रांध दार.
उलट पलट नाँव धर, चल नाच दार.

3. एके आँखी म सूत चाखय.
आँखी म नइ देखे सकय..

4. दू ठन गोड़ भिथी म टंगे.
अपन आप म नइ रेंगे..

5. कलम नोहय, पढ़ाय लिखाय.
आँखी नोहय, डगर देखाय..

6. पानी म रहंव, पानी म जीयंव.
पानी म बूड़ंव, पानी नईं पीयंव..

7. मुड़ी हवय पुछी हवय, नइ हे ओखर कान.

पेट हवय हवय आँखी, बिन गोड़ के जान.

8. कतका शब्द कतका भासा मोर मेर.
नइ गोठियांव गोठ कतको बेर.

9. उसन दे, ठंडा पानी बोरले.
खाय आघु फोर ले.

10. गोल दिखय, गेन्द अपन झनि जान.
आय कांच के, दरपन झनि जान.
बिन सुरुज के ओखर ले अंजोर पाहू.
बारहू फेर नांव ल सफा बताहू.

1. आम
2. चना
3. सुई
4. पैंट
5. चश्मा
6. मेचका (मेंढक)
7. सांप
8. किताब
9. अण्डा
10. बिजली बल्ब

*****

दीपावली

रचनाकार- प्रतिभा सुधीर त्रिपाठी, बालोद

दीपावली का त्यौहार पंचदिवस का आता है
हर घर में खुशहाली लाता,
जगमग चमके घर और द्वार
धन-धान्य संपदा लाता है
दीपावली का त्यौहार हर वर्ष है आता.

घर आंगन की करके सफाई
रंगोली है ,आज सजाई,
राम अयोध्या लौट के आये
दीपों की पंक्ति है,सजाई
पुण्य सदा जीता है जग में
ये हैं इस त्यौहार की सच्चाई
दीपावली त्यौहार हैं लाई.

आओ मिलकर दीप जलाये
दीपों की पंक्ति को सजायें,
फूल माला धूप दीप से

अपना घर आंगन सजाये
घृणा द्वेष को दूर भगाओं
आओ मिलकर दीपावली मनाओं.

दीपावली की रात है, आयी
अंधियारा से प्रकाश है, लायी
दीपावली खुशियॉ है, लायी
हर चेहरे पर मुस्कान है लायी
दीपावली त्यौहार है लायी.

*****

अनमोल उपहार

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

मेरे स्कूल के बच्चों को पता ही नहीं था कि आज मेरा जन्मदिन है पता नहीं ऐसे ही अचानक कक्षा पांचवी के छात्र प्रवीण यादव ने पूछा कि सर जी आपका जन्मदिन कब है? मैंने सोचा बच्चों को किसी ने बता दिया है कि आज मेरा जन्मदिन है. मैनें कहा आज ही मेरा जन्मदिन है. फिर सभी बच्चे आपस में खुसूर - फुसूर करने लगे. फिर कुछ देर बाद बच्चों ने कहा सर जी सही- सही बताईये ना. फिर मैंने कहा सच में आज मेरा जन्मदिन है और उनको अपने मोबाईल वाट्सऐप में शिक्षक साथियों द्वारा दी गई बधाई को उनको बताया. फिर सभी बच्चे खुश हो गये.

सही मायने में जन्मदिन की बधाई और उपहार क्या होता है आज मुझे मेरे बच्चों से सीखने को मिला जिसको मैं आप लोगों से शेयर करना चाहता हूं.

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि बच्चों ने मेरे जन्मदिन के लिए पहले से सोच कर रखा था. प्रवीण यादव और लक्ष्य यादव जिसने मेरे जन्मदिन के लिए बहुत दिन पहले से ही उपहार खरीद कर रखा था. जैसे ही सभी बच्चों को क्लीयर हुआ कि मेरा जन्मदिन आज ही है सबने एक स्वर में HAPPY BIRTHDAY TO YOU SIR JI कहकर मुझे बधाई दिया. फिर क्या था सबने मुझे उपहार में कुछ ना कुछ दिया.

प्रवीण,लक्ष्य,दीपक और देवधर इनका उपहार सबसे अलग था जिसे मैं आपके समक्ष बताने जा रहा हूँ. प्रवीण यादव जिसे पता चला कि आज मेरा जन्मदिन है वह बहुत खुश हो गया और तुरंत एक पेन लाकर मुझे गिफ्ट करने लगा. मैंने पूछा तुरंत कहाँ से खरीद लिए तब उसने बताया कि सब का जन्मदिन आता है फिर हमारे गुरूजी का भी कभी ना कभी जन्मदिन जरूर आयेगा. ऐसा सोचकर मैनें बहुत पहले से आपके जन्मदिन गिफ्ट के लिए एक पेन खरीद कर रखा था. उसे रोज अपने साथ स्कूल ला रहा था सर जी. मुझे सुनकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ.

इसी कड़ी में लक्ष्य यादव ने मुझे हैप्पी बर्थडि सर जी कहकर एक लाल पेन गिफ्ट किया.उसका कहना है कि सर जी आप रोज हमारा गृहकार्य जांचते हो आज से आप इसी लाल पेन से हमारा गृहकार्य जांचना मुझे बहुत अच्छा लगेगा.

दीपक और देवधर का मेरे लिए बर्थडि उपहार मेरे जन्मदिन का सबसे अनमोल उपहार था. उनके पास मुझे देने के लिए कुछ भी नहीं था. दोनों आपस में कुछ बात किये और मुझसे पानी पीने के लिए छुट्टी मांग कर स्कूल अहाता के पास छीता के पेंड से दो कच्चा छीता मुझे गिफ्ट किये.मैनें फोटो लेने के लिए दोनों को अपने पास बुलाया. संकोचवश देवधर ने मेरे साथ फोटो नहीं लिया. अपने स्थान पर उसने लक्ष्य को फोटो के लिए भेज दिया. मैं उन दोनों की प्रेम से दी गई सच्ची उपहार को पाकर बहुत आनंदित हुआ. मैं इन दोनों के प्रेम को कभी भूल नहीं पाऊंगा.

*****

नन्हें मुन्हें बच्चे

रचनाकार- श्रीमती स्वाति सोनवानी, अम्बागढ़ चौकी

नन्हें मुन्हें बच्चे हमारे,
कितने अच्छे कितने न्यारे.
गीत कविता इनको भाते,
इन्हें सुनने यह खूब सताते.
बच्चे होते मन के सच्चे,
जैसे मिट्टी के हो मूरत कच्चे.
खूब चटपटे इनके सवाल,
इन्हीं में छुपे भविष्य मिशाल.
बातें उनकी बड़ी मनमोहक,
इनसे ही है जग की रौनक़.

*****

माँ

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा

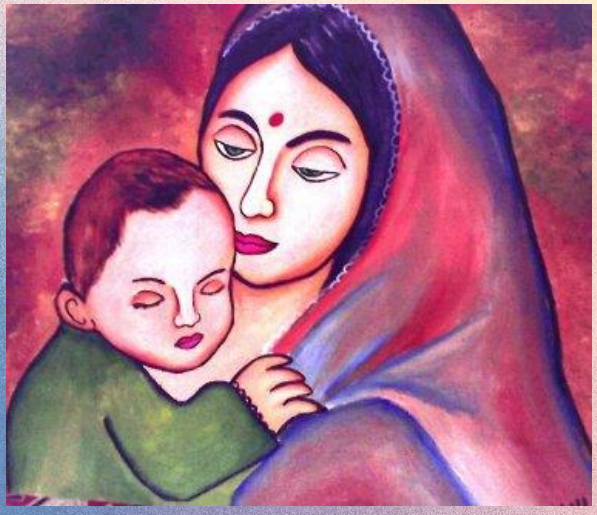

माँ ममता का अथाह सागर है, सब में श्रेष्ठ माँ है, शब्द कोष में मात्र माँ का शब्दार्थ मिले पर माँ का भावार्थ तो हृदय कोष में ही मिले, माँ तो ईश्वर की प्रतिनिधि है, माँ अर्थात प्रेम की यूनिवर्सिटी है, माँ का एक ही अर्थ होता है वो है माँ का चेहरा, भगवान से प्रार्थना करते छोटे बच्चें को पूछे की भगवान का चेहरा कैसा है तो उसका वर्णन उसकी माता जैसे होगा, माँ दुनिया की सबसे आसान और अनमोल शब्द है, बच्चों की उन्नति और प्रगति में माँ ही सबसे ज्यादा ख़ुश होती है और बच्चों के गलत रास्ते पर जाने से माँ ही सबसे ज्यादा दुःखी होती है, माँ बच्चों की प्रथम शिक्षक होती है जिन्हे अपने बच्चों की भलाई और बुराई का भली भांति ज्ञान रहता है, माँ तो वो सागर है जिनकी ममता कभी खत्म नहीं होती, माँ बूढ़ी भी हो जाए तो भी अपने बच्चों के लिए ममता कम नहीं होती, बड़ी अरमानो से माँ अपनी बच्चों को पालती है, माँ को दुःख देना मतलब भगवान को दुःख देना है, इसलिए माँ का सम्मान करे कोई भी ऐसा काम न करे जिससे माँ का दिल दुखे उन्हें रोना पड़े क्योंकि सबके नसीब में माँ नहीं होती, माँ तो बड़ी किस्मत से मिलती है.

"अगर हम शब्द है तो वो पूरी भाषा है
माँ की बस यही परिभाषा है"

*****

बचपन के मजा

रचनाकार- श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत, बेमेतरा

धुर्रा माटी मां खेलन
खो खो कबड्डी और सागा पहुना
ओ दीन के मजा बड़ आवे

कैसे वनवा न माटी के घरौंडा
सगी मां सॉन्ग स्कूल जावन
सगी मां सॉन्ग खाऊ खावन
ओ दीन के मजा बड़ आवे
कैसे संगी मनल ल टू हू दिखा वन
स्कूल से पहली खेत जावन
नागर बैल म खेत जोतवय
ओ दीन के मजा बड़ आवे
कैसे ददा दाई बर बासी पहुचवन
डोकरा बबा ह कहानी सुना व य
डोकरी दाई है कहानी सुना व य
ओ दीन के मजा बड़ आवे
कैसे दा ई ह गो ड म झूलना झुलावे
कैंची फास्ट में साइकिल चलावन

बाटी भंवरा और लुका छुपी खेलन
ओ दीन के मजा बड़ आवे
कैसे सड़क में चक्का चलावन
आम के बगीचा मां आमा चोरावन
खेत खार म बें न्दा कू द।वन
ओ दीन के मजा बड़ आवे
कैसे ला ट। बन।के इमली लखावन

*****

दीपों का पर्व दिवाली

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

जड़ चेतन में हैं अब रौनक,
और सर्वत्र गज़ब खुशहाली.

कार्तिक मास के अमावस को,
दीपों का है पर्व दिवाली.

गलियों के हैं वारे न्यारे,
पुते हुए हैं चहुँओर दीवारें.

लीपे हुए सब दरवाजे हैं,
चौखट को सुंदर साजे हैं.

छत पर है झालर की लड़ियाँ.
जगमग हो रही पूरी गालियां.

दरवाजों पर बनी रंगोली.
जोश भरी बच्चों की टोली.

जो फोड़ रहे हैं सतत फटाके.
नये वसन में सब सुंदर लागे.

निशा आज की बड़ी निराली.
दीपों का है,पर्व दिवाली.

*****

मित्रता

रचनाकार- बसंती स्वर्णकार, दुर्ग

एक नितिन नाम का लड़का था. वह बहुत शरारती था. सारा दिन वह अपनी हरकतों से सबकी नाक में दम किए रहता था. मम्मी पापा ही नहीं ,मोहल्ले के सभी लोग उससे परेशान रहते थे. कभी किसी की किताब फाड़ना, किसी को धक्का दे देना, किसी की खिड़की के शीशे तोड़ देना, गमले तोड़ देना ,पौधे उखाड़ देना उसकी रोज की आदत बन गई थी.

एक बार मोहल्ले में पौधा रोपण का कार्यक्रम संपन्न हुआ. शहर के अनेक बड़े-बड़े प्रतिष्ठत -जनों ने सड़क के दोनों ओर अनेक फलदाई पौधे लगाए. पौधों की देखरेख के लिए प्रशासन की ओर से रामू काका को माली नियुक्त किया गया. रामू काका पूरा दिन पौधों की देखरेख करते थे.

कुछ दिन तो पौधे सही सलामत रहे लेकिन थोड़े दिनों बाद न जाने क्या हुआ जब रामू काका सुबह आते तो देखते दो-चार पौधे उखड़े हुए हैं वह परेशान हो गए उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि रात को पौधे कौन उखाड़ देता है . उन्होंने मोहल्ले वाले से पूछताछ की तो भी कुछ पता नहीं चला. तंग आकर एक दिन रामू काका ने रात को पहरा देने की ठान ली.पौधों से उन्हें बड़ा प्रेम था वह उन्हें अपना मित्र मानते थे पौधों को उजड़ता देख वे दुखी हो जाते थे ,वह सदैव उन्हें बचाने के लिए तैयार रहते थे उस दिन रात्रि के 10:00 बजे थे. मोहल्ले में बिजली नहीं थी. अचानक रामू काका को दूसरी छोर पर एक आकृति दिखाई दी उन्होंने पास जाकर देखा .नितिन को पौधे उखाड़ते देख वे सन्न रह गए. रामू काका ने उसे पकड़ लिया और उसे पीटने के बजाय समझाने लगे. नितिन ने उस समय अपनी गलती मानकर रामू काका से जैसे - तैसे पीछा छुड़ा लिया.

इस घटना के बाद नितिन ने कई दिनों तक पौधे नहीं उखाड़े. किंतु वह अपनी आदत से कहां बाज आने वाला था. मौका देखकर फिर वह पेड़ उखाड़कर फेंकने लगा.

एक दिन की बात है बरसात का मौसम था नितिन अपने दोस्त राहुल को जन्मदिन की बधाई देने उसके घर आया हुआ था. जिस मोहल्ले में राहुल रहता था, वहां फलों के अनेक बड़े-बड़े पेड़ लगे थे उनमें अनेक स्वादिष्ट फल लगे हुए थे उन्हें देखकर देखते ही नितिन के मुंह में पानी आ गया. वह बारी बारी

से पेड़ों पर चढ़ा और फल तोड़कर खाने लगा. फल खाकर जब वह पेड़ से नीचे उतरा तो रामू काका को वहां देखकर चौंक पड़ा. रामू काका हाथ में खुरपी लिए उन पेड़ों के नीचे निंदाई कर रहे थे. अब नितिन से रहा नहीं गया, उसने राहुल से पूछा - "रामू काका क्या यहां भी काम करते हैं?"

राहुल ने कहा "हां , ये सभी बड़े-बड़े पेड़ रामू काका ने ही लगाए थे."

राहुल ने नितिन से कहा "लेकिन तुम तो अपने मोहल्ले के पेड़ उखाड़ कर फेंक देते हो, यदि नहीं उखाड़ोगे तो तुम भी अपने पेड़ के फल खा सकते हो.".रामू काका नितिन के पास आकर बोले. नितिन के पास अब कोई उत्तर नहीं था.अपनी गलती का अहसास होते ही उसकी नज़रें झुक गईं.वह सोचने लगा, कि सचमुच मुझसे बहुत बड़ी गलती हुई है.

घर लौटते हुए नितिन ने मन ही मन निर्णय कर लिया कि वह अब पेड़ पौधों से मित्रता करेगा. अपने मोहल्ले में स्वयं पौधे लगाएगा और रामू काका की मदद करेगा अब उसके चेहरे पर एक अलग तरह की प्रसन्नता दिखाई देने लगी.

*****

शत प्रतिशत मतदान हो - उल्लाला छंद

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

बड़ी बड़ी बातें करें, हर दिन अरु रातें करें.
कह विकास की आड़ में, सेवक लगे जुगाड़ में.
कथनी करनी की कला, जनमानस पर है बला.
नीयत में यूँ खोट हैं, लोकतंत्र पर चोट हैं.-1

जनसेवा बस नाम की, दो कौड़ी के काम की.
बहुत दबाते माल हैं, लोकतंत्र के काल हैं.
जब जब मुँह ये खोलते, केवल विष ही घोलते.
जाति धर्म में बाँटते, अपनी हित को साधते.-2

पद पैसों का खेल ये, बिन सरसों के तेल ये.
हेरफेर करते रहें, जन चाहे मरते रहें.
कुर्सी की चाहत प्रबल, सत्ता ही दिखती सबल.
पाँव धरा पर टिकते नहीं, पाँच साल फिर दिखते नहीं.-3

जनता है अवसाद में, नेता निज हितवाद में.
कब तक ऐसा ही चले, जन धन क्यों इतना छले.
मतदाता जागृत रहें, कब तक शोषण सब सहें.
इसका यही निदान है, शत प्रतिशत मतदान है.-4

*****

आगे देवारी तिहार

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

पांच दिन के ये तियार
दिया जलाबो घर घर अउ दुवार दुवार,
दिया जला के मिटाबो अंधियार
आगे देवारी तिहार.

नवा नवा कुरता पहिनबो,
अउ लेबो बताशा मिठाई के हार,
ताश जूआ से दूर रबो,
नहीं तो पुलिस के खाएं ल पड़ ही मार,
आगे देवारी तिहार.

लक्ष्मी दाई के पूजा कर बो,
अउ मांग बो आशीर्वाद,
झूठ के रददा ल छोड़,
सच के दिया जलाबो ये बार,
आगे देवारी तिहार.

एक दिन सबो झन ल हे जाना,
झन रख ककरो से ईरसा द्वेष,
बाती बुता जाही त हो जाहि अंधियार,
देवत हे संदेश दीया हा बार-बार,
आगे देवारी तिहार.

*****

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

पैरों में लगे काटे को निकालने के लिए
दर्द सहना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

घोड़े को रेस जीतने के लिए
चाबुक का मार खाना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

पंछी को ऊंची उड़ान भरने के लिए
संघर्ष करना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

नदी को समुद्र से मिलने के लिए
पहाड़ों से टकराना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

सफलता प्राप्त करने के लिए
नींद चैन त्यागना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

कमल को खिलने के लिए

कीचड़ में रहना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

सोने को निखरने के लिए
अग्नि में तपना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

*****

दीपों का त्यौहार : दीपावली

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

दीपों का त्यौहार, जीवन का सिंगार, आयी दिवाली.
गाँवों, नगरों के घरों में, चारों तरफ छाई है खुशहाली.

अत्याचारी रावण को मार कर, लौटे जब राजा राम.
अयोध्या वासी प्रसन्न हुए, देख कर परम सुख धाम.

बुराई पर अच्छाई और अँधकार पर प्रकाश की जय.
अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय.

घी के दीपक जल उठे, बजने लगे ढोल और नगाड़े.
गूँजे जय श्री राम के नारे, फूटने लगे धड़ाधड़ पटाखे.

आसमान में लहराने लगे, ज्ञान, सेवा का भगवा ध्वज.
भरत दौड़ रहे थे खुले पाँव, राजीव से मिलने को उद्यत.

माताएँ आँचल फैला रही, सिर में छाया करने उत्सुक.
प्रजा आँखों में खुशी आँसू, ईश्वर को देख हुए भावुक.

सजादो पूरे भारत को, दशरथनंदन रामराज ला रहे हैं.
झूमो रे! नाचो रे! गाओ रे! मेरे प्रभु श्रीराम आ रहे हैं.

*****

बाल दिवस

रचनाकार- श्री कौशल प्रसाद डाहिरे, बिलासपुर

बाल दिवस त्योहार हमारा हम बच्चो के नाम से
हम बच्चे हिंदुस्तान के,हम बच्चे हिंदुस्तान से.

आज तो सारा दिन है अपना
उछल कूद और मस्ती का
कोई रोके न कोई टोके
गांव, शहर और बस्ती का

आओ बच्चों आज के दिन जीना है स्वाभिमान से
हम बच्चे हिंदुस्तान के हम बच्चे हिंदुस्तान से.

कोई कभी न मन में सोचे
बच्चा ये तो बेचारा है,
हमसे जो टकराया समझो
उसका वारा_न्यारा है

धूम मचाएंगे दुनिया में धरती और आसमान से
हम बच्चे हिंदुस्तान के हम बच्चे हिंदुस्तान से.

देश के लिए नेहरू जी ने
बड़े अनेकों काम किए
अपने जन्म दिवस को चाचा
हम बच्चो के नाम किए

याद करते हैं हम उनको आज बड़े सम्मान से
हम बच्चे हिंदुस्तान के हम बच्चे हिंदुस्तान से

*****

भाई दूज पर्व की कविता

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

भाई बहन का अटूट रिश्ता,
भाई बहन का पवित्र रिश्ता,
आपस में भाई बहन को,
भावना रूपी डोर में बांधे रखता है.
आदि काल से चली आई रीत सदा,
आल्हा -उदल, कृष्ण -सुभद्रा,
की बातें द्रवित कर जाती हैं मन को,
भाई -बहन से बढ़कर नहीं कोई दूजा रिश्ता,
जो विश्वास रूपी पवित्र भाव की गंगा बहाता है.
चाहे राखी का वह पावन पर्व हो,
या फिर भैया दूज का पर्व.
बहनें अपनी सारी वेदना भूलाकर,
भैया के कांधे का सहारा बनती है.
भाई -बहन के इस अनोखे, सुन्दर,
पवित्र रिश्ते का मान रखना सदा.
भाई -बहन की कमी क्या होती है,
ये बात उनसे बेहतर कोई नहीं जानता है.
जिनके सर पर सगे भाई -बहन के पावन कर नहीं हैं.

*****

दिवाली का त्यौहार

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा- आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराकापा, लोरमी जिला-मुंगेली

श्रीराम भगवान चौदह वर्ष के वनवास से आये,
इसी खुशी में वहाँ के लोग लाखों दीपक जलाये.
दिवाली की शुरुआत, दीपक और फटाके के साथ.
चारों ओर दीपमालाएँ अपने झिलमिल प्रकार से,
हृदय को उल्लासित करती है,
बिजली के रंग-बिरंगे बल्बों की छटा भी,
घर का शोभा बढ़ाती है.
फटाके और फूलझड़ी के बौछार,
इसी को कहते हैं दिवाली का त्यौहार.

*****

दीपों का पर्व

रचनाकार- अंकित बघेल, कक्षा- छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराकापा न, लोरमी जिला-मुंगेली

दिवाली को कहते हैं दीपों का पर्व
लाखों लोग जलाते हैं दीपक
बच्चे लोग फोड़ते हैं पटाके
धनतेरस से हो रही है दिवाली की शुरुआत
पटाखे और फुलझड़ी की हो रही है बरसात
अपनी पाठशाला में दीपक जलायेंगे
दिवाली का त्यौहार धूमधाम से मनायेंगे
अपने आँगन में रंगोली बनायेंगे
दीपक और बिजली बल्ब से घर-द्वार को सजायेंगे

*****

मेरा छोटा सा परिवार

रचनाकार- चांदनी यादव, कक्षा चौथी शासकीय प्राथमिक शाला निपानिया संकुल केंद्र कन्या बिल्हा, बिलासपुर

मेरा नाम चांदनी यादव है. मैं कक्षा चौथी में शासकीय प्राथमिक शाला निपानिया में पढ़ती हूं. मेरा परिवार एक छोटा सा परिवार है. मेरे परिवार में चार सदस्य है, मम्मी - पापा , मेरे भाई और मैं रहते हैं . मेरा पापा एक ट्रक ड्राइवर है. मेरे पापा मेरे परिवार के मुखिया है. मेरी मम्मी गृहणी है जो हमारे देखरेख करती है. मैं और मेरे भाई गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते हैं हम दोनों भाई-बहन को मम्मी - पापा सुबह - शाम पढ़ते हैं और खेलाते हैं. हम दोनों भाई-बहन को बहुत पढ़ना अच्छा लगता है . मुझे मेरे परिवार बहुत प्यारा लगता है.

*****

मेरा बगीचा

रचनाकार- समर यादव , कक्षा चौथी शासकीय प्राथमिक शाला निपानिया संकुल केंद्र कन्या बिल्हा, बिलासपुर

मेरा बगीचा बहुत ही सुंदर है . बगीचा हमारे घर के बिल्कुल बाहर है. उसमें कई तरह के रंग-बिरंगे फूल और मज़ेदार फल है. हमारे बगीचे में कई तरह की सब्जियां भी लगी हुई है. हमारा बगीचा हरा-भरा और साफ सुथरा. उसमें हर तरह के पौधे हैं . मेरे बगीचे में खेलने के लिए झूले भी है. मैं अपने दादा के साथ रोज बगीचे के पौधों को पानी देता हूं. मैं अपने बगीचे में रोज सैर करने जाता हूं. मुझे मेरा बगीचा बहुत पसंद हैं.

*****

चलो मतदान करें

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर", महासमुंद

चलो मतदान करें, चलो मतदान करें.
लोकतंत्र का महापर्व,इसका सम्मान करें.

कोई मतदाता छूटे ना,इस बात का ध्यान करें.
हर कोई जाए पोलिंग बूथ, इसका ज्ञान करें.
देश की तकदीर बदलें,इस बात का अभिमान करें.
चलो मतदान करें,चलो मतदान करें.

लोकतंत्र जनता का जनता के लिए,जनता द्वारा शासी हो.
प्रतिनिधि ऐसा चुने जो बेदाग छवि के साथ अनुशासी हो.
गर्व से सर ऊंचा हो हमारा,इसका ही गुणगान करें.
चलो मतदान करें, चलो मतदान करें.

आने वाले 17 नवंबर शुक्रवार को सबको याद दिलाना है.
काम धंधे सभी छोड़कर हमको पोलिंग बूथ पर जाना है.
कोई भी एक परिचय पत्र साथ रखें इस बात का ध्यान करें.
चलो मतदान करें, चलो मतदान करें.

*****

दीपावली क्यों मनाते हैं?

रचनाकार- रामभरोस यादव, जमकोर मुंगेली

जब श्रीराम चौदह वर्ष वनवास काट के आते हैं.
अत्याचारी रावण को इस धरती से मिटाते हैं.

अयोध्या को दीपों से नहीं, मणी से सजाते हैं.
तब से हम आज तक दीपावली मनाते हैं.

इसलिए देवता धरती पर आ जाते हैं.
पूरे विश्व में फिर रामराज स्थापित हो जाते हैं.

अश्वमेघ यज्ञ का फिर घोड़ा छुड़वाते हैं.
अच्छाई, ज्ञान, और आशा का दीपक जलाते हैं.

अयोध्या नगरी को फिर दीपों से सजाते हैं.
प्रभु श्री रामचंद्र जी को फिर अपने घर में बुलाते हैं.

जिनके आने से दीपावली आ जाती है.
जिनके जाने से मायूसी छा जाती है.

उस प्रभु श्री रामचंद्र जी को अपने हृदय में बसाओ.
एक दीया उस प्रभु श्री रामचंद्र जी के लिए जलाओ.

*****

दीपावली

रचनाकार- कु.भावना नवरंग, कक्षा- आठवीं, शास.पूर्व माध्य.शाला बिजराकापा न, जिला मुंगेली

दीपावली दीया जलाने का दिन
अयोध्या लौटे थे राजा राम
कार्तिक मास के काली रात अमावस्या में दीये चमक उठे
प्रिय राम के लिए सजाए दीये से अयोध्या को
पाँच दिन तक मनाते ये दीपावली को
धन लाते, लक्ष्मी पूजा करते, पाँच दिन विशेष कहलाते
इस त्यौहार के कितने सारे नाम है, जो चाहे बोलो
सब अपने घर में शुभ -लाभ के लिए पूजा करते
आँगन में रंगोली बनाते, माँ लक्ष्मी का पैर बनाते
पटाखे फोड़ते, सब खुशी से मनाते दीपावली

*****

दीवाली मनायेंगे

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा आठवीं, शास.पूर्व माध्य.शाला बिजराकापा न, जिला मुंगेली

फूलझड़ी जलायेंगे. दीवाली मनायेंगे.
दीपक है खुश, फटाका बोला मैं फटूंगा.

दीपावली का नाम रोशन करूँगा.
दीपावली में कपड़े खरीदने जायेंगे.

फूलझड़ी जलायेंगे. दीवाली मनायेंगे.
रंग-बिरंगी लाइटों की माला से सजाने का त्यौहार है.

रंगोली बनाकर आँगन में, दीप जलाने का त्यौहार है.
भाई फोड़ रहा फटाका, बहन जला रही फूलझड़ी है.

गाँव-गाँव में यही संदेश दे रहे हैं.
रावण का दहन करके, राम भक्त बन जायेंगे.

फूलझड़ी जलायेंगे. दीवाली मनायेंगे.

*****

ईमानदारी का फल

रचनाकार- श्रीमती शाहनाज़ खान, दुर्ग

रामू एक गरीब अनाथ लड़का था. वह रोज़ी मजदूरी कर किसी तरह अपना जीवन यापन करता था. कभी -कभी कई दिनों तक दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती थी. फिर भी किसी से कुछ नहीं मांगता था. वह बहुत मेहनती और ईमानदार था. ज्यौं ज्यौं उम्र बढ़ती गई उसके दोस्त यार उसे शादी कर लेने की सलाह देने लगे पर रामू यह सोचकर चुप रह जाता कि मुझ जैसे गरीब बेसहारा लड़के से कौन शादी करेगा, जिसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती. इसी कारण वह अपने दोस्तों को कुछ जवाब नहीं देता था.

एक दिन गाँव के जमींदार के यहाँ शहर से कुछ रिश्तेदार आये. उनकी हीरे की अंगूठी कहीं गुम हो गई. बहुत तलाश करने के बाद भी अंगूठी का कुछ पता नहीं चला. सारे लोग हो हल्ला मचा रहे थे. गाँव में कोहराम मच गया. नौकर चाकर अंगूठी की तलाश में इधर-उधर भाग दौड़ करने लगे पर सारी कोशिश नाकामयाब रहीं.

रामू जमींदार के यहाँ काम करता था. पहले की भाँति वह आज भी उनके खेत में काम करने गया था. उसे अंगूठी गुम होने की खबर नहीं थी. काम खत्म करके जब वह घर लौट रहा था तो उसे रास्ते में एक चमकती हुई वस्तु दिखाई दी. रामू ने उसे उठा लिया देखा तो देखता ही रह गया क्योंकि कभी उसने हीरा देखना तो दूर , उसका नाम भी नहीं सुना था. अंगूठी अपने पास रखकर घर की राह ली. गाँव पहुंचा तो वहां का माहौल देखकर आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि गाँव सूनसान था. एक दो लोगों से पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि जमींदार के रिश्तेदार की हीरे की अंगूठी कहीं गुम हो गई है. इतना सुनते ही रामू जमींदार के यहाँ अंगूठी लेकर पहुंच गया. जमींदार के रिश्तेदार सहित गाँव के सभी लोग फूले नहीं समा रहे थे. क्योंकि एक गरीब रामू ने न सिर्फ अंगूठी ही वापस नहीं की थी बल्कि ईमानदारी का परिचय भी दिया था और सारे गाँव को बदनाम होने से बचा लिया था. जमींदार और उनके रिश्तेदार रामू को मुंह मांगा इनाम देना चाहते थे. परन्तु रामू ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया और बार बार यही कहने लगा कि यह तो मेरा फर्ज था. मैंने अपना फर्ज अदा किया है. फ़र्ज़ में इंसान की कोई चाहत नहीं

होती . अन्त में रामू कुछ लिए बिना ही घर चला गया. रामू की ईमानदारी देख जमींदार उसके बारे में न जाने क्या-क्या सोचने लगे. उन्होंने अपनी लड़की की शादी रामू से करने का फैसला कर लिया क्योंकि उसे पहली बार आभास हुआ कि रामू जितना ही गरीब है उतना ही ईमानदार भी है और अन्त में रामू को बुलाकर अपनी लड़की की शादी उससे कर दी. रामू खुशी से झूम उठा. अतः ईमानदारी का फल हमें सदैव ही मिलता है. इसलिए परिस्थितियां चाहे जैसी भी हो, हमें सदैव ईमानदार रहना चाहिए.

*****

मतदान

रचनाकार- Astha Pandey, Class - 6, SWAMI ATMANAND SHEIKH GAFFAR GOVERNMENT ENGLISH MEDIUM SCHOOL TARBAHAR

मतदान करें मतदान करें
नये भारत का निर्माण करें
राष्ट्रहित में दृढ़ संकल्पित
सत्ता का चुनाव करें
देश के विकास मे अपना भी योगदान करें
मतदान करें मतदान करें
सड़क बिजली और पानी की आवश्यकतायें हमारी पूरी हो
रोजगार के नये अबसर खुलें
शिक्षा हमारी ऐसी हो विद्यालय और
महाविद्यालय से देश का भविष्य निर्माण हो
योग्य और कुशल बने हम
नये भारत के निमार्ण मैं हम
अपना भी योगदान करें
मतदान करें मतदान करें.

*****

बाल-दिवस

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", धमतरी

बाल दिवस की पूर्व संध्या पर प्रधानपाठक ने ये सूचना प्रेषित किया कि सारे बच्चे सभा हाल में उपस्थित हो जाएं.

अचानक घण्टी बजती है और कुछ ही पल में सभी बच्चे सभा हाल में इकट्ठा हो जाते हैं.

सभा हाल में खूब शोरगुल होती है, तभी अचानक अपने स्टॉफ के साथ प्रधानपाठक का पदार्पण होता है. प्रधानपाठक को देखकर बच्चों को मानो पाला मार जाता हैं, सभी शांत हो जाते हैं.और बच्चे सावधान की मुद्रा में खड़े होकर अपने प्रधानपाठक को शिष्टाचार करते हैं.

तभी प्रधानपाठक ने अपने हाथों में इशारा करते हुए बैठने का निर्देश देते हैं.सभी यथास्थान में बैठ जाते हैं.

जैसे ही वातावरण में नीरवता आती है तभी प्रधानपाठ जी खड़े होते हैं और कुछ जरूरी सूचना प्रसारित करते हैं

ओ कहने लगे-

दिनाक 14 नवम्बर को बाल-दिवस" के शुभ अवसर पर स्कूल में "बाल-दिवस" का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया जाएगा,जिसमे चाचा नेहरू जी के जीवन चरित्र,और प्रेरक प्रसंगों को मंचन किया जाएगा.

यदि कोई बालक-बालिका इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं,ओ अपना नाम लिखा सकते हैं."

तभी अचानक जोरों की कोलाहल शुरू हो जाती है.बच्चे उत्साहित हो जाते हैं.और चिल्लाने लगते हैं-

सर जी मेरा नाम

सर मेरा नाम

कोई कहता है-

मैं भी नाटक में भाग लेना चाहता हूँ.

सर मेरा नाम लिख दीजिए.

सोनू...मोनू....रानू....सानू...!!इस तरह

से बच्चों ने नाम गिनाना शुरू कर दिया.

तभी प्रधानपाठक ने टेबल पर थपौडी पीटते हुए शांति बनाए रखने का हिदायत देते हैं.फिर सभा हाल में शांति छा जाती है.

ठीक ऐसे समय पर प्रधानपाठक की नजर सबसे पीछे बैठे मोहन पर पड़ती है.मोहन चुपचाप सिर झुकाए बैठा हुआ है,किसी से बात नही कर रहा है,और नही वह "बाल- दिवस" के कार्यक्रम से उत्साहित है.जबकि वह बालक बहुत होनहार था,इस तरह के कार्यक्रम में चढ़-बढ़ कर हिस्सा लेता था.पर इस बार वह बहुत उदास है.

उसकी इस उदासीनता को समझते हुए

मास्टर जी ने पूछा-

क्यो ?क्या हुआ मोहन???

तुम इतने उदास क्यो बैठे हो??

और तुम "बाल-दिवस" के कार्यक्रम में भाग क्यो नही ले रहे??

तभी वह मोहन अपने आप को सम्हाले हुए कहता है-

मास्टर जी हम नेहरू जी के जन्म दिवस को बाल-दिवस" के रूप में मनाते हैं,पर उस नेहरू जी से एकाकार नही हो पाते,हम उनसे मिल नही पाते.कितना अच्छा होता यदि हम उनसे मिल पाते."

मास्टर जी को मानो झटका लग गया. मास्टर जी गहरी सोंच में पड गये.

तभी मोहन कहता है-

मास्टर जी क्या हम नेहरू चाचा से मिल सकते हैं?

तब मास्टर जी कहते हैं-

हाँ....हाँ..!!!

क्यो नही!!

मोहन खुश होकर उछल जाता है.

और कहता है-

क्या सच कह रहे हो मास्टर जी!!

हाँ सच कह रहा हूँ

मास्टर जी ने कहा.

और फिर मास्टर जी अपने स्टॉफ में गए और वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बाल- दिवस के दिन अपने सहयोगी मास्टर जी को गुब्बारे वाला,फल वाला बनने के लिए कहा.और स्वयं चाचा नेहरू बनने की बात स्वीकारी. सभी ने हामी भर दी.

उसके बाद वह बाल दिवस का शुभ दिन भी आया,सभाहाल खचाखच भरा हुआ है.

मोहन सहित सभी बच्चों को चाचा नेहरू के आगमन की प्रतीक्षा थी उनसे मिलना चाहते हैं,और मिल के "बाल-दिवस" में अपना- अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते हैं.

तभी ठीक इसी समय मंच के एक कोने से किसी की आवाज आती है-

गुब्बारे ले लो गुब्बारे!!!

इसी प्रकार-

फल ले लो फल !!सेव्,केला,अंगूर,!!

और फिर ऐसे ही समय मे मंच के किसी कोने से चाचा नेहरू का आगमन होता है जो अचकन टोपी लाल गुलाब धारण किये हुए हैं, जो बिल्कुल हूबहू नेहरू जी लग रहें है.

सभी बच्चे चाचा जी!!चाचा जी!!जोर जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया.

तभी वह नेहरू जी कहते हैं:-

लो बच्चों मैं चाचा नेहरू आ गया हूँ!!

मोहन मेरे पास आ जाओ,तुम मुझसे मिलना चाहते थे न!!"

मोहन और सभी बच्चे अचरज में पड़ जाते हैं, और चाचा नेहरू से बिना देरी किये मिलने दौड़ पड़ते हैं.नेहरू जी सभी बच्चों को हिरदय से लगा लेते हैं, और पास से गुजर रहे गुब्बारे वाले से गुब्बारा,और फल वाले से फल बांटकर बच्चों को प्रसन्न कर देते हैं.

तभी जिज्ञासावश मोहन पूछता है क्या आप सचमुच् में चाचा नेहरू हो??

तब मास्टर जी ने सारा माजरा कह सुनाया

भले ही उनका शरीर नही है लेकिन उनके आदर्श उनके सिद्धान्त,उनका बच्चों के प्रति प्यार आज भी हमारे दिलों दिमाग पर जिंदा है.मैं नेहरू के रूप तुमारे मास्टर जी हुँ.

तुम उस दिन बहुत उदास थे तुम्हारी उदासी को दूर करने और "बाल-दिवस" को यादगार

बनाने के लिए हमने नेहरू जी का वेश धारण किया, सहयोगी मास्टर साथी,फल वाला और गुब्बारे वाला बना,और हम सभी मंच में धीरे-धीरे आगमन किए, जिसको देखकर तुम सभी बच्चे परसन्न हो गए.

इतना सुनकर मोहन और अन्य सभी बच्चे

अपने प्रधानपाठक को चाचा नेहरू और अन्य मास्टर जी को फल गुब्बारे वाला है जानकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं,और फुले नही समाते है.आज उनकी उदासी और भ्रम दूर हो गई.आज उन लोगों ने नेहरू चाचा का साक्षात दर्शन जो कर लिया था.

*****

दान

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

दान धर्म का मूल चरण है,
तो दया धर्म का दूसरा चरण.
सत्य धर्म का तीसरा चरण है,
तो अहिंसा धर्म का चौथा चरण है.

भावना में कभी बहना नहीं,
क्योंकि जो सत्य को मानता है,
वही सबसे ज्यादा ठगा जाता है.
दया, दान, सत्य और अहिंसा
ये कहाँ कहाँ पर जरुरी है.
इनकी सार्थकता पर मंथन करना.

सही गलत के बीच में,
आँख-कान की भाँति का अंतर है.
हमारा मन जो कहता है
उस पर भी सहज में भूल के भी,
विश्वास न करना.
ये बड़ा कपटी, छली और बईमान हैं.
झूठ को सत्य की तरह दिखाकर
सबका धर्म भ्रष्ट करता है.

*****

बाल दिवस आया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरिनारायण

बाल दिवस का ये शुभ दिन आया है
बच्चों में खुशियां-उल्लास समाया है.
चाचा नेहरू का जन्म दिवस मनाएंगे
नेहरू को हम चाचा कहके पुकारेंगे.
नेहरू जी को लगते बच्चे बड़े प्यारे हैं
बच्चे को लगते इनको न्यारे-न्यारे हैं.
नेहरू चाचा बच्चों के लगते दुलारे हैं
तभी ये चाचा-चाचा कहके पुकारे हैं.
ये बच्चों को बांटते थे रंगीले-गुब्बारे हैं
और साथ मे इनके ये समय गुजारे हैं.
चाचा नेहरू को लगते गुलाब प्यारे हैं
तभी तो इसे अचकन में ओ उतारें हैं.
नेहरू बने सबसे पहले प्रधानमंत्री हैं
पंचशील दिया तुमने इसी में शांति है.
शांति सद्भावना आपको बड़े प्यारे थे
भारत माता के तुम आंखों के तारे थे.

*****

जब दीप जले आना

रचनाकार- संतोष कुमार कर्ष, कोरबा

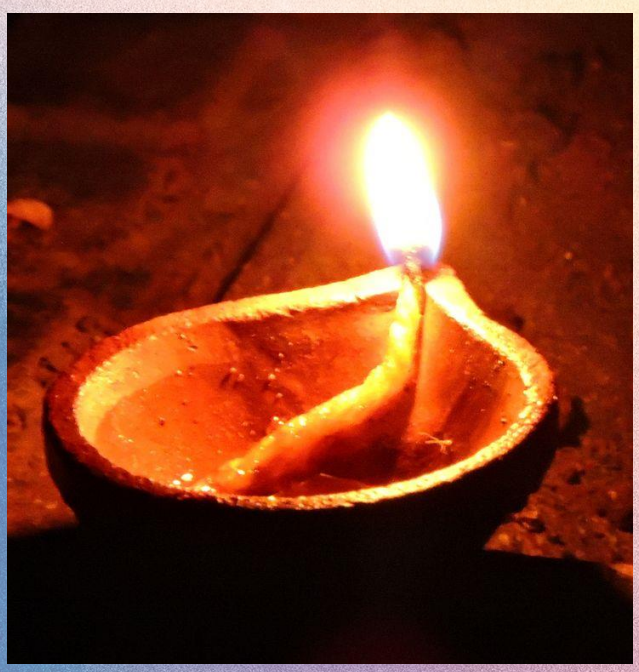

मेरे घर जब भी आना दीप जले आना,
हाथों में दीया लेकर खुशी से तुम आना,
जरा सा तुम पटाखे लेकर फुलझड़ियां भी लाना,
राहों में कहीं भटक ना जाना, अपने मंजिल को पाना,
राम को भी याद कर लेना, सीता को भी लाना,
मां-बाप की सेवा करना, उन्हें ना भुलाना,
मन से बुराई दूर करके सच्चे दोस्त बनाना,
जब भी दीप जलाओ तुम, मन से बैर मिटाना,
जब भी मेरे घर आओगे, दीप जले आना.

*****

भाई दूज : भाई-बहन का स्नेह

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

आना मेरे घर में तुम भैया, आपको निमंत्रण देती हूँ.
आकर प्रीति भोज खाना, पकवान बनाकर रखी हूँ.

जल्दी आना, देर मत करना, मैं राह तुम्हारे देखूँगी.
मेरे भैया आ रहे हैं, अपनी सखी-सहेलियों से कहूँगी.

शुभ आसन पर बिठाकर, रोली से तिलक लगाऊँगी.
बाँधकर हाथ में मौली, लंबी उम्र की कामना करूँगी.

मंगलमय होगा, सुख आएगा, सारी इच्छाएँ पूरी होगी.
यमराज का भय नहीं रहेगा, जीवन में समृद्धि मिलेगी.

यह भाई-बहन का त्यौहार, स्नेह का बंधन है अटूट.
आतिथ्य स्वीकार करो, भक्ति और आदर है अद्भुत.

उपवास रहूँगी सुबह से, तोडूँगी आप आओगे तभी.
रक्षा करने दौड़े चले आना, दुःख में पुकारूँगी कभी.

*****

बहाने

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

क्यो बना रहे हो बहाने.
ये किसे बताओगे.
तुम्हे पता है न, क्या गलत है.
बाद मे तुम ही पछताओगे.

न मिला समय, तबियत खराब थी.
ये सारे बहाने कब तक बनाओगे.
बहाने बनाकर दुनिया को अँधेरे मे रख लिया.
खुद से सच कैसे छुपाओगे.

इन बहानो की वजह से,
जो गवा दिया है तुमने .
उसकी कल्पणा भी न कर पाओगे.
बहानो की वजह से हार जाओगे.

तुम निकलो तो इस बहाने के जेल से.
तुम सब कुछ कर पाओगे.
बहाने बनाना छोडो तो सही.
तुम सबसे आगे जाओगे.

*****

बचपन की किताब

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहर बिलासपुर

हर पन्ने की अपनी कहानी
हर लम्हे की हर वो शैतानी
उन यादों की तो बात ही अलग है
पर चुनिंदा है बचपन की हर एक निशानी
ना किसी की कोई चिंता थी और ना थी कोई परेशानी
हंसते खेलते वो दिन और वो भोलापन और वो नादानी
बस थी तो वो सिर्फ मस्ती और खेलने की बेताबी
रोने पर पिता का गाना और मां की कहानी
इनके आगे तो सच कुछ न थी स्वर्ग सुख की सुकुमार कहानी
थककर आकर खाना खाना और उसी समय आती निंदिया रानी
उस असमंजस का क्या ही कहना,सच में वो यादें थी बड़ी सुहानी
छोटी छोटी बातों पर खिलखिला कर हंसना और डांट खाने पर की रवानी
चांद पर जाने की ख्वाहिश और तारे गिनने की वो नादानी
किताब बनकर दिल में रह गई है इन यादों की वो लाख कहानी
सबसे प्यारी ,सबसे सुकून भरी थी वो बचपन की किताब की वो कहानी.

*****

दिवाली

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा, रायपुर

देखो देखो दिवाली आई
खुशियों की बौछार लाई.
दीपों का त्योहार दिवाली
खुशियों का संसार दिवाली.
घर आंगन की करी सफाई
नाचे फिरकी और हवाई
देखो देखो दिवाली आई.
नए-नए मैं कपड़े पहनूँ
खाऊं खूब मिठाई
चलते हुए अनार लाई दिवाली.
दिवाली की रात हैं आई
प्रेम प्यार का भाव बताई
देखो देखो दिवाली आई.
शुभ दिवाली आई "सुषमा" दे रही बधाई.

*****

जिद्दी बच्चे

रचनाकार- युग उज्ज्वल पात्रे, कक्षा तीसरी, रविन्द्र भारती प्राइमरी स्कूल मदनपुर मुंगेली

एक किसान था. उसके दो बेटे थे. बड़े बेटे का नाम सोनू छोटे बेटे का नाम मोनू था. सोनू 14 साल और मोनू 12 साल का था. दोनों बहुत जिद्दी थे. दोनों एक साथ सायकिल से पढ़ने स्कूल जाते थे. एक दिन दोनों भाई ने अपने पापा से बाइक खरीदने की जिद करने लगे. बहुत किसान के समझाने पर भी नहीं माने. फिर किसान मजबूर होकर बाइक खरीद लाया. सोनू और मोनू बहुत खुश हुए और खुशी खुशी बाइक से स्कूल आने जाने लगे. नई बाइक से फरटिदार दौड़ लगाने लगे.

एक दिन दोनों भाई बाइक से स्कूल से घर आ रहे थे कि अचानक एक बुजुर्ग आदमी से जोर से टकरा गए, दोनों भाई गिर गए और बुजुर्ग आदमी वहीं ढेर हो गया. सोनू और मोनू को बहुत चोटें लगी. पुलिस आई और दोनों भाई पकड़े गए. फिर किसान को जेल हो गया क्योंकि बाइक किसान के नाम पर था. दोनों भाई को अपनी गलती का एहसास हो गया.

इस छोटी सी कहानी से सीख मिलती है कि हमें किसी भी चीज के लिए अपने माता-पिता को परेशान नहीं करना चाहिए. माता-पिता को भी ध्यान देना चाहिए नाबालिक बच्चों को चलाने के लिए बाइक नहीं देना चाहिए.

*****

हमर पाठशाला

रचनाकार- संतोष कुमार साहू संकुल प्राचार्य संकुल केंद्र सोमनापुर नया,कबीरधाम

सोमनापुर की धरती मे
ज्ञान का दीपक जलते देखा.
आसपास के बच्चो में,
प्रतिस्पर्धा से नित आगे बढ़ते देखा
गांव के इन सब बच्चों को
पाठशाला में आकर पढ़ते देखा.
शिक्षा का जब अवसर पाया
जन जीवन को बदलते देखा.
पढ़ाई पूर्ण कर जब यहां से निकले
उनके सपनों को मचलते देखा.
खेल के मैदानों में हमने
प्रतिभाओं को उभरते देखा.
गांव के गरीब बच्चों में,
नए स्वपनो को खिलते देखा.
बुझे हुए अरमानों को

हमने फिर से जलते देखा.
शिक्षको की मेहनत से आज,
ज्ञान की धारा बहते देखा.
सोमनापुर के पाठशाला में,
कल के भविष्य को पलते देखा.

*****

आशा का दीप

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

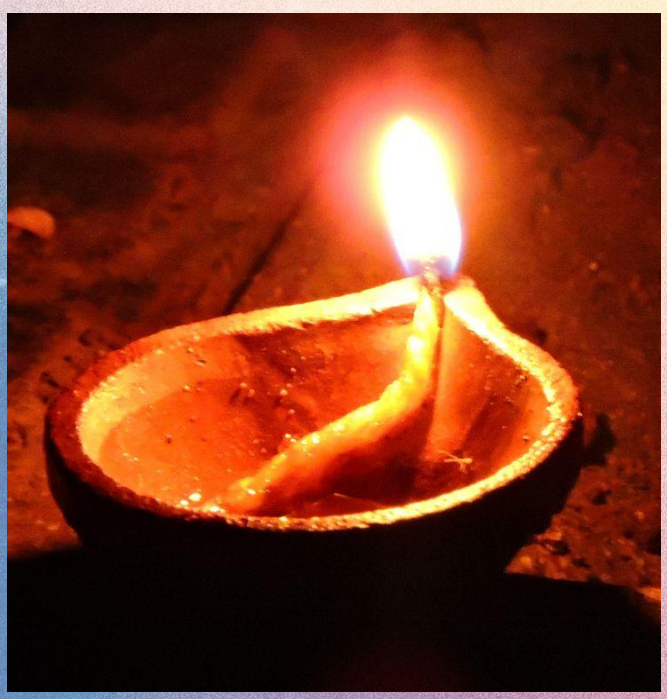

तुम अपने घर के आँगन में,
तुलसी का चौरा लिपा पुता रखना.
तुलसी के बिरवे की छैया में,
एक दीप श्रध्दा विश्वास का जलाये रखना.

अमावस की रात को,
अपने घर के दरवाजे पर
दीपमालिकायें जलाये रखना.

धन की लक्ष्मी दबे पाँव आयेंगी,
अज्ञान का अंधकार मिटायेंगी.
बस तुम एक दीप आशा का जलाये रखना.
अपने घर का दरवाजा खुला रखना.

इस वर्ष की दिवाली सबसे निराली हो,
हर संकट की घड़ी को मिटाने वाली हो.
आये खुशहाली हर घर आँगन द्वार.

बस तुम श्रध्दा विश्वास का दीप जलाये रखना.
अपने घर का दरवाजा खुला रखना..

*****

सुनहरे दिन

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

नीता -"कब से काल कर रही हूँ,तुम हो कि फोन नहीं उठा रही हो.कौन सी दुनिया में रहती हो आजकल."

"अमृता वो आशी की ऑनलाइन क्लास चल रही है ना" नीता बोली.

अमृता -" हां यार ,हम लोगो का जमाना ही अच्छा था. आजकल छोटे -छोटे बच्चों के ऊपर पढ़ाई का बोझ है."

नीता -"मैं आशी के पास बैठती हूँ, तब अच्छे से पढ़ाई करता है,

नहीं तो विडियो गेम में खेलने लगता हैं ."नीता ने शिकायती लहजे में कहा.

"वाह मैडम जी! आप अपना समय भूल गईं.कैसे तुम मिश्रा सर की क्लास अटेंड नहीं करने देती थी. मिश्रा सर भी 1 पाठ को 15 दिन खींच देते थे ."

नीता -"सच अमृता !वो कितने मस्ती भरे दिन थे."

तुझे वो माली काका की शिकायत याद है कि नहीं."नीता एक सांस में बोली.

हाँ नीता उस दिन आम चुराने के कारण घर में मार पड़ी थी.

अमृता -"दोपहर के समय तुम हमारे यहाँ आकर कैरम खेलती थीं."

-"मुझे तो वो किराये की छोटी साइकिल भी याद आती है.

तुम उस फेरी वाले के ठेले से टकराकर गिर गयी थीं.तुम्हारे घुटने में चोट लग गयी थी किन्तु अब वो मस्ती भरे दिन नहीं हैं." नीता एक सांस में बोल गयी.

अमृता – "आज हमारे पास गाड़ी बंगला है, शोहरत सब कुछ है किंतु वो मस्ती भरे दिन नहीं हैं. समय रेत की मानिंद मुट्ठियों से फिसलता जा रहा है."

नीता – "हम छोटे थे तब बड़े होने की ख्वाहिश रखते थे .हम सभी के अपने लक्ष्य थे. आज हम उन्नति के शिखर पर खड़े हैं तो लग रहा है कि वही बचपन अच्छा था. माँ की झिड़कियाँ अच्छी थीं.पिता की रौबदार आवाज से कितना डर लगता था."

अमृता –"हाँ सखि,उन सुनहरे दिनों को हम केवल याद कर सकते हैं.वो यादें हमारे लिये अनमोल हैं."

*****

दीपावली मुबारक

रचनाकार- शाहनाज खान, दुर्ग

गिला न कर गले से मिल
ये खुश मिजाज पर्व है,
वे खुश गवार पर्व है.
गिला नहीं गले से मिल,
कि शुभ दिवाली पर्व है.
बरस पड़ी है रहमतें,
बिखर गई है नेयमते.
करम का तेरा शुक्रियां,
ये पांच दिवसीय पर्व है.
खिली हुई है मौसमें,
मचल उठा है आसमा.
दीप जलाओ शुभ का,
कि शुभ दिवाली पर्व है.
फटाखों की गूंज है,
चहल -पहल है ईर्द - गिर्द.
बहार है बहार है,
ये पुर बहार पर्व है.

कभी लगे हैं जिंदगी,
रंगोलियों के रंग सा.
कभी लगे हैं माँ लक्ष्मीजी,
के आशिषो का पर्व है.
श्रीराम संग सीता माँ,
के आगमन का पर्व है.
ये सारे रस्मो राह के,
बयान थे जो कर दिए.
दरअसल तो ये गोवर्धन,
और भाई दूज का पर्व है.
लगे थे सिने से कई,
भाईचारा से गले मिले.
वही खुमार आज तक,
बरकरार पर्व है.
गिला न कर गले से मिल,
ये शुभ दिवाली पर्व है..

*****

दीवाली आई

रचनाकार- दिव्या ठेठवार, कक्षा आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला खेदामारा विकासखण्ड व जिला दुर्ग

आई दीवाली आई दीवाली.
खुशियों की बाहार लाई दीवाली,
खुशियों को सब में बांटे इस दीवाली,
जगमग जगमग रोशनी से सजा संसार.
आई दीवाली आई दीवाली.
खुशियों की बाहार लाई दीवाली.
मन के अंधकार को दूर भागये,
मिलजुलकर हम मनाये दीवाली.

*****

बडे हो गए

रचनाकार- उषा कोरी, बिलासपुर

फूल से बच्चे आज बड़े हो गए,
कंधा मिलाकर संग खड़े हो गए.

उंगली पकड़ कर चलने वाले,
मेरे साथी और मेरे सखी हो गए.

कल आज और कल में बदल गए,
सोच की रेखा लंबी हो गई.

मन विचलित हुआ जब किसी बात से,
बेटी ऐसे समझती जैसे मुझसे बड़ी हो गई.

मेरे जज्बातों को समझती और सुलझाती हुई,
कल की बात पुरानी आज की नई हो गई.

रात बीती और सुबह हो गई.
सोच की रेखा लंबी हो गई.

फूल से बच्चे आज बड़े हो गए
बच्चे दोस्त,सलाहकार हो गए.

मैं अब क्या सम्हल कर चलू
पल भर में एक और साथी मेरा बन गया.

जब बच्चों ने मुझे सम्हाल लिया,
दायां और बायां हाथ बन गया.

मेरी जिंदगी को खूबसूरत पल दे गए,
फूल से बच्चे आज बड़े हो गए.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 गु	2	3		4			5 बो		6
7				8 झ	9				
		10	11 ब						
12 न					13			14 ब	
		15 क		16					
						17 ब			
18 गु									
			19 भ		20			21	22 ल
23 मे									
					24 र				

बाएँ से दाएँ

1. पके दाल का प्रकार
5. बकरा 7. नाला
8. पशुओं के चौकने/डरने का आदत 10. जबदस्ती
12. नया 13. कभी
14. मजदूरी 15. कान के निचे 17. वन क्षेत्र का गांव
18. मंजन करने वाला नशा
19. कट्टा, बन्दुक
21. हिल 23. इतराय
24. भिन्डी

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 प	नि	हा	री	2 न		3 भ	4 र	भ	5 स
न				6 ट	क	र	हा		गा
7 लु	ल	8 लु	9 र	हा		भ		10 खो	
क		11 क	हूँ			12 स	र	ल	13 ग
वा		उ		14 ब	ई	हा			रु
	15 अ	ल	16 क	र			17 भो	थ	वा
18 प	र्रा		र		19 अ	20 गो	र		
ट		21 गि	ध	र	ई	ल		22 चो	23 प
24 कु	25 रो		न		26 ल	ई	27 को	र	ही
	28 घा	म		29 जूं	हा		ठा		र

ऊपर से नीचे

1. ढुल मूल जवाब देने वाला 2. गृह 5. परम्परा
4. रिसाव 5. बहता हुआ
6. एक फुल का नाम 9. बड़ा टिड्डा 11. गुणगान, व्याख्या 13, घास, पैरा काटने का हथियार
14. वनवासी 15. तिरछी निगाह 16. फीका
17. तड़का, फ्राई 18. लपेट
19. बहरा 20 तम्बाकू
22. करीब आओ